मोहनदास कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन

(हैदरा ाद विश्वविद्यालय की एम.फिल.(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्र ंध)

2010

प्रस्तुतकर्त्ता

आदिनारायण बदावत

एम.ए., बी-एड

विभागाध्यक्ष

प्रो.रवि रं ान

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
हैदरा ाद विश्वविद्यालय,
हैदरा ाद - 500 046

निर्देशक

डॉ.आलोक पाण्डेय

रीडर, हिंदी विभाग,
हैदरा ाद विश्वविद्यालय,
हैदरा ाद - 500 046

मानविकी संकाय
हैदराबाद विश्वविद्यालय
हैदराबाद-500 046

DECLARATION

I hereby declares that the work embodied in this dissertation entitled **"MOHANDAS KATHA AUR FILM KA TULNATMAK ADHYAYAN"** has been carried out by me under the supervision of **Dr.ALOK PANDEY**, Reader, Department of Hindi, School of Humanities, University of Hyderabad, Hyderabad is original and that the dissertation or any part of it has not been submitted for a degree in any other University or Institute.

Hyderabad
Date : . .2010

ADINARAYANA BADAVAT
09HHHL19
University of Hyderabad

DEPARTMENT OF HINDI
School of Humanities,
University of Hyderabad,
Hyderabad – 500 046.

Date: .0 .2010

This is to certify that I, ADINARAYANA BADAVAT have carried out the research embodied in the present dissertation entitled "***MOHANDAS KATHA AUR FILM KA TULNATMAK ADHYAYAN***", for the full period prescribed under M.Phil. ordinances of the University of Hyderabad.

I declare to the best of my knowledge that no part of this dissertation was earlier submitted for the award of research degree of any University.

Signature of the Supervisor

(Signature of the Candidate)
Name : ADINARAYANA BADAVAT
Enrolment No.:09HHHL19

Head, Department of Hindi

Dean, School of Humanities

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ सं.
प्रस्तावना	*I-II*
अध्याय- 1	*1-9*
उदय प्रकाश और म हर कामरान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
1.1 उदय प्रकाश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
1.2 म हर कामरान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
अध्याय- 2	*10-40*
मोहनदास : कथा	
2.1 मोहनदास : कथा	
2.2 मोहनदास : कथा विमर्श	
अध्याय- 3	*41-60*
मोहनदास : फिल्म	
3.1 मोहनदास : फिल्म	
3.2 मोहनदास : फिल्म-विमर्श	
अध्याय- 4	*61-106*
मोहनदास कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन	
4.1 पटकथा तुलनात्मक विधि	
4.2 कथा फिल्मांकन विधि	
उपसंहार	*107-111*
संदर्भ ग्रंथ सू ी	*112-113*

प्रस्तावना

प्रस्तावना

फिल्मों और कहानियों का अपना एक समा ाशास्त्रीय महत्व है, क्योंकि दोनों ही समा ा सापेक्ष होते हैं। ये इस अर्थ में अधिक महत्वपूर्ण है कि इन्होंने सदैव से मानव समुदाय का मनोरं ान, ज्ञानवर्धन और मार्गदर्शन किया है। मानव ागत के विकास में इनका योगदान निर्विवाद है। सिनेमा का निर्माण किसी कहानी को लेकर होता है। कहानी और सिनेमा एक दूसरे पर आधारित और अंतर्संबंधित हैं। साहित्य की कहानी को ाब हम प ़ते हैं तब उस कहानी की स्वतंत्र रूप से कल्पना कर सकते हैं और सिनेमा की कहानी को पर्दे पर दिखाने से उस पर कल्पना करने का अवसर ही नहीं मिलता। साहित्यिक कहानी का प्रभाव लोगों पर कम पड़ता है लेकिन फिल्मों की कहानी पर लोग अधिक प्रभावित होते हैं। इस प्रकार साहित्यिक कहानी में ाो स्वतंत्रता होती है, वह फिल्मों की कहानी में नहीं दिखता। सिनेमा में आकर सारी विधाएँ एकत्रित हो ााती हैं।

सिनेमा के मुख्य रूप से मनोरं ान का माध्यम होने के कारण फिल्म में गीत व संगीत भी है, ाो कि मूल कथा में नहीं है। फिर भी कहानी का सार तत्व स्पष्ट रूप से फिल्म में समाया हुआ है। समानताओं और असमानताओं को तलाशने तथा दो कला माध्यमों में आते फर्क को सम ाने, साहित्य के सिनेमाई रूपांतरण की संभावनाओं को ााँ ाने-परखने हेतु मैंने इस कहानी और उस पर बनी फिल्म को तुलनात्मक दृष्टि से मूल्यांकन के लिए ाुना।

इस पूरे लघु शोध-प्रबंध को ाार अध्यायों में बाँटा गया है और अंत में उपसंहार भी दिया गया है।

प्रथम अध्याय के अंतर्गत "उदय प्रकाश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व" के अंतर्गत लेखक के संक्षिप्त ाीवन परि ाय को देते हुए उनकी लेखकीय प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है और "म ाहर कामरान के व्यक्तित्व और कृतित्व" के अंतर्गत फिल्म निर्देशक के ाीवन और र ानाकर्म का परि ाय है।

द्वितीय अध्याय "मोहनदास कहानी के बारे में" कहते हुए कहानी में पात्रों का परि ाय और कहानी पर समीक्षकों का वि ार प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय "फिल्म मोहनदास के संदर्भ में" विवरण देते हुए कलाकारों का परि ाय, गीत-संगीत और समीक्षकों के वि ार को प्राप्त कर इस फिल्म के विषय में गहन मीमांसा प्रस्तुत किया गया है।

ातुर्थ अध्याय "कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन" के अंतर्गत दोनों विधाओं की सीमा व प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए दोनों की तुलना की गई है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का अंतिम अध्याय उपसंहार है। इसमें शोध कार्य के प्राप्त निष्कर्षों का समांकलन किया गया है।

शोध प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सू ाी प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत शोध कार्य को करते हुए मैं अपने शोध निर्देशक डॉ.आलोक पाण्डेय, रीडर, हिंदी विभाग का विशेष आभारी हूँ, ि ान्होंने समय-समय पर मु ो सही मार्गदर्शन व प्रेरणा दी।

मेरी माता श्रीमती बादावत गोम्ली तथा पिता श्री बादावत मंग्या को मेरा सादर प्रणाम ि ान्होंने मु ो ान्म देकर अध्ययन करने के योग्य बनाया। साथ-साथ मैं अपने मित्र राठोड पुंडलिक का आभार व्यक्त करता हूँ ि ान्होंने समय-समय पर मु ो सहायक सामग्री प्रदान करायी। मैं श्रीमती सरो ािनी (सेवा निवृत्ति ाूनियर प्रवक्ता) मैडम का आभार व्यक्त करता हूँ ि ान्होंने मु ो बाल्यकाल से अध्ययन करने में सहायता की है।

अंत में मैं सभी अनु ा एवं अग्र ाों का आभारी हूँ ि ान्होंने मु ो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहायता दी है।

पुनश ा सभी का साभार धन्यवाद।

स्थान : हैदराबाद **आदिनारायण बदावत**

दिनांक : .0 .2010

अध्याय-1

उदय प्रकाश और म ाहर कामरान
का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय- 1

उदय प्रकाश तथा म ाहर कामरान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 उदय प्रकाश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.2 म ाहर कामरान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय- 1

उदय प्रकाश तथा म ाहर कामरान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 उदय प्रकाश का व्यक्तित्व

उदय प्रकाश का ान्म 1 ानवरी 1952 ई. में मध्यप्रदेश के ि ाला शहडोल (अब अनूपपुर) के एक छोटे-से गाँव सीतापुर (अब छत्तीसग ़ अं ाल) में हुआ था। इनकी 12 साल की उम्र (1964) में ही माँ का कैंसर से देहांत हो गया और 1969 में इनके पिता की मृत्यु भी कैंसर से हो गयी। विज्ञान में स्नातक और हिंदी साहित्य में आ ार्य नंददुलारे वा ापेयी 'स्वर्ण पदक' के साथ सागर विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर किया। इन्होंने ावाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में शोध किया। संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन में विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी के पद पर काम किया। टाइम्स ऑफ इंडिया के प्रतिष्ठित साप्ताहिक दिनमान के संपादन विभाग में काम किया। बाद में 'संडे मेल' में सहायक संपादन का कार्य किया।

उदय प्रकाश एक ाि ति कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार हैं। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, इंडिपेंडेंट टेलीवि ान और टाइम्स रिस ि फाउंडेशन में इन्होंने पत्रकारिता का अध्ययन किया। साथ ही अंग्रेज़ी पत्रिका 'एमिनेंस' का संपादन आदि अनेक प्रकार के कार्य भी किये। आ ाकल स्वतंत्र लेखन, फिल्म निर्माण, अखबारों तथा फिल्मों के लिए लेखन का कार्य कर रहे हैं। आपकी कुछ कृतियों का अंग्रेज़ी, ार्मन, ापानी आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं। कई भारतीय भाषाओं में इनकी र नाएँ अनूदित हैं। इनकी कई कहानियों का नाट्य रूपांतर और सफल मं ान भी हुआ है। 'उपरांत' और 'मोहनदास' के नाम से इनकी कहानियों पर

फी ार फिल्में भी बनी हैं िसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिल ुका है। उदय प्रकाश स्वयं भी कई टी.वी.धारावाहिकों के निर्देशक-पटकथाकार रहे हैं।

उदय प्रकाश ने सुप्रसिद्ध रा ास्थानी कथाकार वि ायदान देथा की बहु ाित कहानियों पर लघु फिल्में प्रसार भारती हेतु निर्देशित की हैं तथा भारतीय कृषि के इतिहास पर पंद्रह (15) कड़ियों का सीरियल 'कृषि-कथा' राष्ट्रीय ैनल के लिए भी निर्देशित किया है।

1.2 उदय प्रकाश का कृतित्व

<u>कविता संग्रह</u>

1) सुनो कारीगर (1980)

2) अबूतर-कबूतर (1984)

3) रात में हारमोनियम

4) एक भाषा हुआ करती है

5) कवि ने कहा

<u>कथा साहित्य</u>

1) दरियायी घोड़ा

2) दत्तात्रेय के दुःख

3) अरेबा-परेबा

4) मैंगोसिल (2006)

5) मोहनदास (2005)

6) तिरिछ

7) पीली छतरी वाली लड़की

8) और अंत में प्रार्थना

9) वारेन हेस्टिंग का साँड

10) पॉल गोमरा का स्कूटर

निबंध और आलो ाना संग्रह

1) ईश्वर की आँख

2) नयी सदी का पं ातंत्र

3) पिछले दिनों में

4) क्योंकि ीवन एक वाक्य है

अनुवाद

1) इंदिरा गाँधी की आखिरी लड़ाई

2) कला अनुभव

3) ाय से बना सैरा

4) लाल घास पर नीले घोड़े

5) रोम्यां रोला का भारत

6) इतानो काल्विनो

7) नेरुदा

8) ेहदा

9) अमि ाई

10) फनादो पसोवा

11) कवाफी

12) लोकाँ

13) लाद्युश रो ोवि ा

14) ोग ोत्येस्की

15) अलेक्संड्र ब्लाक

फिल्म-टीवी

1) ताना-बाना

2) बि ी का ख ाना

3) कृषि-कथा

4) उपरांत

5) ‘डबल लाइफ’ तथा ‘हाई वे 39’

6) फी ार फिल्मों का पटकथा एवं संवाद

7) मोहनदास

<u>उदय प्रकाश की र ानाओं का अन्य भाषाओं में अनुवाद</u>

- शट्स शट्स लाँग शाट्स

  अनुवादकः राबर्ट ए. ट्यूक्स्टेड

- रे ा रिवेलरी रोमांस (अंग्रेज़ी)

  अनुवादकः राबर्ट ए.ह्यूक्स्टेड

- तिरिछ अणि इतर कथा (मराठी)

  अनुवादकः ायप्रकाश सावंत (महाराष्ट्र फाउंडेशन पुरस्कार से सम्मानित)

- दि गर्ल विद गोल्डन पैरासोल (अंग्रेज़ी)

  अनुवादकः ोसन ग्रनबॉम (विख्यात अंतर्राष्ट्रीय पेन सम्मान)

- पीली छतरी वाली लड़की (उर्दू)

  अनुवादकः सैयद हैदर ाफरी तथा अ ामल कमाल और ीनत (आ ा तथा पुरस्कार रूप में पाकिस्तान में प्रकाशित)

- दास मैद ौन मिट देम गेलबन स्क्रीम

  अनुवादकः ऐनेस फारमल, हे ा वेरनर वेश्लर और रैनहोल्ड सा ौन

- उदं एम एन्दे ऐन गेबेट

  अनुवादकः अंड्रे पें ा

- देर गोल्डन गुरतेल

  अनुवादक : लोतर लुट ो

उदय प्रकाश ने सभी प्रमुख भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में कविताएँ और कहानियाँ आनुदित भी हैं। ार्मन भाषा में सुविख्यात भारतविद लोठार लूत्शे द्वारा संपादित और अनूदित स्वतंत्र संग्रह शीघ्र प्रकाश्य है।

कृतियों का मं ान

1) तिरिछ-प्रथम मं ान-रा-न-वि प्रसन्ना के निर्देशन में।

2) लाल घास पर नीले घोड़े (अनुवाद)-प्रथम मं ान-प्रसन्ना के निर्देशन में

3) वारेन हेस्टिंग्स का साँड पर नाटक-प्रथम मं ान-अरविंद गौड के निर्देशन में। अस्मिता नाट्य संस्था द्वारा यह नाटक रा-न-वि. के भारत रंग महोत्सव व इंडिया हँबिटाट सेंटर में भी आयोि ात हुआ है। इस नाटक के 2009 से अब तक 80 शो प्रदर्शित हुए हैं।

4) और अंत में प्रार्थना-प्रथम मं ान-अरुण पाण्डेय के निर्देशन में।

अन्य भाषाओं में 'मोहनदास' कहानी

मोहनदास कहानी का अब तक अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। ि ासमें-

1) अंग्रेज़ी में 'प्रतीक कं ाीलाल' ने इसका अनुवाद किया है। निर्मल वर्मा की 'अंतिम अरण्य' के अनुवाद पर इसको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। इन्होंने विख्यात साहित्य पत्रिका 'लिटिल मैगि ान' में संपादक का कार्य किया है।

2) उड़िया में प्रमुख कवि और र ायिता 'मनु दास' ने इसका अनुवाद किया है।

3) उर्दू में विख्यात अनुवादक 'हैदय ााफ्री सैयद' ने इसका अनुवाद किया है। अनुवाद के क्षेत्र में इनको साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला है।

4) कन्नड़ में प्रमुख र ायिता और अनुवादक 'आर.पि.हेग्डे' ने इसका अनुवाद किया।

5) पं ााबी में 'रबीन्दर सिंह बात' ने इसका अनुवाद किया है। इन्होंने भीष्म साहनी के तमस उपन्यास को पं ााबी में अनुवाद किया है।

6) मराठी में प्रमुख अनुवादक 'वनिता सावंत' ने इसका अनुवाद किया है।

7) नेपाली में 'येग्येश' ने इसका अनुवाद किया है।

8) तेलुगु में 'वेणु गोपाल' ने इसका अनुवाद किया है।

सम्मान

1) भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार (1980) (तिब्बत कविता के लिए)

2) ओम प्रकाश साहित्य सम्मान (1983)

3) श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार (1992)

4) मुक्तिबोध सम्मान (1996)

5) साहित्यकार सम्मान

6) द्वि ादेव सम्मान

7) वनमाली सम्मान

8) पहल सम्मान

9) SAARC Writers Award

10) PEN Grant for the Translation of the girl with the golden parasol-Translated by Jascon Grunebaum

11) कृष्ण बदलेव वैद सम्मान

12) महाराष्ट्र फाउंडेशन पुरस्कार (तिरिछ मणि इतर कथा के लिए)

13) रूस का प्रतिष्ठित प्रश्किन पुरस्कार (2007)

14) ‘कथाक्रम’ सम्मान (2005)

15) नौवां-आनंद सागर स्मृति पुरस्कार

विशेष

उदय प्रकाश समकालीन कथा संसार के एक शीर्षस्थ कहानीकार हैं। रूसी, अंग्रेज़ी, ापानी, ड ा और र्मन भाषाओं में इनकी कविताओं का अनुवाद हो ुका है और लगभग सभी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कविता संकलनों में इनकी कविताएँ संग्रहीत हैं। 2004 में ‘हालैंड’ के प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय कविता उत्सव ‘राटेरडम’ में वे भारतीय कवि के रूप में हिस्सा ले ुके हैं।

1.2 म ाहर कामरान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

म ाहर कामरान का ान्म 3 सितंबर 1963 ई. में लखनऊ में हुआ। इनके पिता कमरुद्दीन भारतीय आर्मी से रिटायर्ड साइन्टिस्ट हैं। इनके माता का नाम अलिरुन्निसा है।

म ाहर कामरान IIT के विद्यार्थी हैं। विज्ञान और टेक्नॉल ाी में इनकी बहुत रुा ा है। विशेषकर वे भौतिकी के एक बेहतरीन विद्यार्थी रह ाुके हैं। इतना ही नहीं किसी दिन आधार भूत भौतिकी में शोध करना इनका स्वप्न और लक्ष्य था। यह संयोग ही है कि उनके IIT कैम्पस के बगल में 'अद्यार फिल्म इंस्टीट्यूट' नामक फिल्म उद्योग की शिक्षा देनेवाला संस्थान था। इसी संस्थान में एक संयोग के तहत ही म ाहर कामरान फिल्म देखने गये और इसके बाद वहाँ पहले ौसा कामरान न रहा। और नती ातन कामरान अपनी पहली निर्देशित फिल्म के साथ दर्शक के सामने प्रस्तुत है।

फिल्म 'सत्या' के छायाकार के रूप में उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में प्रवेश किया। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और लगातार सात फिल्मों के छायाकार के रूप में काम किया।

सात फिल्मों के लिए छायाकार के रूप में काम करने के पश ाात् म ाहर कामरान ने फैसला किया कि अब वह निर्देशक के रूप में अपनी स्वतंत्र फिल्म बनायेंगे। हमारे सामने प्रस्तुत मोहनदास फिल्म इसी फैसले का मूर्त रूप है।

यह फिल्म भी समांतर सिनेमा की अन्य फिल्मों की तरह कहानी से शुरू हुई। उदय प्रकाश और म ाहर कामरान फिल्म बनाने के लिए कई स्क्रिप्टों पर काम कर रहे थे। अ ाानक एक दिन उदय प्रकाश ने म ाहर कामरान को एक अ ाीब कहानी सुनाई। ि ासमें एक व्यक्ति का नाम ही ाोरी हो ााता है। क्या होगा ाब कोई व्यक्ति सुबह ाागे और उसे पता ाले कि कोई दूसरा ही व्यक्ति वह होने की घोषणा कर रहा है ाो यह है। इसके पास अपने आप को होने का सिद्ध करने के लिए कोई भी काग ाात, दस्तावे ा कुछ भी नहीं है। कैसी त्रासदीय स्थिति है कि अपने आपको सिद्ध करने के लिए भी प्रमाण की अवश्यकता है। 'मार्क्स' ने कभी कहा था कि 'पूं ाीवादी

समय में िास अनुपात में वस्तुओं का मूल्य ब.ता ाायेगा। उसी अनुपात में व्यक्ति का मूल्य घटता ाायेगा।' लेकिन कहानी का मोहनदास इस व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करता है। पर उसका अंत वही होता है ाो भारत में नक्सलबाड़ी आन्दोलन का हुआ। मोहनदास ने व्यवस्था से विद्रोह किया था। पर अंत में वह समा ा से कट कर एक नि ानि टीले पर रहने लगता है। अपने आप स्वयं निर्वासित हो ााता है। वह हमारे लिए एक प्रश्न छोड़ ााता है कि मोहनदास ौसा प.ा, लिखा काम के ाा बे से लैस, सारे गाँव की उम्मीदों का केन्द्र बना युवक समा ा से आत्म निर्वासित होकर किसका नुकसान कर रहा है? क्या यह लड़ाई के अंत के बाद सबसे बड़ा विद्रोह नहीं ?

यह कहानी म ाहर कामरान को 'शणमुगम मं ाुनाथ', 'सत्येन्द्र दुबे' की बलिदानों की याद दिलाती है। िानके पास अपने बलिदान के अलावा और दूसरी राह नहीं थी।

म ाहर कामरान ने रामगोपाल वर्मा के अनेक फिल्मों की छायाकार के रूप में काम किया। ौसे- सत्या (1998), कौन (1999), तरकीब (2000), कितने दूर कितने पास (2002), ानकार बीट्स (2003), मस्ती (2004), थोड़ा तुम बदलो थोड़ा हम (2004), मोहनदास (2009) आदि। निर्देशक के रूप में मोहनदास इनकी पहली फिल्म और अनेक डाक्यूमेंटरी फिल्म भी हैं। ौसे-लखनउ सिटी, कुरत-उल-एन हैदर, अनि आपा आदि प्रमुख हैं।

* * *

अध्याय-2

मोहनदास : कथा

अध्याय-2

मोहनदास : कथा

2.1 मोहनदास : कथा

2.2 मोहनदास : कथा विमर्श

अध्याय-2

मोहनदास : कथा

2.1 मोहनदास : कथा

‘मोहनदास’ कहानी में समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है। इस कहानी में मोहनदास प्रमुख पात्र है जिसके प्रति अन्याय होता है। वह प्रतिभाशाली छात्र है। इनकी स्थिति दयनीय है तथा वह निम्न जाति का है। निम्न जाति तथा आर्थिक दयनीयता का उठाते हुए उच्च वर्गीय धनी लोग उनकी नौकरी छीन लेते हैं। मोहनदास अपनी नौकरी एवं अपने अधिकार को पाने हेतु अनेक प्रयत्न करता है। आखिर वह न्यायालय की शरण लेता है। लेकिन न्यायालय में भी धनी बिसनाथ उसे परास्त कर देता है और अंत में मोहनदास हार मानकर समाज से टूट जाता है।

मोहनदास कहानी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है। जिसके लेखक उदय प्रकाश हैं। उदय प्रकाश इस कहानी में समाज के यथार्थ को चित्रित करते हुए शोषितों पर होते अन्यायों पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। वे अपनी कहानी में एक ओर भारतीय समाज में शोषित समाज को चित्रित करते हैं तो दूसरी ओर तत्कालीन विकसित बनने हेतु भारत की प्रयत्नशीलता को भी। लेखक अपनी रचना में स्पष्ट रूप से यह बताने की चेष्टा करते हैं कि किस प्रकार एक निम्न वर्ग उच्च वर्ग से शोषित होता है। स्वतंत्र भारत में अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहकर, अपने अधिकारों को माँगने की स्वतंत्रता सभी को समान रूप से है। फिर भी एक निम्नवर्गीय नागरिक अपने अधिकार प्राप्त करने में असफल होता रहता है। उदय प्रकाश इसी यथार्थ को अपनी कहानी में चित्रित करते हैं।

‘मोहनदास’ कहानी में मुख्य रूप से समा ा का वास्तविक रूप सामने आता है। यह समा ा दो वर्गों में विभक्त है-

एक है शोषित वर्ग और दूसरा शोषक वर्ग। देश स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश ाात् अपना एक संविधान बना ाुका है। उस संविधान में समानता, संवेदनशीलता व्यक्ति का अस्तित्व, लेखन स्वतंत्रता आदि कई प्राथमिक अधिकार व्यक्ति को प्रदान किये गये हैं। लेकिन इसी प्राथमिक अधिकार को प्राप्त करने हेतु मोहनदास नामक पात्र कहानी के प्रारंभ से अंत तक संघर्षशील है। विडंबना यह है कि मोहनदास अंतिम पृष्ठ पर अपने प्राथमिक अधिकार प्राप्त करने के लिए निरुत्साह दिखाई देता है। मोहनदास इस कहानी में एक संघर्षशील पात्र है। लेकिन उसे निरुत्साह वह भी अपने प्राथमिक अधिकारों के प्रति वे लोग बनाते हैं ाो इस शासक व्यवस्था में शक्तिशाली हैं। वे अपने स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी का प्राथमिक अधिकार उसकी पह ाान तक छीन सकते हैं।

इस कहानी में दो वर्ग हैं-एक शक्तिहीन और दूसरा शक्तिशाली। शक्तिहीन वर्ग के पीछे स ााई है ि ासका प्रतिनिधित्व मोहनदास करता है। दूसरा वर्ग है शक्तिशाली ि ासके पास धन है, रा ानीतिक ताकत है और उनकी पहुँ ा उन लोगों तक है ाो लोग कानून व्यवस्था में राई को पहाड़, पहाड़ को मैदान, मैदान को सागर बना सकते हैं।

किसी आलो ाक ने कहा है कि-"हिंदुस्तान का कानून अँधा है और सरकार बहरी है।" इस अँधे कानून और बहरी सरकार में कुछ लोगों की निष्ठा अभी बाकी है। ैसे कि कहानी में हर्षवर्धन (वकील) और मुक्बिोध है। ाो अंत तक ाहकर भी मोहनदास के लिए कुछ नहीं कर पाते।

उ ा और निम्न वर्गों का संघर्ष प्रा ाीन है। प्रा ाीन काल के निम्नवर्गीय लोग ाानते थे कि उनका शोषक कौन है? लेकिन आ ा के समय में यह ाानना बहुत मुश्किल है। आ ा के शोषक विश्वनाथ, वि ाय तिवारी ैसे लोग हैं। उनके ाेहरे पर हल्की सी हँसी तथा बनावटी ईमानदारी दिखाई देती है। लेकिन उनके असली रूप

बहुत ही दिल ास्प, घिनौने और भयानक हैं। उनकी कूटनीति को मोहनदास ैसे लोग पह ान नहीं पाते।

'मोहनदास' कहानी में उदयप्रकाश मुख्य रूप से समा । में हो रहे भ्रष्टा ार को केंद्र में रखते हैं। इस भ्रष्टा ार के परिणाम हम स्पष्ट रूप से मोहनदास तथा उनके परिवार में देख सकते हैं। मोहनदास एक प. ा लिखा प्रथम श्रेणी का छात्र है ो परिश्रमी और प्रतिभा संपन्न है। उसे विश्वास है कि शिक्षा द्वारा वह अपने ीवन में वसंतोत्सव ला सकता है। लेकिन उसके ीवन में ब भ्रष्टा ार की आँधी घुस ाती है तब उसे संघर्ष करना पड़ता है। मोहनदास के परिवार की स्थिति कम ोर है। पिता काबादास टी.बी. से पीड़ित हैं, अंधी माँ पुतली बाई, पत्नी कस्तूरी बाई सबका बो । उस पर है। वह ाहता है कि " ब मैं अ छी खासी नौकरी करने लगूँगा तब अपने पिता को स्वस्थ रखूँगा, अपनी माँ की आँखें ठीक कराऊँगा और परिवार को गरीबी से मुक्त कराऊँगा।"[1]

मोहनदास की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है। वह साहित्यिक भाषा ानता है और अंग्रेज़ी भी। प्रथम श्रेणी में स्नातक (बी.ए.) पास होते हुए भी वह रोटी कमाने के लिए ी तोड़ मेहनत करता है। यही कहानी शोषित वर्ग की है। दूसरी ओर बिसनाथ है-ि नके ीवन में न संघर्ष और न ईमानदारी है। वह दसवीं कक्षा अनुत्तीर्ण हैं। उसके हृदय में संवेदना के लिए कोई गह नहीं, इसमें प्रतिभा भी नहीं लेकिन वह घूमते फिरते ऐसे आराम से महीने दस हज़ार तनख्वाह पा रहा है। यह बिसनाथ उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है ो लोग एक के ीवन को पूरी तरह नष्ट भ्रष्ट करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं।

हमारा भारत गाँवों का देश है। गाँव में सभी प्रकार के लोग रहते हैं-शोषित, शोषक, दलित, स्त्री, प्रतिभाशाली, भ्रष्टा ारी, संवेदनहीन तथा संवेदनशील। ि सके पास धन, दौलत और शक्ति है वह गरीबों का हर तरह से शोषण करता है। यहाँ तक की गरीब व्यक्ति की पत्नी को नहीं छोड़ना ाहता। मोहनदास की पत्नी कस्तूरी

[1] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.18

बाई एक सुंदर स्त्री है। वि ाय तिवारी ाहता है कि मोहनदास उनकी भैंसों का देखभाल करे और उनकी पत्नी कस्तूरी बाई उसकी रखैल बन ाय।

इस कहानी में कस्तूरी बाई एक विशिष्ट भूमिका निभाती है। ीवन के सभी उतार ा.ाव सुख-दुख में मोहनदास के साथ रहती है। अपना कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व वह अंत तक निभाती है। ाब मोहनदास शारीरिक रूप से कमज़ोर पड़ ाता है। तब परिवार का पूरा भार अकेली ोती है। मोहनदास के साथ रात में भी काम करती है।

बिछिया ोल में एक वर्ग है ाो मोहनदास के प्रति सहानुभूति रखता है। कुछ लोग मदद भी करना ाहते हैं। लेकिन वह वर्ग भी मोहनदास की ही श्रेणी में है। उन्हें दुनियादारी पता नहीं। वे सीधे-साधे और ईमानदार लोग है।

हमारी कसौटी में वही साहित्यकार कवि या लेखक खरा उतरेगा ाो वास्तविक ीवन ागत के अनुभवों को कलात्मक रूप से अपनी र ाना में ित्रण करें। यह कहानी उसी समय की है। ाब संसार के हर देश की तरह हमारी सरकार की अर्थनीति और रा ानीति थी। ाब अमीरों और गरीबों के बी ा की खाई इतनी गहरी और ौड़ी हो ुकी थी कि उसे कोई भी प्रयो ित विज्ञापन मिटा नहीं पाता था। इसी यथार्थ की पृष्ठभूमि में लेखक यह कहानी लिखता है। समा ा में भ्रष्टा ारी और लुटेरे हर ागह हैं। ाब मोहनदास के पिता का देहांत होता है। ाब "गोसाई कस्तूरी से पाँ ा सौ रुपये ाटके, पाँ ा सौ रुपये ांगल का फारेस्ट गार्ड ले गया। वह पतेरा से काबा की ािता के लिए सूखी लकड़ी भी बटोरने दे रहा था।"[2] कस्तूरी की ससुर की अंतिम क्रिया हेतु ये लोग अलग-अलग रूप से एक हज़ार रुपये ले लेते हैं। यह वर्ग प्रा ीन काल से ांगल में रहता आया है। ांगल में ही वसंतोत्सव मनाता आया है और कई युगों से वह ांगल का रक्षक तथा उपभोक्ता रहा है। लेकिन आ ा उसी की अंतिम क्रिया हेतु लकड़ी के लिए सरकारी कर्म ारी पैसा ले रहा है।

---

[2] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.59

उदय प्रकाश इस कहानी में देश में व्याप्त भ्रष्टा ार को सूक्ष्म दृष्टि से पकड़ते हैं। वे एक ओर मोहनदास की कहानी को आगे ब .ाते हैं तो दूसरी ओर सरकार के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हो रहे भ्रष्टा ार पर भी अपनी कलम रोक नहीं पाते। वे लिखते हैं कि-"15 साल से हिंदी भाषा से संबंधित पदों की ायन समिति का हर सदस्य, रिक्त पदों पर अपने दामाद, बेटा, बेटी,संबंधी, ापलूस, कारिंदा को खुले आम नियुक्त कर ाता था और उस पर न कोई सी.बी.आई ाँ ा होती थी, न रा यसभा या लोकसभा में कोई सवाल उठता था।"[3]

हमारे कानून में बहुत सारी सुविधाएँ हैं। हमारे संविधान में व्यक्तियों की पूर्ण स्वतंत्रता प्रधान किया गया है। लेकिन वह स्वतंत्रता और अधिकार केवल नाममात्र है। ाब प्रथम श्रेणी न्यायाधीश मुक्तिबोध ि ालाधीश द्वारा ाँ ा करवाने का आदेश देते हैं, तब ि ालाधीश की आँख-नाक-कान गाँव का पटवारी ही होता है। उस पटवारी को बिसनाथ ैसे लोग कुछ पैसे और मुर्गा दे देते हैं तब पटवारी कहता है कि-"अरे आप लोगों का हुकुम हम कभी टालेंगे भला?... इतने पैसे में तो हम ससुर... मूस को हाथी, खेत को सड़क और छक्के को छह ब ों की अम्मा बना दें।"[4] इस कहानी में हम मुख्य रूप से पाते हैं कि अंग्रेज़ों द्वारा गुलाम भारत पर शासन के लिए तैयार किये गये नौकरशाही के इस ंग काय/लोह ाँ े ने आज़ादी के 60 साल बाद आधिकारिक सरकारी दस्तावे ा पर बिसनाथ वल्द नगेंद्रनाथ को मोहनदास वल्द काबादास बना दिया है।

आ ा हमारे समय में नवयुवक मानसिक रोग के शिकार हैं। ि ास तरह मोहनदास की ेतना पर ाे घाव लगाता है वह लगभग एक हफ्ते की अखंड नींद मूर्छा या नशे के दौरान ुप ाप भर गया। असली मोहनदास को नौकरियाँ इसलिए नहीं मिलती हैं क्योंकि उसके पास कोई सिफारिश, संपन्न, तिकड़ों और घूँस के लिए रुपये नहीं थे। वह किसी गिरोह या माफिया का सदस्य नहीं था। क्योंकि वह उस ाति और वर्ग का नहीं था, ि ान ातियों, वर्गों के पास ताकत थी। आ ा भी अनेक

---

[3] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.67

[4] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.70

मोहनदासों को धोखाधड़ी, छल, कपट किया ा रहा है, लेकिन वे कुछ भी कर पाने में असहाय हैं।

इस कहानी में मशीनीकरण के किसानों पर पड़ते प्रभाव को लेखक ने ि ात्रित किया है। बहुराष्ट्रीय तथा बहुस्तरीय कंपनियों द्वारा किसान को कई रूपों में ठगा ाता है। कंपनियाँ अपने माल विक्रय हेतु कई प्रकार के मुखौटे अपनाती हैं। "किसानों को ट्रैक्टरों, मशीनीकरण, सरकारी बी ों के बारे में अनेक प्रकार की संभावनाएँ बताकर किसानों को बैंक द्वारा क ि लेने के लिए उकसाया ाता है। किसान क ि को ीवन भर ुका नहीं पाते। कहानी में घनश्याम नामक एक पात्र इसी का शिकार है। वशेदर नामक पात्र ग्रामीण बैंक से क ि लेकर खेती करता था। दो महीने पहले अपने खेत को नीलामी से ब ाने के लिए बि ली के खंभे पर ा.कर तार से ि पक कर मर गया। छोटे किसान और खेत म ादूर गाँव छोड़-छोड़ कर शहर भाग रहे थे।"[5]

हमारे समा ा में एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण कर रहा है। इस शोषण को खत्म करने में कानून असफल रहे हैं। क्योंकि गौर से देखें तो शोषक वर्ग में ो भी सत्ता है उसमें से हर कोई दूसरे का क्लोन है। हर कोई एक ैसी ब्रांड का उपभोक्ता है। वह एक ैसी ीज़ें पी रहा है, एक ैसी ीज़ें खा रहा है, एक ैसी कारों में घूम रहा है। हर किसी के एकाउंट एक ैसे बैंकों में हैं। सभी की ेबों में एक ैसे ए.टी.एम. या क्रेडिट कार्ड और हाथो में एक ैसे मोबाइल हैं। एक ैसी शराब के नशे में अखबारों के पे ा एक से लेकर पे ा तीन तक या टी.वी. के एक से लेकर 70 ैनेल तक वे ैसे धूर्त, बेशर्म और नंगे हैं। गौर से देखिए उनकी त्व ाा का रंग और उनकी भाषा एक है।"[6] ाब श्रीवास्तव बिसनाथ की इंक्वायरी हेतु उनके घर ाता है तब बिसनाथ की पत्नी कहती है कि-"सरिता दीदी को साथ में नहीं ले आये सर?"[7] इस बात में एक छद्म घरेलू भावना है। लेकिन इन लोगों की मानसिकता

---

[5] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.46-47
[6] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.29
[7] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.49

अक्सर विकृत होती है। आफिसर की नज़र बार-बार अमिता की खुली नाभि पर अटक ाती है। इन्क्वायरी ऑफिसर एक िंदा मॉडल ैसी औरत सामने आते ही अपनी इंक्वायरी करना, कर्तव्य निभाना समा के प्रति उत्तरदायित्व, ईमानदारी और व्यक्ति निष्ठता यहाँ तक कि खुद अपनी पत्नी के विश्वास को भी बे देता है। वह ऑफिसर अमिता से ही मुखातिब रहता है। परिणामतः अ छी इन्क्वायरी नहीं कर पाता।

आ के समा में अधिकतर ये ही लोग हैं। समा में कुछ लोग ईमानदार और संवेदनशील भी हैं ो शोषित वर्गों का उद्धार ाहते हैं ैसे कहानी में वकील हर्षवर्धन, मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई और शमशेर बहादुर सिंह आदि। ये व्यवस्था के कर्म ारी हैं उनके पास पॉवर है। ये शोषित समा का उद्धार ाहते हैं। लेकिन इन लोगों को वहीं रखा ाता है ाहाँ इन ईमानदारों की प्रतिक्रिया से उ ावर्ग को कहीं ठेस न पहुँ े। ैसे कहानी में बताया गया है कि मुक्तिबोध एक ईमानदार प्रथम श्रेणी न्यायाधीश हैं। वह अपने कर्तव्य के प्रति उत्तरदायित्व निभाना ाहते हैं। शोषित वर्ग के प्रति संवेदनशील है। वे ानते हैं कि असली मोहनदास कौन है? हर्षवर्धन को मुक्तिबोध कहते हैं कि असली मोहनदास मोहरनदास ही हैं। "मैं ानता हूँ कि मोहनदास ही ... वास्तविक मोहनदास है।"[8] हर्षवर्धन मुक्तिबोध से ानना ाहते हैं कि आपको कैसे पता कि वास्तविक मोहनदास ही मोहनदास है। तब मुक्तिबोध कहते हैं कि It's very simple इसे ानना तो बहुत आसान है। अगर आप में थोड़ी सी संवेदना और विवेक हो तो।"[9] मुक्तिबोध का यह वाक्य बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन उनकी कुछ म बूरियाँ भी हैं। उनके सामने कानून है। कानून को सबूत (प्रमाण) की आवश्यकता है और वे प्रमाण मोहनदास नहीं बल्कि बिसनाथ देता है। इस म बूरी के परिणामस्वरूप "मुक्तिबोध के माथे की नसें फूल ाती हैं। उँगलियाँ कांप उठती हैं, वे बे ैन होते हैं, उनकी उंगलियों के बी फँसी हुई बीड़ी

[8] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.75

[9] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.76

बु ाने के करीब थी।"[10] लेकिन अंततः वे मोहनदास को न्याय नहीं दिला पाते। मुक्तिबोध हर्षवर्धन को कहते हैं कि "हर सिद्धांत खत्म हो सकते हैं... किसी समय बहुत परिवर्तन लगनेवाले बौद्धिक और दार्शनिक र ानाएँ बदले हुए समय में बिल्कुल खोखले वाल ाल, अनर्गल बकवास और ठगों प्रव ानों में बदल सकती हैं।"[11] इतिहास में बार-बार हुआ है लेकिन... "मनुष्य के भीतर एक ीज़ ऐसी है, ो कभी किसी भी युग में, किसी भी तरह की सत्ता के द्वारा नहीं मिटायी ा सकती। ... और वहाँ है न्याय की आकांक्षा। न्याय की आकांक्षा कालातीत है।"[12] यही न्याय की आकांक्षा कहानी के पात्र मोहनदास के ीवन में अंत तक बनी रहती है। इस आकांक्षा को मोहनदास तब तक नहीं छोड़ता ब तक शोषक वर्ग या शक्तिशाली वर्ग उसको पीट कर उसकी हड्डी-पसली एक कर देते। आ के समय में ऐसे बहुत से मोहनदास हैं ो शक्तिशाली वर्ग द्वारा शोषित हैं व पीटे ाते हैं। लेकिन कानून उसको देख नहीं पाता और सरकार उसको सुन नहीं पाती।

इस कहानी में व्यक्त वास्तविक यथार्थ में हम सभी हैं। "यह वही समय है िसमें मोहनदास है, आप हैं, मैं हूँ और बिसनाथ है और आ का यथार्थ है।"[13] आ विडंबना और दुःख की बात यही है कि हम सब हिंदी के कथा-सम्राट मुंशी प्रेम ंद की सवा सौंवी यंती मना रहे हैं। पर उनके साहित्य का विषयवस्तु नहीं बदलता है। वही शोषक समा आ भी है ो प्रेम ंद के उपन्यास में पोरबंदर गाँव की याद दिलाता है।

---

[10] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.76
[11] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.77
[12] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.77
[13] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.87

पात्र

किसी र ाना में पात्र महत्वपूर्ण होते हैं। र ानाकार पात्रों द्वारा अपनी बात अथवा समा ा का यथार्थ ि ात्रण करता है। र ाना में पात्र अपनी-अपनी भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभाते हैं।

किसी भी र ाना में कुछ पात्र होते हैं ाो मूल रूप से मुख्य भूमिका निभाते हुए कहानी को आगे ब ़ाते हैं। वस्तुतः देखा ाा सकता है कि किसी र ाना में एक नायक और एक नायिका होती है। संपूर्ण कहानी उस नायक के ाीवन को या उसकी प्रकृति को प्रभावित करनेवाली परिस्थितियों को ले कर ालती हैं। ैसे-रामायण में मुख्य नायक और नायिका राम और सीता हैं। अभिज्ञान शाकुंतल में दुष्यंत और शकुंतला हैं, सूरसागर में कृष्ण और गोपिका है, पद्मावत में रत्नसेन और पद्मिनी हैं, प्रिय प्रवास में राधा और कृष्ण हैं, गोदान में होरी और धनिया हैं आदि।

अगर हम देखें तो ज्ञात होता है कि इन तमाम काव्य नाटकों, उपन्यासों, कहानियों में मुख्य कथा नायक और नायिका के ाीवन से ाुडी हुई होती है और वह क्रमबद्ध रूप से निष्कर्ष तक पहुँ ाती है। कहानी मुख्य रूप से उन्हीं के आसपास घूमती है।

गौण पात्र किसी काव्य या र ाना में मुख्य पात्र के सहायक रूप में आते हैं। ये दृष्टांत के अनुसार आते हैं और कभी-कभी लुप्त हो ााते हैं या नायक के साथ मिलकर अंत तक साथ निभाते हैं। मुख्य पात्र कहानी के शुरुआत से लेकर अंत तक बने रहते हैं क्योंकि कहानी के वह मूल रूप में वे ही होते हैं और कहानी के केंद्र में उन्हीं का ाीवन होता है। लेकिन गौण पात्र मुख्य भूमिका नहीं निभाते लेकिन मुख्य भूमिका निभानेवाले पात्रों को समय-समय पर प्रेरणा, सहायता देते ालते हैं। आवश्यक नहीं है कि कोई गौण पात्र कहानी के बने रहे। वे संदर्भ के अनुसार कहानी में प्रवेश लेते हैं और ाहाँ तक उनकी भूमिका होती है वहाँ तक बने रहते हैं। कभी-कभी देखा ााता है कि गौण पात्र शुरुआत से अंत तक नायकों के साथ रहते हैं और कभी-कभी बी ा में ही आकर बी ा में लुप्त हो ाते हैं- ैसे रामायण में लक्ष्मण अंत

तक राम के साथ होते हैं, हनुमान बी ा में आते हैं और अंत तक बने रहते हैं। विभीषण, सुग्रीव आदि बी ा में ही आते हैं और बी ा में ही लुप्त हो ाते हैं।

र ाना-संसार में देखा ाता है कि एक मुख्य कथा शुरू से अंत तक ालती है और साथ में एक या कई गौण कथा भी होती हैं ाो मूल कथा को पुष्ट और समृद्ध बनाती हैं। उसी प्रकार गौण पात्र मुख्य पात्र के सहायक के रूप में आते है। इस र ाना प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखें तो ‘मोहनदास’ कहानी में उपर्युक्त सभी तत्वों का समावेश है। इस कहानी में मूल पात्र मोहनदास, कस्तूरी बाई, बिसनाथ, मुक्तिबोध, हर्षवर्धन आदि पात्र मूल हैं। मुख्य रूप से यह कहानी मोहनदास के ाीवन पर आधारित है। इस कहानी में गौण पात्र हैं-काबादास, पुतलीबाई, गोपालदास, रेणुका देवी, नगेंद्र नाथ, हरिशंकर परसाई, देवदास, शारदा और वि ाय तिवारी। इस कहानी में मोहनदास का ाीवन संघर्ष मार्मिक ंग से प्रकट होता है और उस संघर्ष में नायिका के रूप में कस्तूरी बाई मुख्य भूमिका निभाती है और ाीवन संघर्ष की सभी परिस्थितियों में मोहनदास का इस प्रकार साथ देती है ािस प्रकार पांडवों का साथ द्रौपदी ने दिया। होरी का साथ धनिया ने दिया। इन पात्रों का संक्षिप्त परि ाय प्रस्तुत है।

मोहनदास

‘मोहनदास’ कहानी का शीर्षक है और प्रधान पात्र भी। यह पात्र कहानी का नायक तथा मुख्य पात्र भी है। उदय प्रकाश के मनस्तत्वों को अध्ययन करते समय देखा ाता है कि उदय प्रकाश एक स ोत, सृ ानशील, यथार्थवादी साहित्यकार हैं। वे समा ा में होती गतिविधियों को, समा ा में होते शोषक को अपनी र ानाओं में व्यक्त करते हैं। मोहनदास समा ा के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ािसे दो वक्त की रोटी कमाने के लिए दिन भर काम करना पड़ता है। मोहनदास एक संघर्षशील पात्र है। वह अपने ाीवन में समा ा, कानून, सरकार, लोक-मर्यादा, रीति रिवा ा इन सभी सामा ािक एवं अधिकारिक मान्यताओं से संघर्ष करता हुआ प्रतीत होता है।मोहनदास उस समय का सुशिक्षित युवक है। ािस समय भारत देश वैज्ञानिक, सामा ािक, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने-आपको साबित कर ाुका था तथा

अपनी ागह कायम करने में सक्षम हो गया था। इस सुशिक्षित युवक पर भारतीय समा ा और सभ्यता का प्रभाव था। उसका ारित्र सीधा-साधा सरल था। उनकी प्रतिभा के संदर्भ में लिखा गया कि मोहनदास "लिखित परीक्षा में सबसे ऊपर रहता लेकिन ाब इंटरव्यू होता तब खारि ा कर दिया ाता।"[14] इंटरव्यू की ायन पद्धति के रहस्य का खुलासा उदय प्रकाश कहानी में धीरे-धीरे करते हैं।

मोहनदास की प्रारंभिक शिक्षा अपनी गांव में तथा उ ा शिक्षा अनुपपूर ि ाले के सरकारी एम. ी.डिग्री कॉले ा में हुई थी। वह स्नातक बी.ए. में प्रथम श्रीणी में विश्वविद्यालय की टॉपर सू ी में सबसे ऊपर है। उन्हें आशा थी कि मैं एक अ छी सरकारी नौकरी पा सकता हूँ। लेकिन सामा ि ाक विकृतियों के परिणामस्वरूप उनका संपूर्ण ाीवन दुःखमय व्यतीत हुआ। ाब तक वह प ़ाई-लिखाई करता रहा तब तक पूर्ण रूप से आत्मविश्वास से भरा हुआ था। लेकिन प ़ाई की बाहर की दुनिया उनकी दृष्टि में अथवा उनके सम ा में आयी तब उनका सरकारी पद पर ायन न होकर ायन करता है, अपनी ााति के एक युवक का ायन किया। कॉले ा के बाहर की दुनिया के बारे में उदय प्रकाश इस कहानी में लिखते हैं कि-"स्कूल-कॉले ा के बारह की असली ि ांदगी दरअसल खेल का एक ऐसा मैदान है, ाहाँ वही गोल बनाता है, ि ासके पास दूसरे को लंगडी मारने की ताकत होती है। और यह ताकत सोर्स-सिफारिश, ाोड़-तोड़, रिश्वत-संपर्क, ाालसा ाी वगैरह तमाम ऐसी अवैध और अनैतिक ाीज़ों से बनती है, ि ानमें से एक भी मोहनदास की पहुँ ा के भीतर नहीं थी।"[15] अतः मोहनदास प्रतिभाशाली होकर भी सुशिक्षित बेकार रहा।

मोहनदास का परिवार दलित था, पिछड़ी ााति का परिवार था। उसके परिवार की स्थिति आर्थिक, सामा ि ाक, सांस्कृतिक सभी दृष्टि से समा ा की दृष्टि में हीन मानी ाती थी। उनके पिता श्री काबादास और माता पुतली बाई एक साधारण गृहस्थी के दो पहिए थे। वे न ही समा ा की ाापलूसी ाानते थे, न ही समा ा की स्वार्थपरक नीति को। मोहनदास के परिवार में छः सदस्य थे। पिता दमा की बीमारी

---

[14] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.13
[15] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.14

से घिरा हुआ था तथा माँ दृष्टिहीन थी। अपने पिता के दवादारू हेतु हर समय पैसों की आवश्यकता पड़ती थी। साथ-साथ अपने पुत्र-पुत्रियों की देखभाल भी करना पड़ता था। इन सभी ुनौतियों का सामना बिना नौकरी के नहीं हो सकता था। मोहनदास का विवाह ीवन के पंद्रहवें साल में कस्तूरी बाई से हुआ। परिणामतः देवदास और शारदा का न्म हुआ। ि न्होंने अल्पायु में ही अपने-अपने ख र्ा का बो ा उठा लिया। देवदास प .ाई के पश ्ात 'दुर्गा ऑटो वर्क्स' में गाड़ियों में हवा भरने, पंक ्र आदि ोड़ने और शारदा बिसनाथ-प्रसाद के एक साल के बेटे को संभालने। बिसनाथ प्रसाद नगेंद्रनाथ के पाँ ा में से एक बेटा है।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि से स्पष्ट हो गया होगा कि मोहनदास के परिवार की स्थिति दयनीय एवं शो ानीय थी।

भारत की समा ा व्यवस्था में ाातिवाद मुख्य घटक से रहा है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि ाार भागों में विभक्त समा ा में कई तरह के दोष आ रहे थे। इन दोषों को निकाल फेंकने हेतु समा ा सुधारकों ने अनेक प्रयास किये। यहाँ तक कि डॉ.बाबा साहेब अंबेडकर ने शूद्रों को संविधान में विशेष अधिकार भी दिया लेकिन ाब हम मोहनदास की कहानी प .ते हैं तो पता ालता है कि यह सुधार उसी तरह कर रहा, ैसी एक कहावत है-"रोग ब .ता ही गया, ाो ाो दवा दानी की।" इस आधुनिक भारत में तथा 20 वीं शताब्दी के अंतिम ारण में भी मोहनदास का परिवार तथा मोहनदास की ाति के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल न पाया। पुरबनरा गाँव में ाातिवाद के कारण मोहनदास को हीन दृष्टि से देखा ाता है। इसी ाातिवाद के कारण वे सरकारी नौकरी न पा सके।

इस कहानी में समा ा का और एक रूप हमारे सामने आता है। ाब गाँव में खबर फैलती है कि मोहनदास को नौकरी मिली तब गाँव के सभी वर्ग के लोग उसे आदर देते हैं। लेकिन ाब उसकी नौकरी हाथ से छिन ाती है, तब समा ा वही दृष्टिकोण अपनाता है ाो नौकरी मिलने से पूर्व था। ि ास समा ा में उसे काम मिलता था उस समा ा में काम के घंटे अधिक और मदूरी कम थी। फलतः रात दिन मेहनत करने के पश ्ात भी मोहनदास की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो सकी।

मोहनदास एक ईमानदार एवं सीधा-साधा व्यक्ति है। ि ासके मन में दूसरों के प्रति या अपनों के प्रति कोई क्लेश ैसी धारणा नहीं थी। वह अपने माता-पिता को सुख देना ाहता था। संघर्ष के ीवन में तथा कर्म प्रधान संसार में ठगा हुआ मोहनदास अपनी पत्नी कस्तूरी को प्रेम देना ाहता था। गहन समस्याओं में रहते हुए भी मोहनदास कहता है कि-"ए कस्तूरी, कबड्डी खेलि हे? मोहनदास ने मुस्कुराते हुए कहा- हू... तू... तू... तू..?"[16] मोहनदास हर समय मानवीयता से पेश आता था।

इस समा ा की कूटनीति को मोहनदास अपने ीवन अनुभवों से सम ा गया था। वह ाना ाता है कि बिना ताकत वालों को इस समा ा में कोई अस्तित्व नहीं और वह अंत में न्यायालय में हार ाता है और निराशा होकर कहता है कि-"मैं आप लोगों के हाथ ोड़ता हूँ। मु ो किसी तरह ब ा लीि ाए। मैं किसी भी अदालत में ालकर हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ कि मैं मोहनदास नहीं हूँ।"[17]

मोहनदास अपने कर्तव्य के प्रति अपने ीवन में हर समय प्रतिबद्ध रहा। ाहे अपनी पत्नी के प्रति उत्तरदायित्व निभाना हो। अतः अपनी माता-पिता एवं पुत्र-पुत्री के प्रति उत्तरदायित्व निभाना हो। इसी उत्तरदायित्व को निभाने के लिए वह रात-दिन मेहनत करता है। अपने लोगों से मिलना- ुलना, बातें करना, दोस्तों के साथ संबंध निभाना उसे आता था। अपने परिवार के प्रति उत्तरदायित्व निभाने में वह कहीं पीछे नहीं हटा।

कस्तूरी बाई

भारतीय परंपरा में पत्नी-पति की अर्धांगिनी होती है। अर्धांगिनी का तात्पर्य यह है कि पति दुःख में हो तो पति से यादा पत्नी को दुःख होता है। कस्तूरी बाई को हम एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में देख सकते हैं। वह कटकोना गाँव के बिरं ू की सुंदर बेटी थी। कस्तूरी बाल्यकाल से ही मेहनती थी। विवाह होते ही घर का सारा काम ही नहीं संभाला बल्कि आसपास छोटी-मोटी म ादूरी करके कुछ रुपये

---

[16] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.24

[17] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.85

कमाना शुरु किया। िससे मोहनदास की प ़ाई का ख र् निकल सका। मोहनदास को लेकर उसने सुनहरे और कल्पनात्मक सपने देखे थे। इसके ारित्र के विषय में कथाकार ने लिखा है कि-"इस स्त्री ने उससे विवाह करते हुए क्या सपना देखा था और उसे क्या मिला? सुबह से लेकर रात तक, हर रो ा, बिना नागा, हर सुख-दुख, हरी-बीमारी, भूख-प्यास में वह उसके संग खड़ी रही।"[18]

इस संदर्भ से ज्ञात होता है कि कस्तूरी अपने ीवन में पत्नी धर्म का उत्तरदायित्व हर समय निभाती रही। वह सुंदर थी। उसकी सुंदरता पर विकृत मानसिकता वाले लोग नज़र दौड़ाते रहते थे। वि ाय तिवारी ैसे लोग मोहनदास की आर्थिक स्थिति का फायदा कस्तूरी से उठाना ाहते थे। कस्तूरी की सुंदरता के विषय में कथाकार लिखता है कि-"उसे इस बात का अ छी तरह से अहसास था कि दो ब ों की माँ बन ाने के बाद भी वह अभी तक गाँव में सबसे सुंदर कद-काठी और ेहरे-मोहरे की औरत है। और अरसे से गाँव के ठुकरान-बंभनान शोहदों की नज़रें गिद्ध की तरह उस पर ग ़ी हुई हैं।"[19]

वि ाय तिवारी एक दिन कस्तूरी को लकड़ी लाते समय उससे छेड़-छाड़ करने की कोशिश करता है तब कस्तूरी कहती है कि-"को आहे... सिरकिन मा ी घुसे हबस दहि ार! निकर तोर गरमी ुडाओ बुर ोद्दा? भोंसडी बाला!"[20] इस तरह के लोगों से कस्तूरी हमेशा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष करती रही। और अपने पति के साथ आदर्श उत्तरदायित्व निभाती है। हम उसे आदर्श भारतीय महिला के रूप में देख सकते हैं। कस्तूरी धनिया के समान है। धनिया व्यवस्था का विरोध करती है ाब कि कस्तूरी ीवन संघर्ष को अपनाती है।

बिसनाथ

'मोहनदास' कहानी में बिसनाथ समा ा के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है ो बड़े बाप की संपत्ति पर ीना ाहता है। बिसनाथ के ारित्र में हम बड़े बाप की

---

[18] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.24
[19] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.71
[20] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.71

बिगड़ी औलाद देख सकते हैं। बिसनाथ नगेंद्रनाथ ामींदार के बेटे थे। वे अपने बाप की कमाई को शानो-शौकत में उड़ाना ाहते थे। उसके विषय में उदय प्रकाश लिखते हैं कि-"बिसनाथ के पास एक ीज़ ो नहीं है वह है ईमान।"[21] अपना नाम बदलकर मोहनदास रख देता है। आर्थिक स्थिति और ताकत का इस्तेमाल करते हुए ीवन भर मोहनदास के नाम से नौकरी करता है। वह अपनी पत्नी अमिता भरद्वा ा का नाम कस्तूरी बाई, पिता का नाम काबा दास और माता का नाम पुतली बाई रख लेता है। और इसे साबित भी कर देता है।

इन्क्वायरी ऑफिसर श्रीवास्तव से ब इस मामले पर इंक्वायरी शुरू होती है तब बिसनाथ कहता है कि-"देखिए सर,ये लेनिन नगर ऐसी कॉलोनी है कि यहाँ पड़ोसी ही पड़ोसी का दुश्मन है। कोई किसी की हँसी-खुशी और ब ़ती देख नहीं देख सकता। अब यही बे-बात का बतंगड।"[22]

 ाँ ा करता ऑफिसर श्रीवास्तव अमिता की हरकतों में लीन हो ाता है और अपनी ाँ ा करना भूल ाता है। मामला अंतिम रूप में न्यायालय के समक्ष ाता है। वहाँ भी बिसनाथ ताकत के ोर से न्याय को अपने पक्ष में कर लेता है। वह ूठे सबूत दिखा देता है। अंततः मुक्तिबोध ैसे न्यायाधीश और हर्षवर्धन ैसे वकील भी हार ाते हैं।

मुक्तिबोध

उदय प्रकाश अपनी कहानी में न्यायाधीश के रूप में मुक्तिबोध को ले आते हैं। ो प्रगतिशील वि ारधारा से युक्त तथा स े रूप में समा ा िंतक हैं। वे ानते थे कि असली मोहनदास मोहनदास ही है। लेकिन कानून को सबूत ाहिए और मोहनदास सबूत ुटाने में अक्षम था। मुक्तिबोध म बूर थे फैसला सुनाने में।

न्यायाधीश मुक्तिबोध समा ा के उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं ो स े अर्थों में देश की प्रगति ाहते हैं। वे ानते थे और उन्हें पता था कि-"मनुष्य के

---

[21] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.11

[22] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.50

भीतर ऐसी ीज़ है, ो कभी भी, किसी भी युग में, किसी भी तरह की सत्ता द्वारा नहीं मिटाई ा सकती... और वह है न्याय की आकांक्षा।"[23]

मोहनदास की इस आकांक्षा को पूरी करने हेतु अंत में मुक्तिबोध अपने विशेष अधिकार को अपनाते हैं। उनके शब्दों में-"मेरे पास एक पॉवर है। सिर्फ एक पॉवर। दैट इ ा... सीक्रेट ुडीशियल इंक्वायरी। मैं खुद यह ाँ ा करूँगा। गोपनीय न्यायिक ाँ ा। ास्ट लीव इट टु मी।"[24] और वह हरिशंकर परसाई, शमशेर बहादुर सिंह की सहायता से गोपनीय न्यायिक ाँ ा करता है। ये सभी अधिकारी अपनी-अपनी कर्तव्य निष्ठा और ईमानदारी के लिए ाने ाते थे। अंत में मुक्तिबोध दूध का दूध और पानी का पानी कर देते हैं। पर उनका तबादला कहीं और हो ाता है और वे मोहनदास को न्याय नहीं दिला पाते।

हर्षवर्धन सोनी

हर्षवर्धन एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ वकील हैं। संपर्क मोहनदास से तब होता है, ब वह टाइपिंग करवाने हेतु मोहनदास के पास आते हैं। मोहनदास की प्रतिभा देखकर वे कहते हैं कि आपको कहीं सरकारी नौकरी करनी ाहिए लेकिन आप यहाँ टाइप कर रहे हैं। इस सवाल के वाब में वह सारी कथा हर्षवर्धन को सुनाता है इस पर हर्षवर्धन कहता है कि-"मैं तुम्हारा केस लड़ूँगा और तुम्हें न्याय दिलाऊँगा।"[25] इसे न्याय दिलाने के सिलसिले में हर्षवर्धन ी तोड़ मेहनत करता है। इस केस को वह बिना पैसे लिये ही लड़ता है क्योंकि वह सम ा गया है कि मोहनदास पैसे नहीं दे सकता लेकिन उसे न्याय की अत्यंत आवश्यकता है। इस उ ा मानवीय कार्य को करने हेतु अपनी बौद्धिकता को प्रयोग में लाता है। और सबूत ुटाता है। पर बिसनाथ उन सबूतों को पैसे के लाल ा देकर अपने ओर करवा लेता है। हर्षवर्धन स ाई का साथ देते हुए भी सफल नहीं हो पाता।

---

[23] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.77

[24] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.77

[25] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.65

कहानी में यह बताया ाता है कि हर्षवर्धन सोनी वकील मोहनदास का केस हार ुका है। लेकिन फिल्म में केवल हारता ही नहीं बल्कि उसे मार दिया ाता है। हर्षवर्धन की मौत के पीछे बिसनाथ का हाथ होता है।

गौण पात्र

इस कहानी में काबादास, पुतली बाई, नगेंद्रनाथ, रेणुका देवी, गोपाल दास, अमित भरद्वा ा, वि ाय तिवारी, श्रीवास्तव, घनश्याम, एस.पी.सिंह, बिरन बैगा, देवदास और शारदा आदि अनेक पात्र हैं। ो कथावस्तु को अपने-अपने संदर्भ के अनुसार गति देते हैं। काबादास और पुतलीबाई मूलतः कबीर पंथी है। गरीब और निम्न ाति के होने के कारण समा ा में उपेक्षित है। काबादास टी.बी. मरी ा है और पुतली बाई नेत्रहीन है। इन्हें समा ा और शासन व्यवस्था के विषय में ज्ञान नहीं था। उनको आशा थी मोहनदास को एक सरकारी नौकरी मिलेगी ाब मोहनदास के ायन की बात उन्हें पता ालती है तब वे कबीर के दोहे गाते हैं कि-"टोरबा-पुतऊ की कोठरिया मा ो अलेपी मइना खें ाा डारिस हबै। भाग आइस, कलेस गइस... किसमत ाागिस... दिलद्दर भागिस...। ... ै हो मलइह। माई... तोर ल गोड लागों सतगुरु महरा ा...!! ै हो...! ै हो...!"[26]

नगेंद्रनाथ ामींदार होने के कारण कानून के दाँव पें ा से परि ात थे। इसी कारण वे अपने बेटे बिसनाथ को मोहनदास की नौकरी दिलाते हैं। वे ातुर भी थे। ाब ाँ ा करता ऑफिसर उन्हें अपना नाम बताने को कहता है तो ाट से अपना नाम काबादास बताता है। उन्होंने कुरते के गले में से खीं ा कर माला निकाली-"ये तुलसी की माला ाब से धारण किये तब से तुलसीदास की ौपाइयै हमारा ओ ना-बिछौना है।" 'दास' नाम तभी से ाोड़ रखे हैं।"[27]

---

[26] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.20

[27] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.51

गौण पात्र के रूप में बिसनाथ की पत्नी अमिता भरद्वा ा है। ि ासके बारे में कथाकार कहते हैं कि "लेडी ा में शर्म न हो तो अ छा भी नहीं लगता। थोड़ा-सा कुछ तो लेडी ापना बना रहना ाहिए कि नहीं?"[28]

वह माडलनुमा स्त्री है। अमिता समा ा की उन स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है ाो थोड़ा लिख प .कर अपने आपको बहुत होशियार सम ाती है। अमिता पुरुषों को अपने प्रभाव में फंसाने में काफी सफल हो ाती थी और वह ाँ ा कर्ता को भी फँसाने में सफल हो ाती है।

श्रीवास्तव ाँ ाकर्ता के रूप में बिसनाथ के घर ाता है। उनके विषय में कथाकार कहता है कि-"इंक्वायरी ऑफिसर की नज़र बार-बार अमिता की खुली नाभि पर अटक ाती थी।"[29] ये अपने कर्तव्य के प्रति स ाग नहीं रह पाया और अपने कार्य का उत्तरदात्वि भी निभा नहीं पाए।

इस कहानी का एक ऐसा पात्र है ाो कम ाोर परिवार का फायदा नैतिक और अनैतिक रूप से लेना ाहते हैं और वह है वि ाय तिवारी। वि ाय तिवारी मोहनदास के साथ कॉले ा में प .ता था। लेकिन निर्धन पिता का पुत्र होने के कारण प .ाई नहीं कर पाता। वि ाय तिवारी हमेशा कस्तूरी के सुंदरता पर मोहित रहता है। उनके विषय में कथाकार कहता है कि-"कस्तूरी का सुंदर ाेहरा और वि ाय तिवारी की शातिर आँखें बार-बार उसके सामने कौंध ाती।"[30]

वह कस्तूरी को अपने घर में काम देकर आर्थिक लाल ा बताकर कस्तूरी का शारीरिक शोषण करना ाहता था और मोहनदास को अपना गुलाम बनाना ाहता है।

मोहनदास का सा ू गोपाल दास एक साधारण व्यक्ति है ाो मोहनदास को हर समय मदद करना ाहता है। वह प्रत्यक्ष रूप से मोहनदास के साथ रहता है। वह मोहनदास को 'ओरियंटल कोल माइंस' में ले ाता है। गोपाल दास के साथ-साथ

---

[28] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.50
[29] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.49
[30] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.22

उसी तरह का पात्र घनश्याम है ो मोहनदास को विपत्ति में यथासंभव मदद करता है। देवदास मोहनदास का पुत्र है ो आत्मनिर्भर है। वह प ़ाई के साथ-साथ काम करता है। देवदास की बहन शारदा भी आत्म निर्भर है। विश्वनाथ प्रसाद के एक साल के बेटे की देखभाल करती है। दोनों संतान मोहनदास पर अतिरिक्त बो ा नहीं डालना ाहते थे।

इसके साथ ही इस कहानी में बिरन बैगा, हरिशंकर परसाई, शमशेर बहादुर सिंह आदि अपने-अपने संदर्भ में भूमिका निभाते ालते हैं।

2.2 मोहनदास : कथा-विमर्श

निर्देशक म ाहर कामरान

म ाहर कामरान ने हिंदी फिल्मों में निर्देशक बनने से पहले एक छायाकार के रूप में अनेक फिल्मों में काम किया। इन्होंने बतौर छायाकार के रूप में ' ानकार बीट्स', 'मस्ती' के साथ-साथ प्रमुख निर्देशक रामगोपाल वर्मा की 'सत्या' और 'कौन' ैसी फिल्मों में काम किया। इनमें 'सत्या' इनकी पहली फिल्म रही ो काफी लोकप्रिय हुई।

निर्देशक के रूप में इनकी पहली फिल्म 'मोहनदास' है ो 2009 में रिली ा हुई। यह एक ऐसी फिल्म रही ो रिली ा होने से पहले 'दक्षिण एशियाई अंतर्राष्ट्रीय न्यूयार्क' की फिल्म समारोह में प्रदर्शित की गई। 'मोहनदास' वास्तविकता पर आधारित फिल्म है। ो समा ा में फैली सामाि ाक और रा ानीतिक बुराइयों का क ाा ि ाट्ठा हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

मोहनदास कहानी के बारे में म ाहर कामरान कहते हैं कि-"मैं हमेशा हमारे आस-पास की घटनाओं से प्रभावित होता हूँ और सो ाता हूँ कि स ा और ूठ में कैसा फर्क कर सकूँगा तो मोहनदास कहानी पर फिल्म मोहनदास बनाने का फैसला किया।"[31] वे आगे कहते हैं कि समा ा की यथार्थ स्थिति को हम किस कोशिश के द्वारा समा ा के सामने ला सकते हैं। इस आदर्शवादी धारणा को मैं ाब मेरे सारे कलाकारों के सामने प्रस्तुत किया तो वे सारे उत्साहित हो गये। लेकिन विडंबना यह है कि इस फिल्म को बनाने में हम कई घटनाओं के माध्यम से आगे ब ़े थे। मेरी यह फिल्म वास्तविकता के बहुत करीब है क्योंकि यह एक वास्तविकता है।

म ाहर कामरान एक सफल फिल्मकार हैं। उन्होंने कहा कि-"भारतीय दर्शक बहुत परिपक्व है। वह एक ही ाीज़ के बारे में कहता हुआ बोर कर देता है। लेकिन आधुनिकता काल में नई कहानियों और कहानी के नये तरीकों में अपने वि ाार अनेक कहानीकार अपनी र ाना में करने लगे। उन्हीं कहानियों से ली गयी यह एक कहानी है

---

[31] सहयोग म ाहर कामरान फिल्मोग्रफी व बयोग्रफी (इंटरनेट से)

ो विभिन्न समसामयिक मुद्दों, अस्तित्व और अनेक समा ा के सूक्ष्म बिंदु को छू लेती है।

ज्ञान प्रकाश विवेक

कुछ समय पहले भोपाल में एक सम्मान प्राप्त करते हुए कवि-कथाकार उदय प्रकाश ने कहा था कि वे हिंदी के सम्मानित लेखक नहीं हैं, लेकिन पाठकों का अकूत भरोसा ही उनकी पूं ी है। हकीकत यह है कि उदय प्रकाश हिंदी के ऐसे सम्मानित लेखक हैं िनके बिना हिंदी कथा संसार अधूरा है। ऐसा इसलिए संभव हो पाया है कि उदय प्रकाश कहानी लिखते हुए, वक्त की आंख में उंगली डालकर, यथार्थ को बाहर खीं ा लाने की तौफीक रखते हैं। उनके पास एक ऐसी नुकीली एकाग्र दृष्टि है, िसके ारिए वे अपनी कहानियों में, समय की थरथराहट को महसूस कराते हैं। एक साक्षात्कार में वे कहते भी हैं, "मैं मानता हूँ कि कथा अपने समय को भाषा में लिखने का आख्यान है।"[32] उनकी इस टिप्पणी पर गौर करें तो उनकी कहानियाँ अपने समय का आख्यान प्रस्तुत करती हैं। लेकिन मोहनदास कहानी में आख्यान के साथ-साथ कथाकार के तबसरे की आमद ने, कहानी में नई तरकीब, शिल्प और मि ाा ा की खूबसूरत कोशिश की है।

मोहनदास कहानी में एक निम्न ााति का दरिद्र, अभावग्रस्त युवक, अपनी गुम हो ुकी पह ाान के लिए भटक रहा है। यह कहानी मह ा पह ाान के संकट की कहानी नहीं, ताकतवर लोगों के निरंतर मनुष्य हीन होते ाले ाने की भी कहानी है। यानी ो शक्तिशाली है, तंत्र भी उसी के पक्ष में खड़ा नज़र आता है। हमारे समय में दुर्बल होना किसी अपराध से कम नहीं। ताकतवर (बिसनाथ) ाहे तो किसी अन्य प्रभावशाली योग्य (मोहनदास) की शख्सियत को रौंदता हुआ, स्वयं को उसकी (मोहनदास) ागह स्थापित कर सकता है।

निम्नवर्गीय और मध्यवर्गीय लोगों की पह ाान का खत्म होते ाले ााना, एक ऐसी सो ा है िसके महानगरीय विडंबना मानकर ुप्पी साध ली गई है। लेकिन

---

[32] कथाक्रम, अप्रैल- ून 2009-पृ.105

उदय प्रकाश ने इस संवेदनशील विषय को इस तरह उठाया है कि विषयगत संवेदना को बरकरार रखते हुए, कहानी कथ्य के स्तर पर नई और ता ादम नज़र आती है।

मोहनदास लंबी कहानी है। लंबी कहानी लिखना और उसे अंत तक संभाले रखना, शिल्प- ातुर्य और अनुभवशील होने की मांग रखता है। उदयप्रकाश इस तरह की लंबी कहानियाँ लिखते वक्त, खुद ुनौती खड़ी करते है ैसे कि वे अपने आपको ललकार रहे हों। अपनी ललकार के बरक्स वे खुद होते हैं-आत्मविश्वास से भरे, एक ऐसे स ोत कथाकार, ो समा ा को किसी बाल्कनी से नहीं, बल्कि समा ा को उसकी अंधेरी गुफाओं के अंत तक ाकर देखते-परखते हैं।

इस तरह की परख, संवेदना और शऊर अखिलेश की लंबी कहानियों में भी दिखाई देता है। बेशक, मि ा ा और लबो लह ो के लिहा ा से दोनों कथाकारों की कहानियाँ भिन्न नज़र आती है। यही भिन्नता दोनों कथाकारों की मौलिकता है और पह ान भी।

बहरहाल, मोहनदास कहानी एक ऐसी बहुआयामी कहानी है ि ासकी कई परते हैं और हर परत किसी नए पाठ का संकेत देती है। यह कहानी एक रूपक की तरह भी है-शक्ति बरक्स दुर्बलता। धन के मुकाबिल दीनता और नती ा साफ है-दीनता का परा ाय।

मोहनदास बेहद गरीब, निम्न ाति का नौ ावान है ि ासने बी.ए. में प्रथम श्रेणी और मेरिट प्राप्त की है। लेकिन उसे सरकारी नौकरी कहीं नहीं मिली।

यह बिंदु थोड़ा खटकता है। उदय प्रकाश ने मोहनदास को कई बार 'नी ा ाति' का उल्लेख किया है। वे नी ा ाति का है तो उसे एस.सी./एस.टी. कोटे में सरकारी नौकरी आसानी से मिल ानी ाहिए थी। लेकिन उसे सरकारी नौकरी नहीं मिलती। इस बात पर हैरान हुआ ा सकता है कि एक नौ ावान, स्नातक की डिग्री प्राप्त (मेरिट में) लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती। इस मुद्दे की अनदेखी कर दें तो इसके बाद कहानी हर पल, ि ास माहौल, परिस्थितियाँ, ताकतवरों के कुटिल खेल से साक्षात कराती है, वह हिलाकर रख देता है।

सरकारी तंत्र की मक्कारी से निराश होकर मोहनदास ‘ओरियंट कोल माइंस’ कंपनी में नौकरी के लिए आवेदन करता है। वहाँ पाँ ा उम्मीदवार ुने ाते हैं और सबसे टॉप पर मोहनदास का नाम है। यहाँ एक घटना घटित होती है या कहें कि मोहनदास के लिए पह ान का संकट यहीं से पैदा होता है। उदय प्रकाश के िस नए विषय की खो ा की है उसका विस्तार भी यहीं से है। मोहनदास इंत ार करता रह ाता है लेकिन उसे नौकरी नहीं मिलती। उसकी गह बिसनाथ ैसा लंपट, धूर्त और दसवीं फेल, मोहनदास बनकर, छलकपट से नौकरी हासिल कर लेता है। अब बिसनाथ मोहनदास हो ुका है और विडंबना यह है कि वास्तविक मोहनदास, अपने आपको मोहनदास साबित करने के लिए एक हारी हुई लड़ाई लड़ता रह ाता है। एक ओर ग्राम प्रधान, नेता, पुलिस अधिकारी और बिसनाथ ैसे लोग तु छताओं का खेल खेलते, साधन संपन्न, सुविधा-भोगी लोग हैं। वे इतने यादा अमानवीय हैं कि अपने आपको ीवित रखने के लिए किसी को भी समाप्त कर सकते हैं। अथवा किसी की पह ान को खत्म कर सकते हैं। दूसरी तरफ न्याय के लिए लड़ता मोहनदास है। अकेला, गरीब ठगा हुआ मोहनदास।

मोहनदास की अ ानक हर्षवर्धन सोनी से भेंट होती है ो संवेदना से भरा ा बाती किस्त का इंसान है। पेशे से वकील है। वेसा वकील ो मोहनदास से फीस नहीं लेता बल्कि उसकी केस फाइल दायर करने के लिए पैसों का भी ुगाड़ करता है। वहीं, ग ानन माधव मुक्तिबोध नाम के ा ा हैं ो ानते हैं कि मोहनदास के साथ अन्याय हुआ है। अ ानक ा ा मुक्तिबोध की ब्रेन हैमरे ा से मौत हो ाती है और यहीं से मोहनदास फिर टूट बिखर ाता है। उसे इतनी यातना दी ाती है कि वह डरा सहमा हुआ वा ाक से विनीत स्वर में कहता है-"काका मु ो किसी तरह ब ा लीि ाए आप कहें तो मैं आपके साथ ालकर आदालत में हलफनामा देने को तैयार हूँ कि मैं मोहनदास नहीं हूँ।"[33]

---

[33] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.85

कहानी में मोहनदास की मौ ूदगी, एक बेहद डरे हुए शख्स की मौ ूदगी का अहसास कराती है। भय इतना कि ो वास्तविक मोहनदास है वो अपनी शिनाख्त से खुद मुकर रहा है कि वह मोहनदास नहीं है।

उदय प्रकाश इस भय को ित्रित करने में न सिर्फ कामयाब हुए हैं बल्कि भय के अदृश्य ेहरे को ैसे उन्होंने पूरी कहानी में तान-सा दिया हो।

उदय प्रकाश के पास खास किस्म की भाषा है। उससे वह ैसा ाहे वैसा बना लेते हैं। भाषा ितनी सरल लगती है उतनी मारक। कहानी में उनकी अपनी उपस्थिति खलल पैदा नहीं करती। बल्कि ारूरी लगती है। वो ाटिल यथार्थ और मुश्किल समय के बी ा खड़े सिर्फ वा ाक नहीं रह ाते। बल्कि 'बे ैन' कथाकार और व्यथित सूत्रधार महसूस होने लगते हैं।

कहानी में मोहनदास को ौखाने की कमी ा और ीन्स पेंट का क्रमशः ीथड़ों में बदलते ाना हताश मनस्थिति का प्रतीक है। मोहनदास का अपनी पत्नी के साथ नदी किनारे हु तू तू खेलना, ीवन राग और उद्धाम इ छाओं का खूबसूरत ित्र हैं। कहानी में बेशक कंपनी, मैने ामेंट कॉलोनी, पुलिस, ा ा, अदालत का अपना स्वरूप है। लेकिन आं ालिकता का प्रभाव बेशकीमती है। उदय ने लोक तत्व का सफल प्रयोग किया है। उन्होंने कहानी में िास भय और तनाव का वातावरण पैदा किया है, उसे अंत तक बनाए रखा है। यानी, कहानी कहीं से भी स्खलित नहीं होती। अपने समय के हाहाकार करते मं ार की उपस्थिति कहानी का स ा है। एक स ा यह भी है कि मोहनदास कहानी, सिर्फ एक मोहनदास की नहीं, देश में हज़ारों मोहनदासों की कहानी है ो 'इंटरव्यू' देते हैं लेकिन यह ान ाते हैं कि ायन किसी अन्य का होगा।

कहानी में शारीरिक रूप से कम ोर लेकिन मोतबर ा ा ग ानन माधव मुक्तिबोध कहते हें, लेकिन मनुष्य के भीतर एक ीज़ ऐसी है, ो कभी भी, किसी भी गुण में, किसी भी तरह सत्ता द्वारा नहीं मिटाई ा सकती। और वे हैं न्याय की आकांक्षा।

मोहनदास कहानी न्याय की आकांक्षा और उम्मीद की भी कहानी है। मोहनदास को हर्षवर्धन सोनी और हर्षवर्धन सोनी को संवेदनशील ा ा (मुक्तिबोध) यूँ ही नहीं मिल ाते। ऐसे ईमानदार लोग ाब मिलते हैं तो उम्मीद का मद्धम-सा सूर ा दरख्शां होता है। यह कहानी, बिखरने, टूटने और फिर से न्याय की उम्मीद लेकर खड़े होने की कहानी भी है।

रा ाकिशोर

अगर आ ा के भारत को ाानने-सम ाने में आपको थोड़ी भी दिल ास्पी है और आप याादा मेहनत नहीं करना ाहते, तो एक अन ाान मित्र के नाते, मैं आपको सलाह देना ाहता हूँ कि आप उदय प्रकाश की कहानी मोहनदास ारूर प ़ें। यह कहानी ाार साल पहले (2005) हंस नामक पत्रिका में छपी थी। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैंने परसों तक यह कहानी नहीं प ़ी थी। इसका एक कारण हिंदी साहित्य का वर्तमान माहौल भी है।

अर्थव्यवस्था से संरक्षणवाद भले ही खत्म हो रहा हो, पर हिंदी साहित्य और पत्रकारिता में यह तेज़ी से ब ़ रहा है। बहरहाल, किसी भी ामाने में न गुण हिराते हैं न गुणगाहक। यह ारूर होता है कि गुण और गुणगाहक, दोनों वहाँ मिलते हैं ि ासके बारे में शोर म ाा दिया ााता है कि वहाँ कुछ भी नहीं है। सो मोहनदास की धूम म ाी हुई है पर हिंदी की अपनी ामीन पर। इस कहानी का अनुवाद भारत की लगभग सभी भाषाओं में हो ाुका है। अब नेपाली में भी यह कहानी उपलब्ध है। इसका मं ान भी कई शहरों में हो ाुका है। मोहनदास पर फिल्म भी बन ाुकी है। हज़ारों पाठक इस कहानी को प ़कर आँसुओं के सैलाब में बह ाुके हैं। घसौली, सहारनपुर से अनुराग त्यागी ने उदय प्रकाश को लिखा-"कोई बीस-प ाीस बार आपकी कहानी प ़ ाुका हूँ। आपको पत्र लिखने का कारण शायद आपके लिए हास्यास्पद हो, पर मेरे लिए अति गंभीर व महत्वपूर्ण है। महोदय, कहानी प ़ने के पश ाात मन में सत्य-असत्य का द्वंद्व शुरू हो गया है। मु ो लगता है मेरी हालत भी कहीं मोहनदास ौसी तो नहीं हो ाएगी। तेईस साल का ऊ ाायुक्त नौ ावान हूँ। क्या नैतिकता वर्तमान में ठीक नहीं? क्या छल-प्रपं ा का ाीवन शुरू कर दूँ

मोहनदास की कहानी बहुत सीधी है। पर यह तमाम टे ़ी ीज़ों को बेपर्दा करती है। मध्यप्रदेश के एक गॉव में रहनेवाले, गरीबी, अभाव और दुःख से ग्रस्त मोहनदास नाम के एक आदिवासी युवक को एक ‘कोयलिरी ओरियंटल माइंस कंपनी’ में नौकरी मिलती है। पर उसी गाँव का बिसनाथ नाम का एक फुटकर गुंडा उसके नाम से इस नौकरी पर कब ा कर लेता है और ऐश की ि ंदगी ीने लगता है। इस बेईमानी में सफल होने के लिए वह सभी संबंद्ध लोगों की मुट्ठी गंदी करता है।

बाद में ाब असली मोहनदास को इस रहस्य का पता ालता है, तो वह अपना हक पाने के लिए बहुत संघर्ष करता है, पर लुट-पिट कर नष्ट होने के लिए अकेला छोड़ दिया ाता है। ाब एक स्वयंसेवक की मदद से उसका मामला अदालत में ाता है, तो कार्रवाई नए सिरे से शुरू होती है। बीडी पर बीडी फूँकनेवाले और सड़क की कड़क ाय पीनेवाले ा ा (म ि स्ट्रेट) ग ानन माधव मुक्तिबोध की पहल पर अपराधियों को दंडित करने की प्रक्रिया शुरू होती ही है कि मुक्तिबोध का तबादला कर दिया ाता है और वे ब्रेन हेमरे ा से दिल्ली में दम तोड़ देते हैं।

स ा को ूठ और ूठ को स ा बनाने की आ ाकल की मशीनरी के कल-पुर ाों को उदय प्रकाश ने ि ास कारीगरी के साथ खोला है, इसका ाय ाा कहानी को प ़ते हुए ही लिया ाा सकता है। ाो मूलतः बेईमान नहीं हैं, वे भी किस तरह लाल ा में आकर एक-एक कर अपने सारे कपड़े खोल देते हैं, यह भी कहानी में गौरतलब है। इस बात पर भी निगाह पड़ती है कि बदमाशों में गहरी एकता है और अन्याय के सामूहिक शिकार भी एक ुट नहीं हो पाते। किसी-किसी इन्सान में इनसानियत ारूर दिखाई देती है, पर व्यवस्था इतनी छिछोरी और सुसंगठित है कि सिर्फ व्यक्तिगत सदाशायता से कुछ नहीं हो सकता, यह भी साफ दिखता है। सत्ता में बैठा हुआ कोई ामीरवाला आदमी अगर किसी असहाय को न्याय दिलाने का बीड़ा उठाता है तो खुद उसका बेडा गर्क करने के लिए नेपथ्य की सारी डोरियाँ कुलबुलाने लगती हैं। इस सिलसिले में मैं र ाना प्रक्रिया के इस सूत्र का भी ि ाक्र करना ाहता हूँ कि लेखक की पीड़ा किस तरह समा ा की पीड़ा और समा ा की पीड़ा किस तरह लेख की पीड़ा बन ाती है और अंत में दोनों एकमेक हो ाते हैं।

यह कोई छिपा या छिपाया हुआ रहस्य नहीं है कि हिंदी में स्वयं उदय प्रकाश की हैसियत मोहनदास ैसी ही है। हिंट के लिए मैं लेखक को भे े गये निरं ान श्रोत्रिय के पत्र का एक अंश कोट करता हूँ। "इस आ ाद देश के लोगों, क्या हमें यह पता है कि यह वह समय था ब हिंदी के एक सर्वाधिक प्रतिभाशाली कथाकार को एक विश्वविद्यालय की ायन कमेटी ने हिंदी के प्राध्यापक पद के लिए इसलिए अयोग्य ठहरा दिया था क्योंकि उसके पास नकल, सिफारिश, घूस, ापलूसी और तिकड़म से ुगाड़ी गई डॉक्टर आफ फिलासाफी का काग ा नहीं था? लेकिन क्या यह घटना सिर्फ कहानी के मोहनदास और कहानीकार मोहनदास के साथ हुई? मोहनदास के माध्यम से उदय प्रकाश हम सभी को ि ं ोरते हैं। तुम लोग सरकारी दफ्तरों में, शहरों की ऊँ ी-ऊँ ी बिल्डिंगों में और बड़े-बड़े बंगलों-कोठियों में, कोयला खदानों-कारखानों मं और लेनिन नगर, गाँधी नगर, अंबेडकर नगर, शास्त्री नगर ैसी कालोनियों में ाकर पता लगाओ कि कहीं वहाँ तुम्हारे नाम, वल्दियत और पते-ठिकाने का कोई दूसरा फ ीं ालसा ा तो नहीं बैठा हुआ है, ि ासने तुम्हारा हक छीन लिया है।"[34]

शंभु गुप्त

हिंदी कहानी की संर ना-परंपरा में इतिहासबोध शिराओं में रक्त और देह में प्राण की तरह सदैव अनुस्यूत रहा है। प्रेम ंद परंपरा की तो बात ही क्या, इससे इतर कहानियों के मूल में भी कोई इतिहास-दृष्टि या कहें कि वै ारिकता काम करती दिखाई दे ायेगी, ाहे वह प्रसाद-परंपरा की कहानियाँ हों, अज्ञेय-मोहन, राकेश-निर्मल वर्मा, कुणाल सिंह की काहनियाँ हों और यहाँ तक कि अकहानी काल की कहानियाँ हों। ैसे इतिहास-लेखन और सामा ि क अध्ययनों विश्लेषणों में विभिन्न प्रकार की वि ारधाराएँ और आग्रह काम करते हैं। साहित्य की र ना भी इन वि ारधाराओं और आग्रहों से अछूती नहीं होती, किसी न किसी रूप में वे वहाँ होते ही हैं। दरअसल ये वि ारधाराएँ और आग्रह ही हैं ो विभिन्न परंपराओं और प्रवृत्तियों को अस्तित्व में लाते हैं और उनका विकास करते हैं। अतः कहानी में

[34] सहयोग उदय प्रकाश ब्लाग स्पाट 05 डाट काम (इंटरनेट से)

इतिहास-दृष्टि-हीनता की तो कल्पना भी नहीं की ा सकती। सवाल सिर्फ इस बात का है कि कौन-सी वि ारधारा और आग्रह वैज्ञानिक और तर्कसंगत है और समय की ारूरत के हिसाब से प्रासंगिक है। अंततः वे ही कहानियाँ इतिहास बनाती हैं ो इस कसौटी पर खरी उतरती हैं। ऐसी ही कहानियाँ दरअसल पाठक का संवेदनात्मक पुनर्संस्कार करती हैं ो आगे ालकर एक आंदोलन ैसा रूप ले सकने का सामर्थ्य रखता है। उदाहरण के लिए अगर हम यहाँ 'मोहनदास' की ही बात करें तो अंततः यह कहानी ो एक भयाक्रांत सनसनी या सनसनी-भरे भय की स्थापना करती हैं ो कि हालाँकि, मोहनदास ैसे बहुत सीधा, संको ी और स्वाभिमानी, उसकी पहुँ ा के भीतर नहीं आनेवाली सोर्स-सिफारिश, ोड़-तोड़, रिश्वत-संपर्क, ालसा ी वगैरह तमाम अवैध और अनैतिक ीज़ों से बनती, दूसरे को लँगडी मारने की ताकत से रहित इस देश के आम आदमी को मौ ूदा व्यवस्था की सबसे बड़ी देन है।"[35] "उसके शरीर की शिराओं में उस रात खून नहीं, अमावस का गहरा काला अंधकार वह रहा था। और उसके लगभग अवसन्न हो ुके दिमाग में नींद नहीं, वे डरावने सपने मंडरा रहे थे ो किसी भ्रष्ट और पतित हो ुकी व्यवस्था की कोख में ही पैदा हुआ करते हैं।"[36] वह कहानी में यथार्थ-निरूपण के एक लेखक के वृत्ताकार रवैये का ही प्रमाण देती है, ठीक वही वृत्ताकार ो अरसा पहले उनकी 'थर्ड डिग्री' कहानी में दिखा था िसमें अंततः कथानायक 'सुरेश' हार गया था। पूरी तरह परा ित और अशक्त।"[37]

हम दरअसल कह यह नहीं रहे हैं कि यहाँ मोहनदास की यही परिणति क्यों हुई क्योंकि इस "अ ानक किसी बा ा की तरह ापट्टा मार कर अलोपी मैना के घोंसलों को उ ाड़ देती है और बाहर दिखाई देती है ि ड़ियों के नन्हे-नन्हे छौनों के पंख और ूखन के कुछ धब्बे।"[38] बाहर दिखाई देने के लिए छोड़ देने वाली सत्ता और पूं ी से ुड़ी ताकतों वाली हत्यारी व्यवस्था से और उम्मीद भी क्या की ा सकती

---

[35] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.14
[36] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.16
[37] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.85
[38] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.82

है। इसमें उसकी यह परिणति तो होनी ही थी, बल्कि हम यह कह रहे हैं कि उदय प्रकाश यह ो मोहनदास को मोहनदास करम ंद गाँधी बनाने पर तुले हैं और उसके मुँह से सबसे अंत में यह ो कहलवाते हैं-"बस मु े ैन से िंदा रहने दिया ाये। अब हिंसा मत करो। ो भी लूटना हो लूटो। अपने-अपने घर भरो। लेकिन हमें तो अपनी मेहनत पर ीने दो।"[39] उसके मन के सबसे भीतरी कोने ने अ छी तरह से ान लिया था कि उसके ीवन के ठूंठ किसी गांठ से ो नये कोंपल के कल्ले आश ार्य की तरह फूटने वाले थे, आकाश के देवताओं ने उसकी विपदा ानकर, उसके लिए दया की ो बूंदें टपकाई थीं, उन्हें दुर्भाग्यवश और भ्रष्टा ार की लू ने ुलसा डाला है। अब कोई उम्मीद कहीं से नहीं ब ी हे।" मैं यहाँ शुरू से कहानी में लेखक की िस मनोमयता और मनग न्ता की बात कर रहा हूँ, वह दरअसल यही है कि उदय प्रकाश ने यहाँ स ाई में हमेशा की तरह इस बार भी ‘ ो’ थोड़ा-बहुत हेरफेर किया है, वह दरअसल हेरफेर नहीं हेरा-फेरी है ैसा कि उन्होंने खुद कहा है- यह हेरफेर वैसा ही है, ैसे कोई हाथी को छुपाने के लिए उसके विशाल शरीर के ऊपर डे ़ हाथ का अंगोछा बिछा दे। और उसे ोरी से हाँक कर आप सबके सामने खड़ा कर दे।

तय है कि इस क्कर में यह तो होना ही था कि हमेशा उसके अपने ीवन के सारे पुल टूट ाते हैं और उसकी नावें ल ाती हैं। ो हो, हाथी पर पड़े इस अँगोछे को हटा दें तो इसमें कोई दो राय नहीं कि "मोहनदास एक असलियत हैं। इसकी पुष्टि आप ाहें तो हमारे गाँव ही नहीं, इस देश के किसी भी गाँव के किसी भी बाशिंदे से पूछकर कर सकते हैं। इस कहानी की सबसे बड़ी खूबसूरती और उपलब्धि ही यही है कि इसमें उदय प्रकाश हमेशा की ही तरह, कहानी की आड़ में ‘हमें’ अपने समय और समा की एक असली िंदगी का ब्यौरा देते हैं। मोहनदास उनकी अनेकानेक पिछली कहानियों की तरह और खासतौर से ...और अंत में प्रार्थना के डॉ.दिनेश मोहन वाकणकर की तरह वास्तव में एक ीता- ागता असली आदमी है। यह ीता- ागता असली आदमी और इसका संकट अपने आप में ही

[39] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.85-86

इतना शक्ति-संपन्न है कि इसे गाँधी के रूपक की ारूरत नहीं है। महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व, उनके वि ाारों, उनके रा ानैतिक, सामा ाक, आर्थिक अवदानों, उनकी कार्य प्रणाली, क्षमता और शैली इत्यादि की ाो दुर्गति मौ ूदा व्यवस्था में हुई है, वह एक अलग संर ाना का विषय है। मोहनदास ैसे एक भिन्न पृष्ठभूमि वाले यथार्थ में इसका प्रत्यारोपण लेखक के एक प्रतीक कथा, रूपक या कूटाख्यान कहने के आत्म-भ्रम का आधार भले बने, पाठक को यह दिग्भ्रमित ही करता है। ाहाँ तक ग ाानन माधव मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई, शमशेर बहादुर सिंह आदि रूपकों का सवाल है तो वहाँ उदय प्रकाश अत्यन्त सफल और प्रभावशाली सिद्ध होते हैं।

यहाँ उदय प्रकाश की अद्‌भुत कल्पना-शक्ति और सृ ानशीलता का लोहा मानना पड़ता है। ऐसी रूपात्मकता अन्यत्र दिखाई नहीं देती। मुक्तिबोध के बहाने न्यायपालिका से ाो यह अपेक्षा उन्हैं है कि "उनकी आँखो में कुछ ऐसा है ैसे वे किसी ाासूस या खूफिया की आँखें हों ाो धीरे से ुप ाप, किसी की भी आत्मा के भीतर धँसकर, उसका सब कुछ संगाल सकती है।"[40] वह तो है ही परसाई, शमशेर आदि के रूप में उन्होंने ाो यह ि त्र खीं ाा है कि ये सभी अधिकारी अपनी-अपनी कर्तव्य निष्ठा और ईमानदारी के लिए ााने ााते थे।"[41] वह अद्‌भुत है। युवा कथाकार योगेंद्र अहू ाा ने भी अपनी कुछ कहानियों में हिंदी के ऐसे कुछ मूल्यनिष्ठ और कथनी-करनी में आद्यान्त रूप से एक और ईमानदार र ानाकारों की पुनर्र ाना की है। ये कहानियँ एक विस्फोट की तरह हिंदी में आई थीं।[42]

* * *

[40] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.79

[41] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.79

[42] प्रगतिशील वसुधा-80-पृ.56, 57, 58

अध्याय-3

मोहनदास : फिल्म

अध्याय-3

मोहनदास : फिल्म

3.1 मोहनदास : फिल्म

3.2 मोहनदास : फिल्म-विमर्श

अध्याय-3

मोहनदास : फिल्म

3.1 मोहनदास : फिल्म

निर्देशक म ाहर कामरान ने महात्मा गाँधी के निधन और उसके द्वारा होते भारत में विपरीत परिणामों को बहुत नज़दीकी से देखा है। उदय प्रकाश मोहनास कहानी को गाँधी ी से ोड़ते प्रतीत होते हैं और म ाहर कामरान के मनस्तत्व गाँधी निधन से प्रभावित हैं। म ाहर कामरान मोहनदास कहानी पर फिल्म बना कर समा ा के यथार्थ को दर्शकों के सामने लाये हैं। मोहनदास कहानी समा ा का एक वास्तविक यथार्थ है। इस यथार्थ को फिल्म की तकनीकी शक्ति का सहारा लेते हुए निर्देशक इसे और भी रो ाक बना देता है। मध्य प्रदेश में अनुपपूर गाँव एक विशिष्ट ागह है। ाहाँ ओरियंटल कोयल माइंस की स्थापना हुई िासमें प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण मोहनदास का ायन हुआ। लेकिन मोहनदास की ागह बिसनाथ इस सरकारी नौकरी का फायदा ले रहा है।

एक स्वतंत्र देश में मोहनदास ाब अपनी प्रतिभा का फल माँगने ााता है तब उसे ओरियंटल कोयल मइंस कार्यालय से अमानवीय रूप से निकाल दिया ााता है। म ाहर कामरान ाानते थे कि इस कहानी पर फिल्म बनाने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। दिल्ली में एक संपादक मेघना सेनागुप्त ाो ' ानमत' ैनल में कार्यरत है, उसे अनुपपूर से वीडियो टेप प्राप्त होता है। इस वीडियो टेप को अनिल यादव भे ाता है। संवेदनशील और सहृदय मेघना सेनागुप्त मोहनदास के ाीवन यथार्थ को ाानकर बे ैन हो ााती है और निर्णय लेती है कि मैं मोहनदास को न्याय दिलाने की कोशिश करूँगी। वह अनेक कठिनाइयों का सामना करती हुई अनुपपूर पहुँ ाती है और अनिल यादव की सहायता से मोहनदास के ाीवन यथार्थ का परि ाय प्राप्त करती है। कहना न होगा कि मेघना सेन गुप्त एक स ोत और संवेदनशील स्त्री

है ो अपने कर्तव्य के प्रति कटिबद्ध है। वह मीडिया को केवल धन कमाना और प्रसिद्धि पाना ही नहीं बल्कि किसी नागरिक के छीने गये अधिकार को दिलाना ही है। इसी कार्य हेतु वह फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पात्र को फिल्म में अपनाकर म ाहर कामरान कहना ाहते हैं कि मीड़िया में मेघना सेन गुप्त ैसे संपादकों की आवश्यकता है।

मोहनदास फिल्म में म ाहर कामरान मीडिया और व्यवस्था पर मुख्य रूप से प्रकाश डालते हैं। मीडिया के रूप में सोनाली कुलकर्णी ो मेघना सेन गुप्त के नाम से अभिनय करती है और उत्तम हलधर अनिल यादव के नाम से अभिनय करते हैं। वे दोनों समा ा के हित िंतक हैं। लेकिन म ाहर कामरान की अनोखी दृष्टि है। वे समकालीन मीडिया की सफलता और असफलता को दिखाना ाहते हैं। फिल्म में मीडिया मोहनदास के मामले की ाँ ा तो करवा देता है लेकिन मोहनदास को न्याय नहीं दिला पाता। आ ा भी मीडिया की स्थिति ठीक उसी तरह है िस तरह फिल्म में म ाहर कामरान दिखाते हैं।

मोहनदास फिल्म वर्तमान रा ानीतिक व्यवस्था को दर्शाता है। व्यवस्था की उथल-पुथल, र ाानीति में आ ा भी कई मोहनदास ैसे नागरिकों को उ ित न्याय नहीं मिल पा रहा है। फिल्म में गोविंद नामदेव मुक्तिबोध का अभिनय कहा करता है ो न्यायाधीश वह स ोत, संवेदनशील और एक ईमानदार व्यक्तित्व के धनी हैं, वे मोहनदास को न्याय देने का हर संभव प्रयास करता है। लेकिन रा ानीतिक शक्ति वाले बिसनाथ ैसे लोग मुक्तिबोध ैसे न्यायाधीश का भी तबादला करवा देते हैं। यह समकालीन यथार्थ है। आ ा भी कई मुक्तिबोध ैसे न्यायाधीश और हर्षवर्धन ैसे वकील रा ानीति की ापेट में आकर म ाबूर हैं।

नकुल वैद फिल्म में मोहनदास की भूमिका निभाता है और मोहनदास के ीवन यथार्थ को पूरी तरह मीडया और व्यवस्था दर्शकों के सामने लाती है। शर्बानी मुख ी एक सफल अभिनय करती है ो फिल्म में कस्तूरी बाई की भूमिका निभाती है। वह अपने कर्तव्यों को निभाती हुई मोहनदास के ीवन संघर्ष में शामिल होती हैं।

फिल्म में अखिलेंद्र मिश्र कहानी के नगेंद्र नाथ, सुशांत सिंह कहानी के बिसनाथ की भूमिका सफल रूप से निभाते हैं।

इस फिल्म को विवेक प्रियदर्शन ने संगीत दिया है। यह उनकी पहली फिल्म थी ि ासमें वे सफल हो पाये हैं और यशमालवीय ने गायक की भूमिका निभायी है। छायांकन का कार्य स्वयं म ाहर कामरान ने ही की है ाो सफल है।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि म ाहर कामरान एक सफल निर्देशक हैं ाो साहित्य में ि ात्रित यथार्थ को फिल्म द्वारा ानता के सामने लाते हैं।

फिल्म निर्माता आभा सोनाकिया का यह प्रयास महत्वपूर्ण है।

साहित्य और सिनेमा का संबंध बहुत पुराना है प्रेम ान्द ैसे साहित्यकार ने सिनेमा में अपना योगदान दिया है। किन्तु यह संबंध प्रीतिपूर्ण कभी नहीं रहा। इसीलिए साहित्यिक कथाओं पर फिल्में बहुत कम बनती हैं।

आ ा के बा ारवादी समय में साहित्यिक कहानी पर फिल्म का निर्माण करके 'आभा सोनाकिया' ने साहित्य और सिनेमा के संबंध को प्रगा ़ बनाने का कार्य किया है।

फिल्म मोहनदास एक महंगी फिल्म है क्योंकि इसमें स्टारकास्ट है। ऐसे कलाकारों को लेकर फिल्म बनाना वह भी साहित्यिक कहानी पर एक तरह से बा ार को ठेंगा दिखाना है। विशेषता यह कि निर्माता ने अपनी पहली फिल्म में ही यह खतरा उठाया है।

नकुल वैद

नकुल वैद भारतीय टेलीवि ान और हिंदी सिनेमा के ाने माने अभिनेता हैं। इनका ान्म 8 मई को पं ाब के अमृतसर में हुआ है।

इन्होंने दूरदर्शन ैनल में 'तुलसी' ैसे टी.वी. धारावाहिकों में अपना अभिनय दिखाया। इसके साथ 'रिहाई' कार्यक्रम सोनी टीवी पर किया है। 1998 में 'सुकन्या' नाम से एक धारावाहिक में काम किया है।

नकुल वैद ने 'अब तक छप्पन' फिल्म से अपनी फिल्मी कैरियर शुरुआत किया। 'मोहनदास' उनकी एक नयी फिल्म है। इसमें उनकी प्रमुख भूमिका है। नकुल

वैद की फिल्मोग्राफी इस प्रकार है। अब तक छप्पन (2004), लव के साथ तुम्हार (2006), यात्रा (2007), ाक दे इंडिया (2007), मोहनदास (2009)

शर्बानी मुख र्जी

शर्बानी मुख र्जी हिंदी, तमिल और मलयालम फिल्मों में काम करती रही हैं।

शर्बानी मुख र्जी का ान्म 1969 में प्रसिद्ध मुख र्जी परिवार में हुआ था। इनके पिता रोमु मुख र्जी हैं। रानी मुख र्जी, का ोल, तनिशा और रा ाा मुख र्जी इनके भाई-बहन हैं।

इन्होंने हिन्दी, तमिल और मलयालम फिल्मों में काम किया है-

बोर्डर-1997, राकिलि पट्टु-2000(मलयालम), स्नेगिथीया-2000 (तमिल), मिट्टी-2002, अंश दि डेडली फैक्ट-2002, आँछ-2003, गॉड ओन्ली नोस-2004, सारकल दि लै ा-2005, धरती कहे पुकार के-2006, आप ैसा कोई नहीं-2006, सूफी परं ाा कथा(मलयालम), मोहनदास-2009।

सोनाली कुलकर्णी

सोनाली कुलकर्णी का ान्म 3 नवम्बर 1974 ई. में महाराष्ट्र के पुणे ि ाले में हुआ है। इनकी मातृभाषा मराठी है। इन्होंने अभिनव विद्यालय, पूणे में अध्ययन किया और फर्ग्यूसन(Fergussion) कॉले ा में रा ानीतिक विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। कुलकर्णी एक प्रशिक्षित शास्त्रीय नृत्यांगना है। ि ान्होंने बालकयन(Balkayan) संस्था में विकलांग ब ाों को पाँ ा साल तक नृत्य का प्रशिक्षण भी दिया है।

सोनाली कुलकर्णी का विवाह नाटककार निर्देशक ंद्रकांत कुलकर्णी के साथ हुआ। इन्हीं रुि ा लेखन, संगीत और अभिनय में समा ा रूप से है।

सोनाली कुलकर्णी ने एक किताब भी लिखी है इसका नाम है 'सोकूल'।

सोनाली कुलकर्णी ने सत्यदेव दुबे के एक थियेटर कार्यशाला के स्कूल की स्थापना में अपने भाई संदेश के साथ भाग लिया है। वह थियेटर सर्किट में सक्रिय हैं और उसमें वि ाय तेंडुलकर महोत्सव, ाहुल, वसंत का तीसरा यौवन और सर सर सरला पर सखाराम बाईन्डर तरह के नाटकों में अभिनय किया।

सोनाली कुलकर्णी ने डर फैक्टर ैसे रियालिटी शो के साथ टीवी में अभिनय भी किया है। इनके भाई संदेश द्वारा निर्देशित कार्यक्रम 'खतरों के खिलाड़ी' और मराठी में 'कूल तो' ो 'स्टार मा ा' ैनल पर प्रसारित होने वाली टीवी कार्यक्रम में भी काम किया। इसके अलावा ईटीवी, मराठी में 'हल्ला बोल' एक नृत्य का कार्यक्रम में ' ालक दिखला ा' पर टोबी फर्नांडीस के साथ एक भागीदार के रूप में काम किया है।

सोनाली कुलकर्णी लोकसत्ता समा ार पत्र में एक अतिथि संपादक के रूप में भी कार्यरत हैं। इनका लेखकीय स्तंभ हर गुरुवार को प्रकाशित किया ाता है।

सोनाली कुलकर्णी ने तेलुगु, हिन्दी, मराठी, तमिल, गु राति, अंग्रे ी और ईटालियन भाषाओं ैसी अनेक फिल्मों में काम किया है।

ेलुवि 1991-92, गुलाबरि 1994, दरिया 1995, बन्द ोरोकिन 1996, हाँ तुम ले ालो 1996, मिशन कश्मीर 1999, प्यार तुने क्या किया 2000-01, दिल ाहता है 2000-01, ुनून 2000-01, लगी प्रेम लगन 2001-02, मुक्त 2001-02, दानव 2001-02, अग्नि वर्षा 2001-02, दिल विल प्यार प्यार 2001-02, रा ा दिल का गुलाम 2002-03, हनन 2002-03, वैट रैनबो 2003-04, कब तक 2004, दन्स 2004, टाक्सी नं.9211-2005, डरना रूरी है 2005, कारण 2006, वृन्दा 2006, सिर्फ 2006, मोहनदास 2006-07/09, वया डार्ािलिंग, बि बि डि, मुंबई 10, गुलमोहर 2009, The Man, राक शाक(Rock Shock) कैम्प(Camp), प्रतिबिम्ब, ये माधम 1994(तमिल), मुक्ता 1994 (मराठी), धोगि 1994-95, काटा रुटे कौनाला 1996, घराबहर 1999, देवराय 2004, रेस्टारेंट(Restaurant)2006, सखी, वासुदेव बेलवंत फडके, त्या रात्री पास होता 2009, गबरि ा पास, गंधा, एल्लम्मा 1999(तेलुगु), The Italian Film Studio 1995 (अंग्रे ी में इटालियन), डॉ. अम्बेडकर 1997(अंग्रे ी), माया द रियालिटि 2002, Silence please... The dressing Room 2004, Love is blind 2005(गु राती), Fouco Di Su Me(Fire at my Heart) 2004-05 (इटालियन)।

िांदगी िान्दाबाद 1996-(हिंदी), खैरी 1996-(हिंदी), हिट लिस्ट 2006, ौत्रा 1999-मराठी, तांग(द क्वेस्ट)2006-(अंग्रे ाी), ब्रैड अण्ड प्रे ाुडिस 2003-(अंग्रे ाी), आई सी यु कुल ाेक्ट, स्ट्रें ार्स, लव खि ाडी, वेल डन अब्बा।

'मुक्ता' मराठी फिल्म के लिए उत्तम अभिनेत्री और उत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार और नरगिस दत्त राष्ट्रीय पुरस्कार for National Integration 1995 में मिला है।

'धोगि' मराठी फिल्म को उत्तम अभिनेत्री और उत्तम फिल्म के लिए प्रांतीय पुरस्कार, उत्तम अभिनेत्री के लिए 1996 में फिल्मफेर पुरस्कार और वि.शांताराम पुरस्कार और उत्तम सामाािक फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

'दायरा' हिन्दी फिल्म को 1997 में उत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला है।

'मिशन कश्मीर' हिन्दी फिल्म को उत्तम अभिनेत्री के लिए वीडियोकोन, फिल्म फेर, ज़ी सिनी, IIFA पुरस्कार मिला है।

'देवराय' मराठी फिल्म को उत्तम अभिनेत्री के लिए स्क्रीन और प्रांतीय पुरस्कार, उत्तम पर्यावरण फिल्म के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

'Fouco Di Su Me' इटालियन फिल्म को उत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार मिला है।

' ौत्रा' मराठी फिल्म को स्पेशल मेनसन उत्तम अभिनेत्री को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।

समीर धर्माधिकारी

समीर धर्माधिकारी एक लोकप्रिय टी.वी. कलाकार है। इन्होंने कुछ फिल्मों में भी अभिनय किया है। लेकिन इनको छोटे परदे पर अभिनय के लिए ही ााना ााता है।

समीर धर्माधिकारी ने अपनी फिल्म कैरियर की शुरुआत सन् 1999 ई.में मराठी फिल्म 'निर्मला मा ान्द्र काम्बले' से किया। इसके बाद इन्होंने 'प्रकाश ाा' द्वारा निर्देशित हिन्दी फिल्म 'दिल क्या करें(1999)' में भी काम किया। ाो कि यह फिल्म औसत द ाी की रही। साथ-ही-साथ इन्होंने सन् 2000 ई. में अंग्रे ाी फिल्म

'क्विकसेन्ड' में भी छोटी सी भूमिका निभाई। इसके अलावा और भी अनेक फिल्मों में छोटी-छोटी भूमिका निभाई हैं। ाो इस प्रकार हैं-

सत्ता-2003, रेनकोट(बरसात)-2004, अग्निपंक-2004, Nigehbaan: तीसरी-2005, रेस्तारा-2006, प्यार और धोखा-2006, रीयल-2006, रफ्ता-रफ्ता-2006, मधुबाला-2006, खेल-2007, रसिया-2008, मुंबई मेरी ाान-2008, मोहनदास-2009, मधुबाला-2010।

2003 'सत्ता' फिल्म में समीर ने बेहतरीन काम किया है। इस फिल्म में मधुर भंडारकर की रा ानीति है। समीर ने इस फिल्म में विवेक ाौहान पात्र में एक रा ानीतिज्ञ ओर से दिखाया गया है। इनकी शादी रवीना से हुई है। 'ि ामी शेरगिल' के साथ एक असफल फिल्म अग्नि पंक में काम किया है।

समीक्षकों द्वारा प्रशंसित 2004 रेनकोट (बरसात) फिल्म में समीर ने एक छोटी सी भूमिका के रूप में है। इन्होंने Nigehbaan ौसे अन्य असफल फिल्मों में भी काम किया है।

गोविन्द नामदेव

गोविन्द नामदेव कई छोटे या महत्वपूर्ण बॉलीवुड की फिल्मों में सहायक भूमिका के साथ काम किया है। इन्होंने डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर(1991) फिल्म से अपना कैरियर की शुरुआत की।

गोविन्द नामदेव ने अपने अभिनय के माध्यम से हिन्दी सिनेमा में एक अलग पह ाान बनाई हैं। इन्होंने कई छोटे तथा महत्वपूर्ण फिल्मों में काम करते हुए विभिन्न प्रकार के सहायक किरदार निभाए हैं।

गोविन्द नामदेव की बहुत फिल्में इस साल रिली ा होनेवाली हैं। उनमें कुछ अ ाब प्रेम की ग ाब कहानी, बाबर, ामानत, काइट भूमि, नाम, कौसर प्रसाद का भूत, ााने भी दो यारो, और खलबली आदि प्रमुख हैं। साथ-साथ इन्होंने कई फिल्मों में काम किया है। ौसे- डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर-1991, शोला और शबनम-1992, ामत्कार-1992, ऑखें-1993, आ ा मेरी ाान-1993, बैंडिट व ीन-1994, प्रेम-1995, प्रेमग्रांत-1996, ाोर-1997, विरासत-1997, उस्तादों के उस्ताद-1998,

सत्या-1999, त्रिशक्ति-1999, तक्षक-1999, मस्त-1999, Laawaris-1999, क ो धागे-1999, गॉड मदर-1999, रा ू ा ा-2000, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी-2000, फुँकार-2000, डॉ.बाबा साहेब अम्बेडकर-2000, बवंडर-2000, अग्यात-2000, ल ा-2001, सेंसर-2001, प्यासा-2002, कुछ तुम कहो कुछ हम कहें-2002, ुनून-2002, घाव-2002, दिल है तुम्हारा-2002, बधाई हो बधाई-2002, कितने दूर कितने पास-2002, सत्ता-2003, कयामत-2003, बा ार-2003, मैं माधुरी दीक्षित बनना ाहती हूँ-2003, दम-2003, बस्ती-2003, पुलिस फोर्स-2004, गायब-2004, गर्व-2004, अब तुम्हारे हवाले वत्स साथियों-2004, शबनम मौसी-2005, तीसरी आँख-2005, मुंबई गॉडफादर-2005, ेहरा-2005, ाहत एक नशा-2005, सौदा-2005, क ी सड़क-2006, खेल-2007, शकलका बूम-बूम-2007, बिग ब्रदर-2007, ैलें ा-2007, सरकार रा ा-2008, मेमसाहब-2008, गुमनाम मुनि गांधी-2008, दुर्भाग्य गोविन्द-2009, ुगाड़-2009, एक से बुरे एक क्या-2009, मोहनदास-2009, बाबर-2009, अ ाब प्रेम की ग ाब कहानी-2009, बोलो राम-2009, मालिक एक-2010, ामानत-2010, व्हाइट लैंड-2010, नाम-2010, कौसर प्रसाद का भूत-2010, ाने भी दो यारो-2010, खलबली-2010।

आदित्य श्रीवात्सव

आदित्य श्रीवात्सव एक ऐसे अभिनेता हैं ि न्होंने फिल्मों के साथ-साथ अनेक टीवी धारावाहिकों में भी काम किया है। और अपने अभिनय के द्वारा दोनों ही क्षेत्रों में अपनी एक खास पह ान बनाई हैं। फिल्मों में इनके अभिनय को देखने से यह पता ालता है कि वे कितने सुल े हुए कलाकार हैं। इसाथ-साथ इन्होंने कई फिल्मों में काम किया है। ैसे-बैंडिट क्वीन-1994, संशोधन-1996, सत्या-1998, ह ार ौरासी की माँ-1998, दिल से-1998, दिल पे मत ले यार-2000, पाँ ा-2003, मुद्धा-2003, मातृभूमि-2003, एक हसीना थी-2004, लय-2004, दिल से पूछा किधर ाना है-2006, ब्लैक फ्राइडे-2007, गुलाल-2009, मोहनदास 2009, शक-2010 आदि।

सुशांत सिंह

सुशांत सिंह भारतीय सिनेमा के ाने-माने अभिनेता है। अपने अभिनय के माध्यम से बालीवुड में एक अलग पह ान बनाई हैं। इन्होंने फिल्मों में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों तरह की भूमिका निभाई और दोनों में ही इनके अभिनय को सराहा गया। इनकी विशेषता है कि यह किसी भी भूमिका को इस तरह निभाते हैं कि लगता नहीं कि कोई बनावटीपन है और यही कारण है कि वह एक सफल कलाकार हैं। इनके फिल्मोग्राफी के उदाहरण हैं-सत्या-1998, कौन-1999, ोश-2000, ंगल-2000, दिसंबर 16-2002, द लि ैंड आफ भगत सिंह-2002, Samay: ब समय हमलो-2003, दम-2003, डरना मना है-2003, कुछ करने के लिए गड़बड़ है-2004, पैसा वसूल-2004, लय-2004, मातृभूमिः महिला बिना एक राष्ट्र-2004, सेहर(Sehar)-2005, घ-2005, शिखर-2005, परिवारः रक्त के संबंध-2006, लालःकाले पक्ष की ओर-2007, मुखबीर(Mukhbiir)-2008, हुल्ला(Hulla)-2008, मुंबई...काटना-2009, फेंक-2009, मोहनदास-2009, बाबर-2009, लाहौर-2010, बद्धू बक्से-2010, मि ा-2010 आदि।

अखिलेन्द्र मिश्र

अखिलेन्द्र मिश्र एक लोकप्रिय टी वी कलाकार हैं। इन्होंने कई छोटे या महत्वपूर्ण बालीवुड फिल्मों में सहायक भूमिका के साथ काम किया है। लेकिन इनको छोटे परदे पर अभिनय के लिए ही ाना ाता है। साथ-साथ इन्होंने कई फिल्मों में काम किया है। ैसे-अपहरण-2005, एक अ ानबी-2005, शिखर-2005, भूत ऊॅकले-2006, ाने भी दो यारो-2008, मोहनदास-2009।

गीत संगीत

कथा के रो ाक दृश्यात्मक प्रस्तुति के लिए गीत और संगीत का बड़ा महत्व है। वैसे भी बात ाब फिल्म की हो तो यह तो और भी महत्वपूर्ण हो ाता है।

फिल्म मोहनदास में कुल ार गीत हैं िसे क्रमशः कैलाश खेर, कुणाल गं ावाला, अलका याग्निक, शान और सुनिधि ौहान ने गाए हैं। संगीत दिया है विवेक प्रियदर्शन ने। विवेक प्रियदर्शन का एक संगीतकार के रूप में यह पहली फिल्म है। कथा के मूड के अनुसार संगीत देने में उन्हें अशिंक सफलता प्राप्त है तो भी वे भविष्य में अ छे संगीतकार हो सकते हैं क्योंकि संगीत और कहानी के मूड की सम ा है उनके भीतर।

मोहनदास फिल्म का पहला गीत है 'नदी में ई ांदा किसे देखता है'। इस गीत के गीतकार यश मालवीय हैं। वे अपने गीतों में दो हृदयों की ुड़ती आवाज़ को पह ानते हैं। फिल्म का दूसरा गीत मोहनदास के ारित्र पर प्रकाश डालता है। इस गीत की पंक्तियाँ पर्त-दर-पर्त मोहनदास के ीवन को ित्रित करती हैं। यह गीत केवल मोहनदास के ीवन को ही नहीं दर्शाता बल्कि देश के तमाम उन नागरिकों के ीवन पर प्रकाश डालता है ो म ाबूर है। एक पंक्ति है-'कौन है कौन है तू, किसलिए मौन है तू?...' यह पंक्ति उन लोगों से सवाल करती है ो अपने अधिकारों के प्रति आवाज़ नहीं उठाते? फिल्म का आखिरी गीत मोहनदास का शोक गीत है। वास्तविक ीवन ागत और परिस्थिति का मारा मोहनदास के दुःख को व्यक्त करता है। इस गीत में करुण रस व्याप्त है। इस गीत के गीतकार वी.के.सोनाकिया हैं। अतः हम कह सकते हैं कि यश मालवीय और वी.के.सोनाकिया पूर्ण रूप से सफल हैं।

3.2 मोहनदास : फिल्म-विमर्श

अब्रहम हिन्दीवाला

किसी लेखक के ीवन काल में ही उसकी सफल और र्ाित साहित्य कृति पर फिल्म बनाना किसी भी फिल्मकार के लिए एक साथ सुविधा नक और ुनौती पूर्ण दोनों ही हैं। सिनेमाई रूरतों के हिसाब से साहित्य कृति का फिल्मांकन किया ा सकता है। साथ में आवश्यक कतर-ब्योंत के साथ प ीकारी भी मुमकिन हैं। इसके लिए मूल लेखक और निर्देशक का परस्पर विश्वास और सम्मान आवश्यक शर्त है। उदय प्रकाश कृत मोहनदास पर म हर कामरान ने इसी नाम से फिल्म बनायी है।

दिल्ली के दर्शकों को याद होगा कि यह फिल्म दो साल पहले 'एशियन फिल्म फेस्टिवल' में दिखायी गयी थी। कहा ाता है कि फिल्म खत्म होने के बाद दर्शकों ने खड़े होकर ोरदार तालियाँ ब ायी थी। फिल्म फेस्टिवल की औप ारिक तालियाँ निर्देशक को अपनी कोशिश के प्रति गलतफहमी देती हैं। फैस्टिवल के दर्शक सुध होने के साथ बेसुध भी होते हैं। वे फिल्मों को सराहने के लिए कंडीशण्ड होते हैं। थियेटर में एक भी ताली ब ा गयी तो दूसरे दर्शकों की हथेलियाँ भी हरकत में आ ाती हैं। म हर कामरान उसी गलतफहमी में अभी तक ी रहे हैं। मोहनदास की मीनी वास्तविकता यह है कि दो सालों के बाद इसे सिनेमाघर नसीब हो सका। आ ा फिल्मों के बा ार में हर विषय और किस्म की फिल्मों को सिनेमाघर मिल ाते हैं, फिर मोहनदास को क्यों नहीं मिले? क्या बा ार बेवकूफों से भरा है, ो मोहनदास ैसी फिल्म की महानता नहीं सम ा पाया?

मोहनदास फिल्म के ऊपर अगर उदयप्रकाश स्वयं कुछ लिखते या दिल्ली में उनके इंटरव्यू कर कुछ प्रकाशित किया ाता तो किसी कृति को पन्नों से पर्दे पर लाने की प्रक्रिया सम ा में आती। उदयप्रकाश अपनी खुशी, निराशा या असंतुष्टि कुछ भी ाहिर करें तो मोहनदास फिल्म की ग्राह्यता प्रभावित होगी। म हर कामरान ानते हैं कि उदय प्रकाश फिल्म से खुश नहीं हैं, लेकिन हम उदय प्रकाश से ानना ाहते हैं कि उनकी नाखुशी की व ह क्या है? म हर कामरान ने फिल्म की रूरत और

नाटकीयता के लिए नये ारित्र ोडे हैं और कहानी को दिल्ली तक पहुँ ा दिया है। ूंकि फिल्म के लेखक में उदय प्रकाश का भी नाम आता है, इसलिए यह प्रतीत होता है कि म ाहर ने उनकी सहमति से ही मोहनदास की मूल संर ाना में परिवर्तन किये होंगे।

हिन्दी लेखकों की कृतियों पर फिल्म बनाने में लेखकों की व्यक्तिगत पे ीदगियाँ बाधक बनती हैं। हिन्दी का हर लेखक ाहता है कि उसकी कृति पर फिल्म बने, लेकिन वह निर्देशक को रूपांतरण की स्वतंत्रता नहीं देना ाहता। हर लेखक को यह भ्रम है कि वह फिल्म तो लिख ही सकता है। इस भ्रम में कई हिन्दी लेखक मुंबई में एक अवसर की उम्मीद में सालों से संघर्ष कर रहे हैं। फिल्म लेखन शुद्ध क्राफ्ट है, िासमें कई बार साहित्यिक और सृ ानात्मक विलक्षणता दोष बन ाती हैं। उदय प्रकाश लंबे समय से फिल्म लेखक बनना ाहते हैं और अपनी कृतियों के रूपांतरण में ही वे आड़े आ ाते हैं। दूसरे लेखकों के साथ भी कमोबेश यही दिक्कत है।

मोहनदास पर हिन्दी साहित्यिक समा ा विमर्श करें। म ाहर कामरान और उदय प्रकाश के आमने-सामने लाने की कोशिश की ाए और हिन्दी साहित्य पर फिल्म बनाने या न बनाने की मंशा, प्रक्रिया और मुश्किलों को सम ा ाए।[1]

अलैक ोहन शेरमन

ाहाँ हमारी हिन्दी फिल्मों में बेहतरीन विषयों की पटकथा की कमी का रोना रोया ाता हो, वहीं एक हैरत- अंग्रे ा विषय पर फिल्म बनाने का बीड़ा उठाने का काम किया है-म ाहर कामरान, उदय प्रकाश और आभा सोनाकिया की टीम ने हमारे हिन्दी फिल्मों के अब तक के इतिहास में किसी साहित्यिक कृति पर ंद ही फिल्मों बनी हैं। हमारे समय के ार्िति कथाकार उदय प्रकाश की मोहनदास नामक कहानी को फिल्म निर्देशक म ाहर कामरान ने फिल्म की परिपाटी पर उतारने के लिए मूल कहानी में थोड़ा बहुत फेर बदल किया है। मोहनदास फिल्म का संगीत पक्ष बेहतरीन है, यश मालवीय के गीत के बोल बेहद मधुर हैं। फिल्म में खालिस गाँव के दृश्यों को देखकर मन हर्षित हो उठता है।

[1] मोहल्ला लाइव डाट कॉम (इंटरनेट से)

आ ा के समय में ेरों की तादाद में बन रही फिल्मों में दर्शकों को लुभाने के लिए कई तरह की मसाला फिल्मों को पेश किया ा रहा है। गाँधी को भी गाँधीगिरी के मसाले में अ छी तरह लपेटकर परदे पर बे ा ा रहा है। ामाना बेहतर पैकें िंग का है फिर ाहे भीतर का माल रद्दी ही क्यों न हो। मोहनदास में यही कमी रह गयी, अंदर की स्टोरी अ छी थी पर पैकें िंग खराब। बा ारवाद के इस प्रैक्टिकल समय में मोहनदास ैसे गंभीर विषय पर बेहतरीन फिल्म बनी। लेकिन युवा वर्ग को मोहनदास फिल्म अपने तरफ खीं ा नहीं पायी, सबसे पहले तो दर्शकों को सिनेमाघरों की ओर खीं ा लाने के लिए ामकली-भड़कीली स्टार-कास्ट और थिरकते हुए गाने रहना ाहिए। इन दोनों ी ों की मोहनदास फिल्म में बिलकुल भी गुं ाइश नहीं है। नये कलाकार भी फिल्म में कई बार ामत्कार दिखाई देते हैं- ैसे 'सत्या' में मनो ा वा ापयी ने दिखाया है। यह कॉमर्शियल फिल्म होते हुए भी मोहनदास कलात्मक फिल्म की तरह ही मास की नहीं क्लास फिल्म की तरह बन गयी ो सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में वाहवाही बटोरने के लिए रह ाती हैं।

मोहनदास की कहानी भीतर तक हिला देनेवाली कहानी है, अपने ही देश में अपने को ही खो देने की कहानी। एक होनहार युवक की भयावह परिस्थितियों के शिकार होने की कहानी। गाँव के एक बाँस की ी ों का सामान बनानेवाले परिवार के होनहार युवक की कहानी, िसके प्रमाणपत्र के बल पर एक नाकाबिल युवक ऊँ े वर्ग के अधिकारियों की मदद से कई साल 'मोहनदास' के नाम पर नौकरी करता रहा। इस बात की ानकारी मिलने के बाद, काफी कोशिशों के बाद भी मोहनदास को कुछ भी न्याय नहीं मिलता।

मोहनदास कहानी एक ऐसे स ा को रेखांकित करती है ो हमारे तथाकथित उदारवादी समा ा का भी स ा है। लोकतंत्र की बुनियाद िन आधार भूत तत्वों पर रखी गयी थी वे समय के साथ एक-एक करके धाराशायी होते ाले गये और हम लोकतंत्र के मलबे पर बैठकर सिर्फ लोकतंत्र की बात करते बैठ गये। यूँ तो ीवन अपने ोले में कई स ा का भारी सामान ले कर ालता है पर सभी स ा, समय रहते प्रकाश में आ ाये यह ारूरी भी नहीं। ीवन के ऐसे ही एक छुपे हुए स ा को हिन्दी

के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर उदय प्रकाश अपनी कलम से उकेरते हैं और उस पर बन कर तैयार होती है, फिल्म मोहनदास ो काग ा-कलम-दवात से ले कर कैमरा-रील-परदे तक का सफर तय करती है। बिसनाथ ैसे आराम से ीनेवालों के साथ कभी ऐसी दुर्घटना नहीं घटती, ऐसे भयानक स ा का सामना तो बेबस, गरीब, म ालुम ही करते हैं।

आ ा स ा पर फतेह करने के नये-नये तरीके इज़ाद किये ा रहे हैं। ार-ोरु- ामीन पर कब ो के बाद अब साबूत के साबूत इंसान के अस्तित्व पर कब ा किया ा रहा है और हमेशा की तरह सब ानते हैं स ा क्या है? गाँव ानता है, वकील ानते हैं, मीडिया ानती है, संतरी से लेकर मंत्री तक सब ानते हैं मोहनदास का स ा। लेकिन ुप हैं। हम सब ुप हैं क्योंकि हमने अपने आपको मान लिया है कि हम कम ोर हैं और ुप्पी ही हमारी लाठी है।

मोहनदास ऐसी कहानी है ो समा ा के उस स ा को आत्मसात करती है ो किसी दूसरी दुनियाँ की नहीं, हमारी ही दुनिया की, बल्कि हमारे अगल-बगल, हमारे आगे-पीछे की कहानी है। ो एक इनसान के सह ा मानवीय अधिकारों पर कुठाराघात करती है।

मोहनदास फिल्म यह सो ाने पर मज़बूर करती है कि मीडिया की नज़र में हर ी ा सनसनी है, भूख सनसनी है, आँधी, तुफान, बा ़ सनसनी है, बिना सनसनी की खबर बिकती नहीं हैं। लेकिन टीवी के ैनल पर काम करनेवाली मेघना के न ादीक यह मह ा एक खबर नहीं है बल्कि एक हैरत कर देनेवाली दास्तान है, ि ासकी तह में ाने के लिए वह अनूपपुर गाँव ाती है। वहाँ मिलता है एक ुनूनी वकील 'हर्षवर्धन'। वह केस लड़ता है। और ईमानदार ा ा का नाम है 'ग ाानन माधव मुक्तिबोध'। वह काबिल ा ा भी यह कहता है कि स ा को देखना इतना मुश्किल नहीं है, मतलब ाूठ के आगे हम सभी नतमस्तक हैं।

ााहिर है कि अब सफेदपोशों का ामाना है। वे ऊपर से इतने साफ और उ ाले दिखाई देते हैं कि उनके पास के दाग छिप ाते हैं। फिल्म में सबसे दुःखद अंत है ाहाँ नायक पत्रकार मेघना से यह कहकर किवाड़ बंद कर देता है कि यहाँ मोहनदास

नाम का कोई आदमी नहीं रहता, वह खुद अपने आपको अपने आप से अलग कर देता है। बड़े परदे पर शोर शराबे, उछल कूद- बेहद नाटकीयता से भरी भड़कीली फिल्मों के बी ा, मोहनदास समा ा के एक क्रूर, स ा का बेबाकी से सामना करती नज़र आती है। यहाँ सवाल मोहनदास के बाक्स आफिस की सफलता का नहीं है बल्कि एक बेहतरीन कृति के व्यापक विस्तार का है। यहाँ एक उम्मीद ानम लेती है कि अ छी कहानी पर फिल्मों के बनने का सिलसिला बिना रुके लगातार ालता रहेगा।[2]

मिहिर पांडिया

एक ईमानदार पाठक ही नहीं एक ईमानदार दर्शक की हैसियत से भी यह तो कहना होगा कि मोहनदास फिल्म कुछ कमज़ोर है। मेरी राय यह है कि कहानी से ाो साहूलियतें ली गयीं दरअसल वो ही फिल्म को कमज़ोर बनाती हैं। शुरुआत में मीडिया दर्शन के नामपर बहुत सारे स्टीरियोटाइप किरदार ग ़े गये। एक बड़ी राय यह भी थी कि कलाकारों का ायन ठीक नहीं हुआ है। खासकर कबूतर ौसी अपने परिवेश में इतनी र ाी बसी फिल्म देखने के बाद दर्शकों की राय लाज़मी थी। फिर भी एक बार मोहनदास की कहानी शुरू होने के बाद फिल्म अपना तनाव बनाकर रखती है। साफ़ है कि कहानी की अपनी ताकत इतनी है कि ाो फिल्म को अपने पैरों पर खड़ा रखती है। अनिल यादव ौसे किरदार कमाल की कास्टिंग और काम का उदाहरण हैं लेकिन ऐसे उदाहरण फिल्म में कुछ एक ही हैं। मोहनदास के रोल के लिए ही मैं अभी हाथों-हाथ 2-3 यादा अ छे नाम सु ाा सकता हूँ। फिल्म कस्बे के ि त्रण में ाहाँ खरी उतरी है वहीं उसका गाँव कुछ 'बनाया-बनाया' सा लगता है। बोली अभी-अभी सीखी सी लगती है। कस्बे के बी ा से बार-बार गु ारती कोयले की गाडियाँ याद रहती हैं, बार-बार यश मालवीय और वीके सोनकिया की कविताएँ बात को आगे ब ़ाती हैं। मोहनदास के माँ-बाप पुतलीबाई और काबादास सतगुरु कबीर को याद करते हैं। कबीर ाो एक ऐसी भाषा में कविता कहते थे ि ासमें लिखता हुआ हर ईमानदार कवि पागल हो ााता है।

---

[2] बालीवुड हंगामा डाट कॉम (इंटरनेट से)

कहानी की बड़ी बात यह थी कि उसमें आप एक विलन को नहीं पकड़ पाते। अंधेरा है। डर है। पूरी व्यवस्था का पतन है। कहानी के बी ा-बी ा कोष्ठकों में पूरी दुनिया में घट रही घटनाएँ हैं। बुश है, लादेन हैं, गिरते ट्विन टावर हैं।

मु ो बस यह लगता है कि खास कहानी की तरह फिल्म भी कुछ व्यक्तियों को विलन बनाकर पेश करने की ब ाए सिस्टम के ध्वंसावशेष दिख पाती। सुशांत सिंह और उसके पिता के रोल में अखिलेन्द्र मिश्रा अपनी पुरानी फिल्मी इमे ा ़ो रहे हैं। यह फिल्म को कम ोर बनाता है। लेकिन इस सबके बाव ूद मैं फिल्म से इसलिए खुश हूँ कि वो कहानी को काफी कुछ ब ा लेती है।

अंत में, क्या सिनेमा के लिए यह ारूरी है कि तमाम अंधेरों के बाव ूद भी आखिर में वह एक उम्मीद की किरण के साथ खत्म हो? क्या एक कला माध्यम को सकारात्मक होने के लिए आशावादी होना ारूरी है? क्या हर मोहनदास के अंत में एक पत्थर उछाले ाने से ही समा ा बदलेगा? क्या एक बंद दरवा े के साथ हुआ मोहनदास का अंत यादा बड़ी शुरुआत नहीं है? फिल्म ि ान सफदरों, मं ुनाथों और सत्येंन्द्रों को याद करती है। शायद उनका नाम ही था ो तमाम दबावों के बाव ूद फिल्म का अंत नहीं बदला गया। और ब्रेख्त को दोहराती फिल्म से हमें यही उम्मीद करनी ाहिए कि वह सिनेमा के भीतर क्रांति की बात करने के ब ाए उन अंधेरों की बात करें ो हमारे समय को घेर रहे हैं।[3]

म ाहर कामरान से बार-बार यह पूछा गया कि आखिर क्यों उनका मोहनदास अपनी लड़ाई लड़ना छोड़ देता है? आखिर क्यों फिल्म इतने निराशा ानक नोट पर खत्म हो ाती है? क्या उन्हें फिल्म की मांग को सम ाते हुए उदयप्रकाश की कहानी का अंत बदल देने का ख्याल नहीं आया? बहुत से दर्शक ो उदय की कहानी से अन ान थे वो निर्देशक से फिल्म के अंत में एक उम्मीद की किरण ाहते थे। एक उछाला ाता पत्थर शायद 'अंकुर' की तरह या एक रोपा ाता पौधा शायद 'रंग दे बसंती' की तरह। पता नहीं उदय प्रकाश इस सब में कहाँ थे? वो होते तो बहुत से दर्शक उनसे भी यही सवाल करते। और मु ो मालूम है कि उनका ावाब क्या होता...

---

[3] उदय प्रकाश ब्लाग डाट आवारा हूँ (इंटरनेट से)

मैं यही ाहता था कि आप सब मु े इस अंत के लिए कोसें और कहें कि यह अंत गलत है। मोहनदास को एक आखिरी पत्थर उछालना ाहिए। अब भी इस सत्ता तंत्र के पार एक सवेरा है ो उसका इंत ार करता है। आप सब ये कहें और मेरी कहानी शायद तब पूरी हो। एक-एक मोहनदास आप सबको इस हॉल से बाहर निकलने के बाद मिलेगा। आप उसे यही बात कहें कि मेरी कहानी में तो उसने दरवा ा बंध कर लिया लेकिन हो सकता है कि आपकी कहानी में ऐसा न हो। अगर हम एक भी कहानी ऐसी र ा पाये हाँ मोहनदास को उसकी पह ान वापिस मिल ाती है और वो आखिर में दरवा ा बंद नहीं करता तो मेरा कहानी कहना पूरा हुआ। आप इस कहानी पर अविश्वास करें क्योंकि अगर सिनेमा में बंद हुआ दरवा ा असल ि ंदगी में ऐसा एक भी दरवा ा खोल पाये तो मैं उस बंद दरवा े के साथ हूँ।

मयंक शेखर

अपेक्षाकृत एक छोटी ाति ो पारंपरिक रूप से टोकरी बनाने का काम करती थी, इसी ाति से मोहनदास अपने गाँव का मेधावी युवा था। वह लगातार अपनी कक्षा में तथा कॉले । में प्रथम श्रेणी प्राप्त करता रहा।

एक अशिक्षित और कम संसाधनवाले परिवार में न्म लिया। यह लड़का केवल शिक्षा के ही रिए अ छी ि ंदगी को पा सकता था। प्रयास उसके विल एक बेहतर विकल्प है। उसकी आर्थिक स्थिति हेतु एक स्थायी नौकरी, अगर सरकारी हो तो और भी बेहतर, उसके लिए सर्वोत्तम सत्ता है।

मोहनदास का गाँव ो छत्तीसग . में प्रतीत होता है, एक प्रसिद्ध कोयला खदान ो एक सरकारी उपक्रम द्वारा लाया ाता है, ि ासमें मोहनदास नौकरी प्राप्त करता है। अपने सभी मूल शैक्षणिक-प्रमाण पत्र मा करता है और नियुक्ति पत्र का इंत ार करता है। उम्मीद में पार्टी भी करता है। ऐसा लगता है कि उसने कुछ ल्दबा ी में ही उत्सव मना लिया। लगभग ार साल गुज़र गए और तब उसे महसूस हुआ कि एक अन्य व्यक्ति मोहनदास बनकर डिपो मैने र के पद पर काम कर

रहा है। एक छोटी-सी ाँ ा इस धोखेबा ी का पर्दाफाश कर सकती है लेकिन तब नहीं ाब व्यवस्था में शामिल प्रत्येक व्यक्ति अपराध में भागीदार हो।[4]

मोहनदास गंदी व्यवस्था के विरोध में अन ाान/गुमनाम महत्वहीन बनकर रह ााता है। असहाय होकर वह वापस अपने पारिवारिक व्यवसाय में लौट ााता है। पड़ोसी उसकी आरंभिक क्षमता पर हँसते हैं- "किस्मत का खेल, प ़े फारसी, बे ो तेल"।[5]

म ाहर कामरान, कम ही ाानते होंगे, रामगोपाल वर्मा की फिल्म 'सत्य' के एक सिनेमाटोग्राफर थे। वह फिल्म अपनी वस्तु विषय में इतनी सशक्त थी कि एक बेहतरीन कैमरा वर्क अपने आप में ध्यान अइष्ट नहीं कर सका। नहीं हुआ ो होना था। कामरान एक निर्देशक के रूप में यहाँ अपनी सिनेमाटोग्रफी को कमतर रूप में लाते हैं। वह सीधे रूप में प्रस्तुत करते हैं ैसा कि नौ फिल्म के अन्य विभिन्न तत्वों के साथ करते हैं, उल्लेख के तौर पर क्रमशः धीमी गति या अत्यंत ीला बिखरा हुआ संपादन।

केवल सशक्त यथार्थ उपलब्धि का एकमात्र मानदंड नहीं हो ााता है। लेकिन यहाँ, यह है। कुछ फिल्में ही साधारण तरीके से भारत के छोटे शहरों के उनींदपन दृश्यों और ध्वनियों को पकड़ पाती है ैसा कि यह फिल्म पकड़ती है। अभी भी कुछ एक फिल्मों ही भयावह संदर्भों से ीवंत रूप से सहानुभूति रखती हैं।

उदय प्रकाश की एक लघु-कथा पर आधारित फिल्म निर्माण कर्ता सु ााव देता है कि मोहनदास की कहानी पूरी तरह एक काल्पनिक कार्य है। देश में ऐसी परिस्थिति की, ाहाँ ीवित प्रायः अपने को भूमि-भूमिकाओं में मृत पाते हैं और पूं ाी तरीके से मतदान सामान्य है, अभी भी आसानी से कल्पना की ाा सकती हैं।

एक रा य को उसके सबसे पस्त हाल के साथ व्यवहार से ही आँका ााना ााहिए। मध्य या वि ाले भारत के इस मुख्य पात्र के बारे में कुछ ही लोग ि ांता करेंगे तब ाबकि वे बा ाारी अर्थव्यवस्था पर बहुत कम प्रभाव के साथ निमंत्रण रखते हैं।

---

[4] उदय प्रकाश ब्लागस्पाट डाटकाम, हिंदुस्तान टाइम्स अखबार (इंटरनेट से)

[5] फिल्म का वाक्य ो नाव में मोहनदास को अन्य व्यक्ति कहता है।

ैसा कि फिल्म कुछ उपदेशात्मक तरीके से संकेत करती है कि यह मुख्य रूप से अमीरों का शासन हैं।

एक दुर्लभ टेलीवि ान पत्रकार(सोनाली कुलकर्णी) ो अभी भी पत्रकारिता के लिए ोश से भरी है, मोहनदास के प्रसंगों को ुनती है। उसके हाथ में एक कैमरा है ो शायद भारत में महात्मा गांधी की अहिंसा के बाद सबसे सक्षम हथियार है। उसका संपादक इस कहानी के वि ार से पूरी तरह खुश नहीं है। इसके बाव ूद वह आगे ब़ती है। और अपने संपादक से प्रश्न करती है कि फैशन ही आ ा के दिन बड़ा समा ार है? संपादक कहता है कि बहुत यादा लोग िंता नहीं करेंगे। किसी एक गाँव में किसी एक मोहनदास के लिए। मैं डरता हूँ कि कहीं यही इस फिल्म के लिए कभी न स ा हो।[6]

* * *

[6] उदय प्रकाश ब्लगस्पाट डाटकाम, हिंदुस्तान टाइम्स अखबार (इंटरनेट से)

अध्याय-4

मोहनदास कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय- 4

मोहनदास कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन

4.1 पटकथा तुलनात्मक विधि

4.2 कथा फिल्मांकन विधि

अध्याय-4

मोहनदास कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन

संप्रेषण के तीन माध्यम होते हैं-दृश्य, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य। साहित्य भी संप्रेषण का एक शब्दबद्ध माध्यम है। कोई कहानी शब्द के माध्यम से संप्रेषित होती है। कथा एक शब्द माध्यम है ि ासके मर्म को हम शब्द द्वारा सम ा सकते हैं। संप्रेषण का दूसरा सशक्त माध्यम है दृश्य-श्रव्य। फिल्म एक दृश्य-श्रव्यात्मक माध्यम है ि ासमें शब्द की भूमिका पूरक के रूप में है। सिनेमा की प्रारंभिक अवस्था मूक थी। 1916 ई. में मूक सिनेमा के युग से लेकर आ ा तक का हिंदी सिनेमा विभिन्न पड़ाव से गु ारा है। सिनेमा प्रारंभिक अवस्था में तकनीकी सुविधा के अभाव में फिल्मकार 'अवाक' सिनेमा बनाते थे। उन फिल्मों में शब्द की ारूरत नहीं थे। प्रारंभिक समय वह समय था ाब हिंदी सिनेमा में केवल ि ात्र दिखाये ाते थे। उन सिनेमा में धन का अभाव था। सबसे पहले बनी फिल्म पौराणिक आख्यान (रा ाा हरिश ंद्र) को लेकर थी। कालांतर में सिनेमा तेज़ी से प्रगति करने लगा। अपनी शैशव अवस्था में होने के कारण इसमें तकनीकी पक्षों की कम ाोरी स्वाभाविक थी। इस युग में सामाि ाक, ऐतिहासिक और रा ानीतिक फिल्मों का निर्माण भी शुरू हुआ। सन् 1970 में 23 धार्मिक फिल्मों का निर्माण हुआ। यह सभी ालि ात्र दादा साहेब पाल्के द्वारा निर्मित हुए। सत्यवान सावित्री, कृष्ण ान्म, भष्मासुर मोहिनी, लंका दहन आदि पौराणिक फिल्मों का निर्माण हुआ। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य मनोरं ान था।

1931 ई. में आदेशर ईरानी की पहली बोलती फिल्म 'अलम आरा' के आगमन के साथ ही तत्कालीन निर्माता निर्देशक सिनेमा में एक नयी संभावना देखने लगे थे। 1936-46 का युग भारतीय सिनेमा की ठोस प्रगति का युग था। इस युग में भी शांताराम से लेकर वासन, विमलराय ैसे अनेक निर्देशक थे ाो सही यथार्थ को

फिल्म के माध्यम से समा ा के सामने रखा। इस युग की मुख्य फिल्में थीं किसान-कन्या, औरत, पुकार, सिकंदर आदि। फिल्मों के द्वारा सिनेमा की लोकप्रियता में वृद्धि हुयी।

प्रथमेश बरुआ ने शरत बाबू के उपन्यास देवदास पर फिल्म बनाकर सिनेमा ागत में एक क्रांति कर दी। वस्तुतः देवदास ही वह फिल्म थी ि से कहा ा सकता है कि परदे पर रोमानी सिनेमा के अंकुर फूटे। आज़ादी के बाद सिनेमा पर रोमानियत और सामा िक यथार्थ का साथ-साथ प्रभाव पड़ा। अब फिल्म में तकनीकी सुविधाओं का विस्तार हो ुका था। सिनेमा की लोकप्रियता समा ा में ब ़ गयी थी। सिनेमा में अनेक धनियाँ एवं मनमोहन दृश्यों का प्रयोग होने लगा था। इस प्रकार सिनेमा प्रगति करता रहा।

आ ा सिनेमा की लोकप्रियता इतनी ब ़ गयी है कि लोग अपने ीवन का काफी प्रतिशत समय सिनेमा देखने में ख र् करते हैं। प्रारंभिक अवस्था में सिनेमा साहित्य से अछूता रहा। लेकिन कालांतर में वह साहित्य से ुड़ता भी रहा। साहित्य और सिनेमा में विधागत अंतर है। साहित्य र ानाकार के मनस्तत्व और शब्द पर आधारित होता है। लेकिन सिनेमा में उसके अलावा तकनीकी सुविधाएँ अवश्य होती हैं। किसी साहित्य की र ाना पर फिल्म बनाते समय फिल्मकार तकनीकी सुविधा के अनुसार र ाना की कथावस्तु और कई दृश्यों में परिवर्तन कर देता है। फिल्म र ाना की कथावस्तु पर आधारित नहीं होती है बल्कि उस कथावस्तु को पटकथा के रूप में परिवर्तित किया ाता है। इस पटकथा को तकनीकी सुविधा के अनुसार बनाता है। इसलिए साहित्य पर बननेवाली फिल्मों थोड़ा बहुत वि ालन आसानी से आ ाता है। इसी वि ालन को रवींद्रनाथ ठाकुर सिनेमा की विधागत मुक्ति बताते हैं।

यह देखा गया है कि कभी-कभी सिनेमा साहित्यकार की आंतरिक ेतना और भावनाओं, सृ ानात्मक क्षणों को छू नहीं पाता। साहित्यकार ो समा ा को देना ाहता है कभी-कभी सिनेमा वह दे नहीं पाता। यही कारण है कि हिंदी के कई साहित्यकार फिल्म ागत में गये और लौट आये। प्रसिद्ध उपन्यासकार मुंशी प्रेम ंद इसके बड़े उदाहरण हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में उदय प्रकाश की र ाना मोहनदास और म ाहर कामरान के निर्देशन में बनी मोहनदास फिल्म का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह फिल्म उदय प्रकाश की र ाना पर आधारित है। मोहनदास कहानी के आधार पर फिल्म बनाते हुए म ाहर कामरान ने कई ागह तकनीकी के अनुसार परिवर्तन किये हैं और कई ागह बिना परिवर्तन के ैसा का वैसा ही दृश्य रख दिया है।

निर्देशक म ाहर कामरान ने इस फिल्म को बनाते समय कहानी के शीर्षक को ही सिनेमा का शीर्षक बनाया। इस फिल्म को बनाते समय निर्देशक मुख्य परिवर्तन पहले ही दृश्य में कर देते हैं। यह पहला दृश्य कहानी में नहीं है। दूसरे दृश्य में परिवार के संदर्भ में कुछ थोड़ा बहुत परिवर्तन करते हैं। तीसरे दृश्य में परिवर्तन करते हुए कहानी के मुख्य पात्र मोहनदास के सा ू को सिनेमा में दोस्त बताते हैं। इसी तरह दूसरे दृश्यों में निर्देशक परिवर्तन करते हुए ाले ाते हैं।

कहानी का नायक मोहनदास और नायिका कस्तूरी बाई है। निर्देशक भी फिल्म का केंद्रीय पात्र मोहनदास को ही मानते हैं। ि ासकी भूमिका नकूलवैद और शर्बानी मुख ाी निभाते हैं। निर्देशक सिनेमा की संप्रेषणीयता को ध्यान में रखकर कुछ पात्रों को नए रूप में लेते हैं तो कहानी के कुछ पात्रों को छोड़ देते हैं। सिनेमा में एक बड़ी भूमिका मीडिया निभाता है ाो कहानी में नहीं है। इस मीडिया की कार्यकर्ता के रूप में मेघना सेनागुप्त के नाम से सोनाली कुलकर्णी मीड़िया संपादन की मुख्य भूमिका निभाती है। इसके साथ ही और एक नया पात्र निर्देशक सिनेमा में लाते हैं ाो अनिल यादव के नाम से भूमिका निभाता है। अतः फिल्मकार ने कहानी को परदे पर उतारने हेतु दृश्य माध्यम की प्रकृति के अनुसार कहानी और पटकथा में कुछ परिवर्तन भी किये हैं। ि ासे हम कहानी के एक-एक कथ्य को लेकर देखेंगे कि फिल्मकार ने मोहनदास कहानी में कितने परिवर्तन किये हैं। इसलिए तुलनात्मक अध्ययन के लिए हमें पहले कहानी के प्रारंभिक गद्यांश को लेते हुए फिल्म के प्रारंभिक दृश्य पर ा ाा करेंगे।

कहानी का प्रथम गद्यांश

लेखक इस कहानी की शुरुआत आंतरिक मन एवं वि ारों से करता है। वह ीवन की तुलना मछली से करता है। ब समुंदर की मछली बाहर मीन पर फेंक दी ाती है तब उनकी आँखों में एक ऐसा रंग आता है ो मनुष्य या कोई फिल्म एक्टर लाख कोशिशों से भी वह अभिनय नहीं कर पाता। िस प्रकार पानी से मछली निकलकर तड़पती है उसी तरह कहानी का नायक समा ा से निकलकर तड़प तो नहीं रहा लेकिन उनके ेहरे पर पाठकों को वही रंग महसूस होता है ो पानी के बाहर मछली के आँखों में होता है।

कहानी की शुरुआत "डर का रंग कैसा होता है? धूसर, सलेटी, र्द हल्का स्याह या फिर राख ैसा?"[1] इस प्रकार कहानी का नायक मोहनदास अपने ीवन से डरा हुआ है। कहानी में लेखक इसी डर को विश्लेषित करता है। डर के विश्लेषण के पश ात कहानी शुरु होती है। "मोहनदास सामने खड़ा है और अपनी कांपती हुई, कम ोर आवाज़ में कह रहा है काका मु े किसी तरह ब ा लीि ए! मैं आपके हाथ ोड़ता हूँ। ... बाल ब े हैं मेरे! उधर बाप मर रहा है टीबी से! ... आप कहें तो मैं आपके साथ ल कर अदालत में हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ कि मैं मोहनदास नहीं हूँ। मैं इस नाम के किसी आदमी को नहीं ानता! कोई और होगा मोहनदास! बस मु े किसी तरह ब ा लीि ए।"[2] वास्तव में यह अंश मोहनदास के ीवन का अंतिम दृश्य है लेकिन र नाकार अंतिम दृश्य को पहले रखते हुए पाठकों को कहानी में प्रवेश कराता है। तत्पश ात् र नाकार मोहनदास के ीवन के पिछली घटनाओं को विश्लेषित करते हुए लता है। मोहनदास का परि य देते हुए र नाकार कहानी को ब पन से ि त्रित करता है।

इस कार्य के पूर्णतः संपादन के लिए दो तुलनात्मक विधि अपनाई गई है-

---

[1] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.7

[2] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.8

(क) पटकथा तुलनात्मक विधि

इसमें 'कथा से पटकथा की परस्पर तुलना' नामक शीर्षक के अंतर्गत ाहाँ तक संभव हुआ है कहानी के स्वगत कथन व अन्य कथनों को पटकथा के रूप में लिखा गया है, ताकि कहानी व फिल्म की सार्थक तुलना हो सके।

(ख) कथा की फिल्मांकन विधि

'कहानी के इस भाग का फिल्मांकन' शीर्षक से कहानी व फिल्म में समान व भिन्न तत्वों की पड़ताल की गई है। ूँकि फिल्म की पूरी कमांड निर्देशक द्वारा निर्धारित होती है। इसलिए ाहाँ निर्देशक ने अपनी र ानात्मकता का प्रयोग करते हुए कहानी से कुछ छूट ली है, वहाँ यह तुलनात्मक विधि प्रयुक्त की गई है। इसलिए इस विधि से तुलनात्मक अध्ययन अधिक निखर कर सामने आया है।

दृष्टव्य है फिल्म का प्रारंभिक अंश

प्रस्तुत फिल्म में म ाहर कामरान ने प्रांरभिक दृश्य एक अनोखे रूप से प्रस्तुत किया है ाो कहानी में नहीं है। क्योंकि फिल्म को प्रभावकारी बनाने हेतु इस दृश्य को लेना आवश्यक था। इस फिल्म में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कहानी में मीडिया की कोई ा ाा नहीं। वास्तविक मोहनदास के ाीवन का यथार्थ लोकल मीडिया द्वारा ' ानमत' मीड़िया संपादक मेघना सेनागुप्त के पास ााता है। इस कैसेट से प्रभावित होकर मेघना मोहनदास के ाीवन यथार्थ में रुि ा लेती है।

फिल्म शुरू होते ही एक अनोखी ध्वनि के साथ तबला ब ाता है ाो दर्शकों के हृदय को ांकृत कर देता है।

अनिल यादवः- सर... सर.. सर... सर... सर... (परदे पर एक कार्यालय दिखाता है। ि ासकी प्रथम मं ि ाल की बाल्कनी में एक आफिसर ाा रहा था। उसके पीछे-पीछे पत्रकार अनिल यादव ालते हुए ये बाते करता है।)

अनिल यादवः- सर एकदम प्रोफेशनल सेट है...

सर आप एक बार मौका देकर देखिए, बंबईवालों से अ छा शूट करके दूँगा। अभी ाो फरवरी में मेला लगा था उसकी पूरी शूटिंग मैंने की थी, सर।

आफिसरः- (अनिल यादव की ओर देखते हुए) भाई! मैं पर्सनल डिपार्टमेंट का आदमी हूँ। मैं आपकी कुछ हेल्प नहीं कर सकता।

अनिल यादवः- सर आप एक बार सिंह साब से मिलवा दी िए न सर?

आफिसरः- (थोड़े से उत्ते ि ात होकर) मैंने कहा न मैं कुछ नहीं कर सकता, मैं पर्सनल डिपार्टमेंट का आदमी हूँ। आप सम ाते क्यों नहीं, बात को?

अनिल यादवः- सर... सर... सर... सर... (यह सब संवाद ालते हुए होता है। उसी समय नी े मं िल में एक आवाज़ आती है ो कुछ सामान के गिरने से आती है, ठीक उसी समय रिपोर्टर अपना कैमरा सुधारने लगता है और नी े के दृश्य को रिकार्ड करता है।)

मोहनदासः- आप मु े मिलने क्यों नहीं देते हैं? (आफिस का एक हवलदार और एक दूसरा आदमी मोहनदास को पकड़े हुए है और धक्के देते हुए बाहर निकल रहे हैं। रिपोर्टर पहली मं िल से ये सभी दृश्य रिकार्ड कर रहा है। एक तबले की ध्वनि आती रहती है। मोहनदास अपने आपको छुड़वा लेता है। इसके बाद एक दूसरा दृश्य आता है।)

(फिर वही संवाद ऊपर ालता है रिपोर्टर और आफिसर के बी ।)

अनिल यादवः- सर एक बार सिंह शाब से मिलवा दी िए न सर?

आफिसरः- हम आपको मिलवा नहीं सकते। मैं पहले ही कह ुका हूँ। आपको मिलवा नहीं सकते।

(नी े मोहनदास को वे ही दोनों आदमी धक्के देते हुए आफिस के मुख्य द्वार से बाहर निकाल देते हैं। बाहर निकलते समय मोहनदास कहता है।)

मोहनदासः- अरे भाई मेरी गलती क्या है? (बाहर निकाल देने पर)

मोहनदासः- (आवेश में आकर) गाड दो, ि ंदा गाड़ दो। मगर मेरी पह ान नहीं मिटा सकते। मैं ही मोहनदास हूँ, और मैं ही रहूँगा। एक बार नहीं प ास बार कहूँगा कि मैं ही मोहनदास हूँ।

(इस पूर्ण दृश्य में वही तबले की ध्वनि आती रहती है ो दर्शक के हृदय में हल ल म ाती रहती है।)

(परदे पर एक काला रंग गिर ाने ैसा होता है और वह रंग ऐसा आकार ग्रहण करता है कि िसमें सफेद रंग का एक आदमी है फिर वही रंग और आदमी

परदे पर निशि ात होते हुए ‘A’ अक्षर बनता है और बाकी सब अक्षर आधे-आधे आकर पूरे होते हैं और ‘मोहनदास’ शीर्षक पड़ता है।)

इस पूर्ण दृश्य में वह आवाज़ ाो तबले की है बंद नहीं होती है।

यह दृश्य निर्देशक की कल्पना है। इस दृश्य के कुछ तत्व कहानी में भी है ‘ओरियंटल कोयल मइंस’ से मोहनदास को धक्के देकर निकलने की ा ाा कहानीकार कहता है, लेकिन फिल्मकार इसी दृश्य से फिल्म की शुरुआत करते हैं और इस दृश्य को मीड़िया के द्वारा प्रभावकारी बना देते हैं।

दृश्य-दो

स्थान-अनुपपूर

फिल्म में मुख्य रूप से दूसरा दृश्य मेघना सेनागुप्त के अनुपपूर आने का है। (इस दृश्य पर एक रेलगाड़ी दिखाती है ाो दिल्ली से अनुपपूर आती है। उसी में से मेघना ाी दोनों हाथ में दो बैग लेती हुई उतरती है। तत्पश ाात ाीप में बैठकर मेघना, अनिल यादव और उनके सहायक पत्रकार मोहनदास के घर ााते हैं।)

(परदे पर मोहनदास का घर दिखाया ााता है ाो मिट्टी से बना हुआ पुराना है। दरवा ो के सामने ये तीनों लोग खड़े हो ााते हैं और अनिल यादव पुकारने लगता है।)

अनिल यादव :- मोहन भाई! ओ मोहन भाई?

(घर के भीतर से स्त्री की आवाज़ आती है कौन है)

स्त्री (पुतलीबाई):- कौन आया है?

अनिल यादव:- अम्मा बाहर आइये?

(भीतर से मोहनदास की माँ हाथ में लकड़ी लेकर बाहर आती हुई बोलती है)

पुतली बाई:- कौन आया है?

अनिल यादव:- मोहनदास कहाँ है? उसको मिलने के लिए कोई आये हैं?

पुतली बाई:- (आवेश में आकर) इत्ता करम करवाने के बाद अब और क्या ााहिए मोहनदास से? छोड़ दो हमारे बछवा को?

(कहती हुई अंदर ली ाती है।)

तब अनिल यादव ने मेघना के पुतली बाई का परि ाय देते हुए मेघना ी को मौन रूप में भीतर आने का संकेत करते हैं।

अनिल यादवः- अम्मा ये देश की बड़ी पत्रकार है मेघना ी। दिल्ली से आयी है तुम्हारे बेटे से मिलने के खातिर। सम ी? मोहनदास की बात को ऊपर तक ले ायेगी।

पुतलीबाईः- सब ाने थे... सब ाने थे (ऊपर से नी े देखती हुई पुतली बाई बैठ ाती है।)

इस दृश्य में मेघना ी मोहनदास को मिल नहीं पाती। मोहनदास की माँ पुतलीबाई से मोहनदास का परि ाय लेती है। इस समय पुतली बाई मोहनदास के बाल्यकाल पर प्रकाश डालती है। (दृश्य बदलता है।)

पुतलीबाईः- किसी से भी पूछलो ब पन से ही बड़ा नेक बड़ा सीधा रहा मोहना। न काहू से गड़ा न काहू से मेल, ो भी करता वह अ छा ही करता।

<u>दृश्य परिवर्तन</u>

मोहनदास ब पन में स्कूल ाते हुए परदे पर दिखता है। कक्षा में गुरु ी कहते हैं परसों न्माष्टमी आ रही है। दक्षिणा वक्षिणा हाथ ेगा कि नहीं? शहर में तो बहुत गिफ्ट (gift) आते हैं गुरु ी को। न भाई वाल्मीकि ी रामायण लिख रहे हो। (मोहनदास की ओर देखते हुए) तुम्हें कुछ लाना है। अपने बाप काबादास से हमारे लिए बास्केट टोकरी बनवा लेना ठीक है? एक तो ाड़ू भी बाँस की। (मोहनदास सिर हिला देता है)। पीछे मुड़ते हुए गुरु ी 'हमारी साली एक दम ही घिसा गयी है।' (कक्षा में सारे ब े हँसते हैं, मोहनदास भी मुस्कुराता है।)

घर में मोहनदास देर रात तक प ़ते रहता है। तब काबादास का वात्सल्य फूट पड़ता है। तब वह मोहनदास पर ादर लाकर लपट देता है।

इसके बाद दृश्य कक्षा में लता है। सभी विद्यार्थियों की अंक सू ी दिखाते हुए गुरु ी कहते हैं कि कक्षा में सबसे यादा अंक पानेवाले का नाम मोहनदास है।

<u>दृश्य परिवर्तन</u>

कक्षा के बाद दोस्तों की छेड़-छाड़ी होती है। कहाँ से घूँट-घूँट के लाते हो मोहनदास? कौन सिखाता है तुमको अंग्रेज़ी? बाप काबादास, माँ पुतली बाई?

(परदे पर मोहनदास ऐसे ही खड़ा हो ाता है)

<u>दृश्य परिवर्तन</u>

(वि ाय तिवारी और बिसनाथ खड़े होते हैं।)

वि ाय तिवारीः- हे हीरो इधर आ? ाल देख साले की ाल देख?

बिसनाथः- ऐसे ाल रहा है ैसे, ये ही प्रधानमंत्री बनेगा।

(थोड़ी देर बाद)

बिसनाथः- (आक्रोश से कहता है) टॉपर।

(इस सभी दृश्य में ये लोग किसको कह रहे हैं उनको दिखाया नहीं गया।)

इस दृश्य के पश ात गाँव में मोहनदास का बहुत आदर होता है। छोटे-बड़े, आदर्श सभी मोहनदास के भविष्य एवं वर्तमान कामयाबी पर गर्व करते हैं। मोहनदास के माता-पिता भविष्य की कल्पना लोक में आनंद लुटाते हैं। इस प्रकार माँ पुतली बाई ब ापन पर प्रकाश डालते हुए निराश हो ाती हैं और कहती है कि ि ास काम में हाथ डालता पूरा करके रहता। न किसी का बिगाड़ा, न किसी को ऊँ ा-नी ा कहा। इस समय पर मेघना ी पुतली बाई को कहती है कि हमारे लिए तो कोशिश करो कि मोहनदास दरवा ा खोल दे और हम से बात करें। लेकिन मोहनदास का द्वार खुलवाने में माँ पुतलीबाई असफल हो ाती है।

मीडिया वाले असफल होने पर दूसरी राय बनाते हैं कि हम कस्तूरी बाई से ानकारी लेंगे।

<u>दृश्य परिवर्तन</u>

<u>स्थान-गेहूँ का खेत</u>

गेहूँ पकी हुई है उसको काटने हेतु तीन स्त्रियाँ प्रयत्नशील है। दोनों ओर दो स्त्रियाँ बी ा में कस्तूरी बाई गेहूँ का फसल काट रही है। सिर पर आँ ाल और सिंधुर

के साथ-साथ मंगलसूत्र कस्तूरी की सुंदरता को और भी प्रभावशाली बना रहे हैं। उन स्त्रियों के पास अनिल यादव ााता है।

अनिल यादवः- कस्तूरी ाी हम लोग आप से कुछ बात करना ााहते हैं। दरअसल हम घर से आ रहे हैं। इस तरह घर की बात बताता है। इस दृश्य में पेड़ के नी ो कस्तूरी का साक्षात्कार होता है। कस्तूरी अपने बीते हुए अनुभव का मेघना के सामने पर्त दर पर्त खोलती है। मोहनदास और उनकी प्रथम आँख मिलन एक नाँव में होती है। इस दृश्य में फिल्म का पहला गीत आता है।[3]

<u>गीत-1</u>

गीतकार- यश मालवीय

संगीतकार- विवेक प्रियदर्शन

गायक- अलका याग्निक, शान

ाालः- नदी में ई ंदा किसे देखता है।।2।।

किसे देखता है किसे ूँ.ता है

तुम्हारी आदा रात में ााँदनी सी

तुम्हारी हाँसी दिल की है रोशनी सी ।।नदी।।

ारण 1 ः- ओ सागर से सीने में ोहरा छुपाना

तुम्हें माँग में भर के सिंधुर स ााना।।2।।

तुम्हें मॉग में भर के सिंधुर स ााना

नदी में ई ंदा तुम्हें पू ाता है

तुम्हें पू ाता है तुम्हें माँगता है। ।।तुम्हारी।। ।।नदी।।

ारण 2 ः- तुम्हारी ओ बातें तुम्हारा ओ ाादू

तुम्हारी बदन में ये है किसकी खुशबू।।2।।

तुम्हारी बदन में ये है किसकी खुशबू

नदी में ई ंदा तुम्हें सो ाता है

---

[3] सारे दृश्य फिल्म मोहनदास से उद्धृत हैं

तुम्हें सो ाता है तुम्हें पूछता है।।तुम्हारी।।

नदी में ई ांदा बहुत बोलता है

बहुत बोलता है ारा डोलता है।

(इसी गीत में कस्तूरी और मोहनदास का सगाई, विवाह सब हो ाता है।)

इन सभी दृश्य को फिल्मकार अपनी तकनीकी प्रतिभा के अनुसार कुछ दृश्य कहानी से लिया है ैसे कि कस्तूरी विवाह की एक ही पंक्ति पर और मोहनदास का बी.ए. में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना। इन दो ही पंक्तियों के आधार पर फिल्मकार उपर्युक्त दृश्यों को रो ाक ंग से फिल्म में प्रस्तुत करता है।

कहानी का अगला अंश

"गोपाल दास मोहनदास का सा ू है। ो मोहनदास के घर अतिथि के रूप में आता है। गोपालदास ने बताया है कि उसने बिसनाथ को कोयलरी के पास एक होटल में ाय पीते देखा था। उसके गले में ो प्लास्टिक टंगा था, उस पर नाम तो मोहनदास लिखा हुआ, लेकिन फोटो बिसनाथ का था। इतना ही नहीं उसके साथ उस समय ितने भी लोग थे, वे सब उसे मोहनदास ही कह रहे थे।"[4]

"वहाँ वह भी पता ाला कि बिसनाथ ने अपने गाँव बिछिया टोला में रहना ार साल से छोड़ दिया और अब 'ओरियंटल कोयल माइंस' की कर्म ारी कॉलनी लेनिन नगर में बाल ब ों समेत रहने लगा है। ाहाँ उसकी पत्नी ब्या ा पर रुपिया उठाने का धंधा करती है और िटफंड ालाती है। म े की बात यह है कि लेनिननगर में रहनेवाले सभी लोग बिसनाथ को मोहनदास और उसकी पत्नी अमिता भरद्वा ा को कस्तूरी मेडम के नाम से ही ानते हैं। बिसनाथ मोहनदास की तरह बी.ए. तो है नहीं, दसवीं फेल है। इसलिए कॉलरी में काम करने की व ाह से आफिसरों की ापलूसी, कोयले की तस्करी और यूनियन बा ी में लगा रहता है।"[5]

---

[4] मोहनदास, उदय प्रकाश-पृ.31

[5] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.31

कथा से पटकथा का परस्पर तुलना

फिल्म में इस कथा अंश को यों का त्यों लिया गया है लेकिन अंतर इतना किया है कि कहानी में गोपालदास मोहनदास का सा ू है लेकिन फिल्म में निर्देशक ने गोपालदास को दोस्त के रूप में दिखाया है। फिल्मकार कथा के इस दृश्य को पटकथा के अनुरूप संप्रेषण बनाता है। (मोहनदास अपने घर में अपने काम में व्यस्त है। दरवा ो से गोपालदास का प्रवेश होता है।)

मोहनदास काम करने की ागह सामने बैठकर कहता है कि-

गोपालदासः- कल मैंने ओरियंटल कोयल मइंस गया। (मोहनदास काम में ही व्यस्त रहता।)

गोपालदासः- (थोड़ा आक्रोश में ोर से) बंद कर उसको? पहला बात तो सुन? (मोहनदास काम बंद कर देता है)

गोपालदासः- कोयलरी में आपके नाम पर डिपो मैने ार का पोस्ट पर और कोई काम कर रहा है। पूछो न उसका नाम क्या है? (वो ही प्रश्न लगा लेता है।)

गोपालदासः- मोहनदास

मोहनदासः- (आश ार्य से) ऐसे कैसे हो सकता है?

(इसके बाद दृश्य में गोपालदास और मोहनदास दोनों रात में बहुत देर तक घर के बाहर खड़े होकर बाते करते हैं।)

कहानी का अगला अंश

मोहनदास के नाम से ो बिसनाथ आफिसर बन बैठा था, इस बात का पता ालते ही मोहनदास उसके सा ू गोपालदास और घनश्याम तीनों मिलकर 'ओरियंटल कोयल माइंस' के ानरल मैने ार एस.के.सिंह से मिलने ाते हैं। "उन्होंने मोहनदास से कहा कि वह अभी तुरंत हाथ मुँह धोकर तैयार हो ाए, अगली बस से वहाँ ालना। घनश्याम और गोपालदास दोनों उत्साह में थे।"[6] ओरियंटल कोयल माइंस के ानरल मैने ार एस.के.सिंह से मिलने में कोई दिक्कत

[6] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.31

नहीं हुई। गोपालदास की पैंट और ब्लू शर्ट ने मोहनदास के भीतर नया आत्मविश्वास पैदा कर दिया था। उसने ानरल मैने ार को पूरा किस्सा बताया कि "कैसे 18 अगस्त 1997 की तारीख में हुई भर्ती परीक्षा में वह नौकरी के लिए सेलेक्ट हुआ था और पाँ ा उम्मीदवारों की लिस्ट में उसका नाम सबसे ऊपर था। उसी दिन उसने अपने सारे प्रमाण पत्र और काग ाात दफ्तर में ामा कर दिये थे। लेकिन उसके पास कभी नियुक्ति पत्र नहीं आया और अब कैसे बिछिया टोला का बिसनाथ उसके नाम से पिछले पाँ ा साल से यहाँ पर नौकरी कर रहा है और डिपो सुपरवाइ ार बना हुआ दस ह ाार से ऊपर की तनख्वाह ले रहा है। मोहनदास को घनश्याम ने कह रखा था कि वह ाी.एम. को उस दिन की घटना न बताए, ाब वह कोयलरी अपने काग ाात मांगने आया था और भरती दफ्तर के बाबुओं ने उसकी पिटाई करवाई थी और फिर बाद में लेनिन नगर में पुलिस के दरोगा वि ाय तिवारी और बिसनाथ ने उसे धमकाया था। इसलिए मोहनदास इतने पर ही रुक गया। उसकी बात का समर्थन वहाँ बैठे घनश्याम और गोपाल दास ने भी किया।"[7]

"बहरहाल, ाी.एम. ने मोहनदास की पूरी बात सुनने के बाद ओरियंटल कोयल माइंस के वेलफेयर आफिसर ए.के.श्रीवास्तव को इस पूरे मामले की इंक्वायरी का आदेश दिया और कहा कि अगले महीने, ाब वे छुट्टी से लौटे, तब तक उन्हें इंक्वायरी रिपोर्ट मिल ाानी ााहिए। मोहनदास एस.के.सिंह के इस रुख से इतना भावुक हो गया था कि बार-बार उसकी आँखें छलक उठती थीं। वह मन ही मन तसगुरु कबीर और मलइहा माई का नाम ाप रहा था।"[8]

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

पटकथा के अनुसार फिल्मकार इस दृश्य में परिवर्तन करते हैं। मोहनदास के वास्तविक ाीवन का यथार्थ ानरल मैने ार ठाकुर सिंह (एस.के.सिंह) कहानी के पात्र को बनाने हेतु मीड़िया को लाते हैं। कहानी में मोहनदास, गोपालदास और घनश्याम तीनों ाते हैं। लेकिन फिल्म में ' ानमत' की संपादक मेघना सेनगुप्त,

---

[7] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.47-48

[8] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.48

प्रांतीय रिपोर्टर अनिल यादव और उनका सहायक पत्रकार तीनों को लेते हैं। फिल्म में ये तीनों पात्र आधुनिक हैं। इनके पास मीड़िया की शक्ति है। लेकिन कहानी में न मीड़िया शक्ति है न तकनीकी। कहानी में ये तीनों पात्र केवल ाँ ा के लिए आग्रह करते हैं लेकिन फिल्म में मेघना ी नहीं आग्रह करती है और न ही ापलूसी, वह एस.के.ठाकुर को ाँ ा करने हेतु म ाबूर कर देती है। निर्देशक एस.के.सिंह के नाम में भी परिवर्तन कर देते हैं। साथ साथ वर्तमान व्यवस्था को दर्शाते हुए बड़े आफिसरों की छोटे क्लर्क किस प्रकार ापलूसी करते हैं इसको दिखाने हेतु एक पात्र ौभी को लाते हैं ो इस विषय में सफाई देता है। लेकिन मीडिया उस सफाई से भी नहीं हारती। अतः इस दृश्य का संवाद फिल्म में इस प्रकार है।

(‘ओरियंटल कोयलरी मइंस’ के आफिस में मेघना, अनिल यादव और उनके सहायक पत्रकार मोहनदास की ाँ ा के लिए अफिसर एस.के.ठाकुर से संभाषण इस प्रकार होता है।)

ठाकुर सिंहः- (मीडिया वालों को देखते हुए कहते हैं) किसी तरह के वीडियो बनाना ाहिए? **O.C.M.** देश के सबसे बड़ा मैनिंग है। तीन हज़ार करोड़ रुपये का टर्नोवर है हम लोगों का।

मेघना सेनागुप्तः- वेट ए मिनट (हाथ दिखाती हुई)

मैं यहाँ आपसे और कुछ पूछने आयी हूँ।

ठाकुर सिंहः- हाँ! हाँ! पूछिये न?

मेघना सेनागुप्तः- रिगार्डिंग डिपो मैने ार पोस्ट?

ठाकुर सिंहः- क्या पूछना ाहती है?

मेघना सेनागुप्तः- क्या आप ानते हैं कि पिछले ार साल से यहाँ मोहनदास नाम का आमदी पोस्टेड है। ओ असली मोहनदास नहीं बल्कि फ्राड़ है।

ठाकुर सिंहः- मैं कुछ सम ा नहीं? आप क्या कहना ाहती हैं?

मेघना सेनागुप्तः- देखिए मिस्टर ठाकुर ये क्रिमिनल इंपोसेनेशन का केस हो सकता है। आर यू एवेर ऑफ दिस?

ठाकुर सिंहः- (घबराते हुए) नो... नो... हाउ इट इज़ पासिबुल, नो... नो... हाउ इट इज़ पासिबुल... मैडम!

मेघना सेनागुप्तः- दिस ईस डेडिकेट लेस ऑन बिलीव दिस गाँव का हर ब ाा ब ाा ाानता है और ाार छः महीने से नहीं ाार साल से ये ाानसा ाी ाल रही है। आप कह रहे हैं हाउ इट ईज़ पासिबल?

ठाकुर सिंहः- (उसके नी ो आफिसर की ओर देखते हुए) ाौभी ये मेड़म क्या कह रही है? स ााई क्या है?

ाौभीः- क्या सर क्या कह रही है मैडम। मु ो कुछ सम ा में नहीं आया।

ठाकुर सिंहः- यह के दूसरा आदमी मोहनदास के नाम पर नौकरी कर रहा है। यही कह रही है न? (मेघना की ओर देखते हुए ाौभी को कहते हैं)

मेघना सेनगुप्तः- बिल्कुल।

ठाकुर सिंहः- हाँ।

ाौभीः- ओ सर पहले आदमी कहाँ गया? यहाँ ड्यूटी पर क्यों नहीं आ रहा है? क्या कहीं भारत भ्रमण पर निकल गया? कोई डाक्यूमेंट ले आयी है आप प्रामाणिक करने के लिए? (ठाकुर की ओर देखते हुए मेघना ाी को प्रश्न पूछता है।)

ठाकुर सिंहः- देखिए इट्स वेरी सीरियर मैटर आप ाानती हैं आप क्या कह रही हैं? (थोड़ी देर रुककर) ठीक है आप दिल्ली से आयी लेकिन यहाँ के हालत पर?

मेघना सेनगुप्तः- देखिए मिस्टर ठाकुर मोहनदास के मामले में मैं अपना स्टेटमेंट रिकार्ड करना ााहती हूँ। (कहकर पत्रकार की ओर संकेत करती हुई) रोल

ठाकुर सिंहः- (घबराते हुए) हाँ... हाँ... हाँ... हाँ...

मेघना सेनगुप्तः- यस, मिस्टर ठाकुर तो ये आप ये बात रेफ्यूज़ करते हैं कि डिपो मैने ार की पोस्ट पर राइटफुली एपाइंटेड पर मोहनदास की ागह कोई नकली मोहनदास आपकी आरगेनाइ ेशन में एश कर रहा है?

ठाकुर सिंहः- नो... नो... देखिए आय याम थैंकफुल टू मीडिया। यू हैव प्राउड दिस केस टू माय नेटिस आय विल सर्टेन्ली लुक इन्टू इट।

मेघना सेनगुप्तः- एक आदमी लॉ की परवाई की व ाह से दूसरा भूख से मर रहा है? उसकी एक फैमिली है। बू ़ी माँ है,ब ाा है। पिछले 4 साल से अपनी उस ि ांदगी ाीने का हक छीन रखा है। आप साथ-साथ बताइए? आप इस मामले में क्या कदम उठायेंगे?

ठाकुर सिंहः- आय विल इस्टिट्यूटेड एन एन्क्वायरी। हम इसकी डिपार्टमेंटल ााँ ा कराएँ।

मेघना सेनागुप्तः- तो कब होगी यह ााँ ा? कौन करेगा? कब तक इसकी रिपोर्ट सामने आयेगी?

ठाकुर सिंहः- हम बोल रहे हैं तो हमारा विश्वास की ाए मेडम। आप तो हमारा भरोसा ही नहीं कर रहे हैं? हम आ ा ही ााँ ा आर्डर पर सैन किये देते हैं। वित इन वन मंथ वी विल हैव द रिपोर्ट इन हैंड्स। यस, और मैं सेंट्रलाइ ेशन को कहूँगा, टु लुक ऑफ्टर द मैटर पर्सनली OK. मैडम।

मेघना सेनगुप्तः- थैंक यू सर, इट ईज़ रियली नाइस मीटिंग यू।

(यहाँ से यह दृश्य का कथा और पटकथा तुलना होती है।)

प्रस्तुत है कहानी का अगला अंश

र ानाकार इस कहानी को आगे ब ़ाते हुए ााँ ा करवाता है। अगले हफ्ते इंक्वायरी हुई। वेलफेयर आफिसर ए.के.श्रीवास्तव लेनिन नगर के प्लॉट नं.A/11 पहुँ ाा। बिसनाथ को एक-एक बात की ाानकारी पहले से ही थी। "बिसनाथ ने ग ाब की व्यवस्था कर रखी थी। अपने फ्लैट में उसने श्रीवास्तव ाी का ाम कर सत्कार किया। अपनी पत्नी अमिता को उसने लो कट ब्लाउ ा और नी ाी साड़ी में, शर्बत का ट्रे लेकर ड्राइंगरूम में आने का निर्देश दे रखा है। लेनिन नगर मार्केट में हाल में ही खुले शिल्पा ब्यूटी पार्लर में ाा कर अमिता ने अपना फेशियल कराया था। उसने शर्बत की ट्रे मे ा पर रखते हुए मुस्कुराकर ाब श्रीवास्तव ाी से नमस्ते की और कहा-"सरिता दीदी को साथ में नहीं लाये सर?" तो अ ाानक वहाँ वातावरण

आत्मीय, घरेलु और ऐंद्रिक हो गया। इंक्वायरी आफिसर की नज़र बार-बार अमिता की खुली नाभी पर अटक ाती थी। टी.वी. पर इन दिनों दिल्ली-मुंबई में ालनेवाले फैशन शो के कार्यक्रम समा ार ैनलों पर खूब दिखाए ाते थे लेकिन यहाँ तो बिल्कुल िंदा मॉडल ैसी औरत सामने खड़ी थी। यह समा ार नहीं, बल्कि एक स ा थी।

"'ये मेरी वाइफ है सर!' बिसनाथ ने नमकीन की तश्तरी श्रीवास्तव ी की ओर ब ़ाते हुए कहा-'कस्तूरी!'"[9]

"... ओह! तो कस्तूरी आपका राशिवाला नाम क्या है? इंक्वायरी ऑफिसर अब अमिता से ही मुखातिब हो रहे थे। 'अ छा, तो ालताऊ नाम क्या है आपका?' उनकी मुस्कुराहट में आत्मीयता का घनत्व लगातार ब ़ता ा रहा था।"[10] बिसनाथ ने इसे फौरन ताड़ लिया।

"... हद है। अब नाम बताने में क्या शरमाना कस्तूरी। बिसनाथ ने ठहाका लगाया। ालो मैं ही बता देता हूँ। ... सर, इनका ालताऊ नाम है अमिता। ... अमिता भारद्वा ा। घर में सब यही कहते थे।"[11]

"... नगेंद्रनाथ ने एक पल की भी देर नहीं की। 'हमारा नाम है काबादास।' उन्होंने कुरते के गले में से खीं ा कर माला निकाली। ये तुलसी की माला ाब से धारण किये, सबसे तुलसीदास की ौपाइयाँ हमारा ओ ़ना-बिछौना है। 'दास' नाम हम तभी से ोड़ रखे हैं। ... और ये हैं हमारी पत्नी पुतली बाई। मोहना की महतरी। रैनुका देवी ने सिर हिलाकर हामी भरी।"[12] इस तरह इंक्वायरी पूरी हो गयी।

कहानी के इस भाग का मूल्यांकन

इस दृश्य में निर्देशक म ाहर कामरान एक विशिष्ट परिवर्तन करते हैं। अन्स्वायरी आफीसर ए.के.श्रीवास्तव ाँ ा के समय कहानी में और फिल्म में कर्तव्य

---

[9] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.49
[10] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.50
[11] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.51
[12] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.51

के ईमानदारी से नहीं निभाता। इस बेईमानी का कारण कथाकार और पटकथाकार अलग-अलग रूप देते हैं। कथाकार कारण बताते हुए इंक्वायरी आफिसर को अमिता भारद्वा ा की छिछली प्रदर्शन पर मुग्ध होते हुए ि ात्रित करते हैं और पटकथाकार बिसनाथ के पिता की धार्मिक प्रवृत्ति को कारण के रूप में दर्शाते हैं। दूसरा परिवर्तन यह है कि कथा में प्रथम मोहनदास उर्फ बिसनाथ और द्वितीय उनकी पत्नी कस्तूरी बाई उर्फ अमिता भारद्वा ा और तीसरे नंबर पर काबादास के रूप में नगेंद्रनाथ साक्षात्कार हेतु है लेकिन फिल्म में द्वितीय रूप में काबादास उर्फ नगेंद्रनाथ, रेणुका देवी उर्फ पुतली बाई और तृतीय रूप में कस्तूरी बाई आती है। इस दृश्य में इंक्वायरी आफिसर की बेईमानी पर फिल्म में इस प्रकार दिखाया गया है-

श्रीवास्तवः- कौन रहत है इस घर में?

बहदूरः- (बिसनाथ के घर में काम करनेवाला लड़का दरवा ाा निकालते हुए कहता है) ओ शाब रहता इधर।

श्रीवास्तवः- क्या नाम है तुम्हारे शाब का?

बहदूरः- मोहनदास शाब। उधर गेट पर लिखा है न?

श्रीवास्तवः- हाँ! ओ तो हम देख लिया।

बिसनाथः- (घर से बाहर आते हुए) कौन है बहादुर?

बहदूरः- सर ए!

बिसनाथः- कहिए क्या ाािहए आपको?

श्रीवास्तवः- आपका नाम बतायेंगे आप?

बिसनाथः- मोहनदास।

श्रीवास्तवः- अ छा! मोहनदास! आप ही मोहनदास है। इसका कुछ प्रूफ है आपके पास?

बिसनाथः- हम खड़ा है न और क्या ाािहए?

श्रीवास्तवः- यहाँ तो और कोई खड़ा हो ााएगा? (थोड़ी देर रुककर)

हाँ! ड्राइविंग लाइसेंस होगा आपके पास? या फिर रेशन कार्ड, पान कार्ड या मोटर ऐडि कार्ड?

बिसनाथः- मुन्सीपालिटी से आये?

श्रीवास्तवः- ओ... मैं सेल्फ ए.के.श्रीवास्तव वेलफेयर आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी (माई सेल्फ ए.के.श्रीवास्तव वेलफेर ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी O.C.M कलकत्ता।)

बिसनाथः- अरे? तो पहले क्यों नहीं बताया आपने? सब है हमारे पास सब कुछ एकदम आइये?

(घर में बैठने के बाद)

ए है मेरा पास पोर्ट! विदेश मंत्रालय भारत सरकार, दिल्ली से प्रमाणित।

श्रीवास्तवः- हूँ! अ छा अपने पिता का नाम बतायेंगे?

बिसनाथः- ी! हम क्या बतायेंगे। आप उन्हीं से पूछ लीि ए? (कहकर) बाबू ी.. बाबू ी ारा इधर आइये तो?

(तुलसी का पंक्ति प . ते हुए)

ाकी रही भावना ैसी प्रभू मूरती देखी तिनतैसी

तुलसी या संसार में सबसे मिलये धाय

न ाने किस वेश में नारायण ले ाय!!

श्रीवास्तवः- (खड़ा होते हुए) पंडित ी प्रणाम...

नगेंद्रनाथः- प्रणाम ीते रहो बेटा। बैठो? बेटा मोहनदास! कहे पुकार? कन्हे विशेष कार्य?

बिसनाथः- बाबू ी ये कलकत्ता हेड आफिस से आया। ाँ ा करने वेलफेयर आफिसर। कह रहा है किसी ने दावा किया है कि हम मोहनदास नहीं हैं। आप नकली हैं? अम्मा नकली है?

नगेंद्रनाथः- ओ शिव शिव शिव शिव घोर कलियुग आ गया है? न ाने कैसा कलियुग। ारूर कोने ने पालिटिक्स किया होगा।

श्रीवास्तवः- पंडित ी आप क्या करें? हम ठहरे सरकारी आदमी ड्यूटी निभा रहे हैं। यह तो करना ही पड़ता है ना?

नगेंद्रनाथः- अवश्य की िए। कर्तव्य का निर्वाह ही कर्म योग है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कर्मनेवादेकारस्थे माँ फलेशू कदा ानन। कर्म किया ाओ फल की िंता मत करो? मैंने ब ापन से ही अपने पुत्र मोहनदास को यही शिक्षा दी है। हमारे कर्मठोर प्रभावशाली पुत्र मोहनदास।

श्रीवास्तवः- ी... अ छा पंडित ी कृपया आपका नाम बतायेंगे?

नगेंद्रनाथः- काबादास, तुलसीदास के भक्त हैं। सोनी के अस्मरण में नाम रख लिया काबादास। काबा, काशी दोनों उसी एक मात्र परमात्मा का स्थान है। गाँधी ी ने सही कहा है-"ईश्वर अल्ला तेरो नाम सबको सनमती दे भगवान।"

श्रीवास्तवः- वाह! क्या ऊँ ो आदर्श और वि ार आपके? ालिए! आ ा इसी निभाने पंडित की दर्शन भी हो गये।

बिसनाथः- (वहीं बैठकर) अरे कस्तूरी! भाई ाल पान तो लाओ?

नगेंद्रनाथः- इस युग में एक स ा आदर्श पुरुष हुआ है और उन्हीं का स्मरण में हम ने आपका पुत्र का नामकरण किया है मोहनदास करम ंद गाँधी।

श्रीवास्तवः- आ... हा... हा...

नगेंद्रनाथः- उन्हीं के दिखाये गये मार्ग पर हमारा पुत्र मोहनदास ाल रहा है। सत्य और अहिंसा का मार्ग। ब ापन से ही गाँधी ी का नकल उतारने का शौक था। कॉले ा में अपने फैशन शो में लाठी लंगोट लेकर ऐसा नकल किया, गाँधी ी ऐसा नकल किया। वाह! पूरा सभागार तालियों की धड़-धड़ाहट से गूँ ा उठा।

बिसनाथः- बाबू ी तो ऐसा ही (हँसते हुए)

नगेंद्रनाथः- ली ाए पदारगई हमारी धर्मपत्नी, अर्धांगिनी मोहनदास की माता ी पुतली बाई।

(आते हुई ही आफिसर के नमस्कार करती है)

नगेंद्रनाथः- अ छा बेटा आ ा सोमवार है। शंकर ी को ल ा.ना ाना है। मोहनदास इन्हें नास्ता पानी कराओ। (कहकर नगेंद्रनाथ और पुतलीबाई ले ाते हैं)

(अमिता आती हुई ही आफिसर को नमस्कार करके उसी के पास ाकर बैठ ाती है, और कहती है कुछ लीि ाए ना सर)

श्रीवास्तवः- आपको पहले भी कहीं देखा है?

अमिता ः- (हँसती हुई) ओ शूर ारूर देखा होगा वो हैंडीक्रॉफ्ट ालाती हूँ न। वैसे हेड आफिस की सपोर्ट की व ाह से ही हमारा कामका ा ालता है सर।

श्रीवास्तवः- बहुत बि.या बहुत बि.या काम कर रही हैं आप? समा ा को सोशल वर्क की बहुत ारूरत है।

अमिताः- वैसे डोनेशन बडाईयेना सर (इस बात से श्रीवास्तव का ेहरा छिक ाता है तो अमिता टेबल पर रखे हुए ी ों को दिखाते हुए कहती है लीि ाए ना सर! आप ले नहीं रहे हैं कहती है।)

श्रीवास्तवः- आपका नाम क्या है?

अमिताः- अमिता

(एक ग ाब की निगाह से आफिसर उसकी ओर देखता है।)

वैसे मेरा नमा कस्तूरी है अमिता मेरा ब ापन का नाम है। ाब कोई मु े ब ापन के नाम से पुकारे तो मु े ऐसा लगता है कि ैसे मु े पुराना, करीबी इंटिमेंट है सर। ैसे कोई बेस्ट फ्रेंड।

श्रीवास्तवः- अ छा तो फिर हम भी आपको अमिता कहकर बुलायेंगे।

(इस तरह फिल्म में इंक्वायरी होती है।)

प्रस्तुत है कहानी का अगला अंश

एस.के.सिंह ने इंक्वायरी आफिसर ए.के.श्रीवास्तव द्वारा मोहनदास मामले को ाँ ा करवाता है और इंक्वायरी आफिसर की ाँ ा की रिपोर्ट बिसनाथ के पक्ष में देता है। मोहनदास को इस बात का पता ालते ही वह टूट ाता है। वह मानसिक रूप से विकल ाता है। सो ाता है कि-"ि ातना भी लोग नौकरियों में... वे क्या

वास्तव में ओ ही लोग हैं ि ास नाम और पह ाान से ाानोते हैं या वे असल में और कोई है?"[13]

"मोहनदास या बिसनाथ वास्तव में स ा कौन है? एम. ाी.डिग्री कॉले ा से बी.ए. की परीक्षा में ाो डिग्री हासिल की थी वह बिसनाथ के लिए थी? क्या सभी के साथ ऐसा ही होता है?"[14] आदि अनेक सामाा ाक विकृतियों के परिणामस्वरूप मोहनदास मानसिक संतुलन को खो बैठता है। और कई वर्षों के बाद अपने ब ापन के संगी बीरन बैगा के घर ााकर मुए का ठर्रा उतरवाया और सुअर का गोश्त बनवाया। साथ में ाार-पाँ ा लोग थे शाम सात ब ो उन्होंने पीना शुरू कर दिया था और नशे में मौ ा मस्ती करने लगते हैं।"[15] मोहनदास अपने दोस्त के साथ रास रंग के कुछ पल के लिए अपने सारे दुःख भूल गया था। बिहारी ोलक ब ाा रहा था, प्रमोदी मं ाीरा। मोहनदास मस्ती और नशे में गा रहा था।

"पता दइ ाा रे, पता लइ ाा रे... गाडी वाला...
तोर नाम के, तोर न गांव के
पता दइ ाा...
माया रे माया का डगर बताबै माया की आथे खबरिया
काया माया दोऊ ना ा न ााबैं, माया की सगरी नगरिया
पता दइ ाा रे, पता लइ ाा रे गाड़ी वाला...।"[16]

"... बीरन की घरवाली ने ाब खाना परोसा तो रात के दो ब ा ाुके थे। भूख सभी को लगी थी। सरसों का तेल में मसाला-लहसुन-प्या ा डालकर सुअर का मांस बीरन की बहन ने रांधा था। रस की महक पूरे आंगन में फैल रही थी। सब लोग हाथ में रोटियाँ लेकर खाने पर टूट पड़े। हंडिया भर भात भी बना था। लेकिन मोहनदास ाुप ााप था। गाना गाते-गाते उसके भीतर कहीं कोई एक फांस ैसा अ ाानक ग ा

---

[13] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.53
[14] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.54
[15] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.53
[16] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.54

गया था। उसकी टीस बार-बार उसकी छाती के भीतर ागती, िसे दबाने ओर भूलने के लिए वह औरों से बहुत यादा पी गया था।"[17]

इस नशे में मोहनदास खाना नहीं खाते। सब उसे खाना खिलाने हेतु कोशिश कर रहे थे। और कह रहे थे-"पहले खाना क्यों नहीं खा लेता?"

मोहनदास ने आँख ग.ाकर बीरन बैगा से पूछा-

"तैं को आहस? तोर ल नाम का हतै? (तुम कौन हो? तेरा नाम क्या है?)

मोर नाम बीरन है। बीरन बइगा। बीरन को हंसी आ गई।

अउर तोर ल बल्दियत? तोर बाप के नाम का हबै?

मोहनदास ने फिर पूछा।

मोर बाप के नाम डिंडवा बइगा। (मेरे बाप का नाम है डिंडवा बैगा।) बीरन ने हंसते हुए ावाब दिया।

'तोर ल ठर्रा ा.ं गइस।' (तु ो महुए की शराब ा.ं गई है।)

सब हंसने लगे। मोहनदास की आँखें लाल थीं। उसने हाथ का कौर टठिया (कांसे या ास्ते की थाली) में डाल दिया और ोरों से बोलाः

'ए बीरन, एक परमोदी... मैं को आहों। सही सही बता। मोर ल ूतिया न बना। तोंहर ल मलइहा माई ल किरिया।' (ए बीरन,एक परमोदी... मैं कौन हूँ? स ा-स ा बताओ। मु ो बेवकूफ मत बनाओ। तुम सब को मलइहा माई की कसम।)

'तैं हबस मोहनदास। तोर बाप काबा आउर तोर दाई पुतली।' (तू है मोहनदास। तेरा बाप काबा और तेरी माँ पुतली।) बीरन ने अपना ूठा हाथ मोहनदास की छाती पर ग.ाते हुए ोरों से ावाब दिया। सब हँसने लगे।"[18]

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

इस दृश्य में निर्देशक वही प्रतिभा अपनाता है ो अक्सर सभी निर्देशक अपनाते हैं। कहानी का अंश और पटकथा अवश्य रूप में हुआ है। एक तो है कि कथा में मोहनदास निराश और हतप्रभ होकर नशा करता है। और पार्टी बनाता है।

---

[17] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.55

[18] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.56

लेकिन फिल्म में इसका परिवर्तन और भी रो ाक ंग से किया गया है। फिल्म मोहनदास खुशी का इ ाहार करते हुए नशा करता है। दूसरा यह है कि कथा में भो ान का आयो ान है और फिल्म में केवल नशा का। तीसरा परिवर्तन यह है कि परदे पर बारिश होती है। उसी समय वकील हर्षवर्धन और संपादक मेघना सेनागुप्त का आगमन होता है लेकिन कथा में बारिश नहीं होती है और न ही वकील और संपादक आते हैं। ौथा परिवर्तन ऐसा है कि फिल्म में खुशी के मारे कस्तूरी अपने आप को रोक नहीं पाती और वह भी ना ाने लगती है और दृश्य के पीछे गाँव का दारू निकालने का दृश्य दिखाई देता है। लेकिन कहानी में कस्तूरी दिखाई नहीं देती। इस दृश्य का यथातथ्य पटकथा में इस प्रकार दिखाया गया है।

मोहनदासः- आरे बीरन अब बता तेरा नाम क्या है?

बीरन बैगाः- मेरा नाम है बीरन बैगा।

मोहनदासः- तेरा बाप का नाम क्या है?

बीरन बैगाः- मेरे बाप का नाम है डिंडवाबैगा

मोहनदासः- (गोपालदास को बताते हुए) आरे तु बता मेरा नाम क्या है?

गोपालदासः- साले तेरा नाम पुरबनरा से लेकर अनुपपूर तक सम ा सकते हैं बे तेरा नाम मोहनदास फस्ट डिवि ान।

बीरन,गोपालः- (नशे में बिसनाथ को कहते हैं) बिसनाथ 420 अमिता देवी 840।

इसके बाद फिल्म में गाना शुरू होता है।

<u>गीत-2</u>

गीतकारः यश मालवीय

गायकः कुणाल गं ावाला

संगीतकारः विवेक प्रियदर्शन

ालः- बोल तु कौन है बे? तेरी पह ान है क्या?

आ ा हम सबको बता? अब तेरा नाम है क्या?

कौन है कौन है तू? कुछ तो बतला दे हमें?

कैसी उल ान है तेरी? कुछ तो सम ा दे हमें?
कौन है कौन है तू? किसलिए मौन है तू? ।।2।।

ारण 1 :- कोई पह ान नहीं, कोई अरमान नहीं
इस हुकुम मत से लड़ूँ, इतना आसान नहीं
इसलिए मौन हूँ मैं, क्या पता कौन हूँ मैं।।2।।
कौन है कौन है तू? ।।2।।
तु ा को हम सबकी कसम? किसलिए मौन है तू?

ारण 2 :- मैं अपना बाप हू बे, घोड़े की टाप हू बे
एक सिस्टम है यहाँ, मैं इसका पाप हू बे
मैं तो ठाकुर भी नहीं, मैं तो पंडित भी नहीं
तू ो इनसान तो क्या? उसकी कीमत ही नहीं
न तो दिल्ली ही हुआ न ही ालौन हूँ मैं
क्या पता कौन हूँ मैं।।2।।

ारण 3 :- कोई मोहना है यहाँ कोई बीरन भी तो है
कोई सीतिया है मगर एक उल ान भी तो है
हम को मालूम नहीं? कैसे आये हैं यहाँ
कौन है किसके हैं हम? हमको ाना है कहाँ?
हमको मालूम नहीं कौन हैं कौन हैं हम?
बात सदियों के भी अब किसलिए मौन है हम?

ारण 4 :- मैं तो मोहना भी नहीं, बाप काबा भी नहीं
कस्तूरी क्या है मेरी पुतली मेरी माँ भी नहीं
तुम तो गाँधी भी नहीं? कोई अंधी भी नहीं?
तेरा कोई अब ही नहीं, तेरी ाँदी भी नहीं?
नो ाकर उसकी नफा कोई तो लाए सही
दास सम ो न हमें उम्दा सागौन हैं हम
बस अभी मौन हैं हम।।4।।

प्रस्तुत कहानी का अगला अंश

पाठक की रु ि को और आकर्षित करनेवाले अंश हैं मोहनदास और वकील हर्षवर्धन का मिलन। हर्षवर्धन अपनी पार्टी के साथ-साथ स्थानीय अदालत में वकालत का काम करते हुए अपनी आ ीविका का काम ालाता था और मोहनदास हताश होकर अपनी आ ीविका का हेतु टंकण का काम करता था। एक दिन स्टार कंप्यूटर सेंटर में मोहनदास से हर्षवर्धन उसका वास्तविक किस्सा सुनता है। यह किस्सा नहीं बल्कि एक असली ीवन का वास्तविक ब्यौरा था। इस ब्यौरे से प्रभावित होकर और मोहनदास से सहृदय होकर इस किस्से को अदालत की शरण में ले ाने का फैसला करता है।

तुम्हारे पास इस समय कितने रुपये हैं? मोहनदास की बेरंग फटी-ि थड़ी, पैबंद लगी, किसी माने की नीली रही डेनिम पैंट को घूरते हुए हर्षवर्धन ने कहा, "मैं तुम्हारा केस लडूँगा और तुम्हें न्याय दिलाऊँगा।"[19]

"मोहनदास की आँखों में मक आई। उसका दुबला पतला शरीर एक दो बार थरथराया। एक पल तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि कोई इस तरह उसका साथ दे सकता है फिर उसने कहा-"मेरे पास इस समय अस्सी रुपये हैं। दो- ार दिन में ालीस का प्रबंध और कर दूँगा। इमरान से सौ-दो सौ की पेशगी भी मिल ायेगी।"[20]

"... हर्षवर्धन सम ा गया कि मोहनदास को अदालत से न्याय दिलाने के लिए उसे रुपये खुद ही इकट्ठा करने पड़ेंगे। उसने एक ह ार अपने पास से लगाया, दो ह ार कुछ दोस्तों से माँगा और बाकी रुपये लायंस क्लब के ैरिटी फंड से डोनेशन में लिये। यानी संक्षेप में ुगाड़ हो गया।"[21]

"तो होते हुआते, इस तरह, आखिरकार मोहनदास का मामला ग ानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी), ो सिगरेट नहीं बीडी पीते थे और

[19] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.65
[20] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.65
[21] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.65

बहुत दुबले थे, ि ानके गाल की हड्डियाँ नुकीली थीं और उभरी हुई थीं और माथे पर असंख्य आडी-तिरछी रेखाएँ थीं, की अदालत में दाखिल हो।"[22]

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

फिल्म में इस अंश के मूल परिवर्तन हैं हर्षवर्धन का परि ाय मोहनदास से टंकण के समय होता है। इस परि ाय को निर्देशक होटल में ााय पीते हुए दिखाता है। फिल्म और कहानी में समानता यह है कि हर्षवर्धन और मोहनदास का मिलन टंकण के समय में ही होता है।

मोहनदास के प्रतीक न्याय दिलाने की भावना वकील के ह्दय में उत्पन्न होती है ाो फिल्म और कहानी में समान रूप से है। लेकिन न्याय दिलाने के लिए न्यायालय में दावा दाखिल करने की प्रक्रिया में अंतर है। दावा लड़ने हेतु कथा में आर्थिक बा ू पर वि ाार किया ााता है बल्कि पटकथा में कोई वि ाार नहीं होता। और सूक्ष्म परिवर्तन यह है कि टंकण केंद्र का नाम कथा में स्टार कम्प्यूटर सेंटर है और फिल्म में इसको इंटेक्स कंप्यूटर सेंटर के नाम से दिखाया गया है। वकील हर्षवर्धन मोहनदास के दावा को न्यायालय में आखिर पर दाखिल कर देता है। इस अंश में और एक परिवर्तन यह है कि ाब मीडिया की असफलता हर्षवर्धन को प्रतीत होने लगती है तब वे इस मामले में रुि ा लेता है। कहानी में मीडिया वही होता है। इस दृश्य का यथातथ्य इस प्रकार है।

(शकील के शाप इंटेक्स कम्प्यूटर सेंटर में हर्षवर्धन टाइपिंग के लिए आते हैं आते ही)

हर्षवर्धन ः- अरे क्या यार शकील? क्या हुआ टाइपिंग का? हुआ कि नहीं? कितना टाइम होगा यार?

शकीलः- बस हो रहा है हर्ष भाई।

(बाद में मोहनदास को बताते हुए)

अरे मोहन भाई ते ा हाथ ालाओ न (हर्ष की ओर देखते हुए) शताब्दी एक्सप्रेस।

---

[22] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.66

हर्षवर्धनः- (परेशान होते हुए) टाइम हो गया।

शकीलः- (बाहर आवाज़ देते हुए) अरे पुरण तीन ााय भे ाना समोसे के साथ।

(हर्षवर्धन हाथ में कुछ काग ा को देखते हुए)

हर्षवर्धनः- अरे यार पाँ ा-छः अंग्रे ाी का कोई टैपिंग ुगाल हो गया क्या अंग्रे ाी का?

(उधर सिस्टम पर काम करते हुए मोहनदास कहता है)

मोहनदासः" हम कर देंगे अंग्रेज़ी में ाालीस स्पीड निकाल देते।

हर्षवर्धनः- (आश ार्य से) अरे मोहनदास। अरे! हम क्या देख रहे हैं यार? तुम यहाँ? तुम टॉप किये थे न भई फिर ये टाइपिंग?

(इसके बाद दृश्य सामने ााय दुकान में ालती है।)

हर्षवर्धनः- कब दिये थे इंटरव्यू?

मोहनदासः- तीन साल से ऊपर हो गये।

हर्षवर्धनः- तो कोई तुम्हारी ागह काम कर रहा है। मोहनदास बनकर? क्यों होता है यार?

यहाँ तुम बैठकर टैपिंग टिप टिप कर रहे हो? कुछ करो? कुछ करो? कुछ ागड़ा टंटा करो?

(इस तरह फिल्म में हर्षवर्धन और मोहनदास का मिलन होता है।)

प्रस्तुत कहानी का अगला अंश

हर्षवर्धन द्वारा न्यायालय में दावा दाखिल हो ााने के पश ाात नई दंडाधिकारी ग ाानन माधव मुक्तिबोध ने मामले ाँ ा करवाता यहाँ ाँ ा कानूनी रूप से हुई इस ाँ ा में पटवारी को आदेश दिया गया है कि वह मामले की वास्तविकता ाँ ा करे। लेकिन वह दारू और पैसों के कारण सही ाँ ा कर नहीं सकता।

"बाद में पता ाला कि विश्वनाथ ने इस बार दुर्ग और अनुपपूर दोनों िाले के संबंधित पटवारियों को दस-दस ह ाार रुपये की घूस और दारू-मुर्गा दिया था।"[23]

"... उस रात ाब गाँव बिछिया टोला और पुरबनरा के पटवारी कमल किशोर को बिसनाथ और वि ाय तिवारी ने दस ह ाार रुपये की गड्डी थमाई और मैकडॉवल नंबर वन व्हिस्की के साथ बटर िकिन और मटन सींक कबाब खिलाया तो कमल किशोर पटवारी ामीन पर, दोनों के पैर के नी ो, लोटने लगा।"[24]

'अरे आप लोगों का हुकुम कभी टालेंगे भले? इतने एमाउंट में तो हम ससुर.. मूस को हाथी, खेत को सड़क अउर छक्का को छह ब ाों की अम्मां बना दें।'[25]

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

फिल्म में इस अंश को यों का त्यों दिखाया गया है। कहानीकार के ठोस संकेत को दिखाने के लिए निर्देशक को तकनीकी के अनुसार ाो करना वही म ाहर कामरान करते हैं। लेकिन कहानी में पुरबनरा के पटवारी का नाम कमल किशोर है बल्कि फिल्म में कं ोदी लाल शर्मा है।

(पटवारी के आगमन के लिए नगेंद्रनाथ, बिसनाथ और वि ाय तिवारी इंत ाार करते हुए परदे पर दिखाया गया है। बाहर बारिश होती है छतरी को बंद करते हुए पटवारी शर्मा आता है।)

वि ाय तिवारीः- क्या पटवारी साहब आप ीफ गेस्ट हैं, पै ाामा पहनके आ गये?

सब लोगः- हाँ.... हाँ... (हँसते हुए)

पटवारी शर्माः- नेहूता खाने आये हैं तो पैंट कोट पहनके आते।

नगेंद्रनाथः- सही बात।

---

[23] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.69

[24] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.70

[25] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.71

पटवारी शर्मा :- अब ऐसा है क्या अब अगर पैंटवा के ऊपर पैंटवा सटा लिया ाये तो खाना नहीं हो सकता है।

नगेंद्रनाथ :- अरे वाह कं ोदीलाल ी। आप तो असल ब्राह्मण हैं। नाडा खोल खोल के ीला कर के खानेवाले।

सब लोग :- (हँसते हैं)

नगेंद्रनाथ :- निहारे? (निहारे सामान तो लगाव?

(दारू और खाना खाने के बाद नगेंद्रनाथ पटवारी के सामने दास हज़ार रुपये रख देता है।)

पटवारी शर्मा :- ये क्या करते हैं? आप तो हमारे बडकव हैं।

नगेंद्रनाथ :- गिन लिये हो? आ ा पड़ताल के काग । पत्तर के संग इहो काग । बत्ती कर लो?

पटवारी शर्मा :- आरे इतनी रखा काम मैं तो हम राई को पर्वन, मूंस को हाथी, छे ब ों के बाप को छक्का बना सकते।

बिसनाथ :- आरे समालिये काका सरकारी काग । है धाग लग ायेगे तो?

पटवारी शर्मा :- सरकारी काग ाद में कोई धाग बाग नहीं लगता बछवा।

(थोडी देर के बाद)

अब सरकारी कार्रवाई शुरू तो ये लो बिसनाथ बल्द नगेंद्रनाथ निवासी बिछिया टोला बन गये मोहनदास बल्द काबादास निवासी पुरबनरा। ाँ । की दूरुश पाया सारा अरोप निराधार। आप ाहे ि ालाधीकारी का आदेश हो, ाहे राष्ट्रपति का। सब सारी इंक्वायरी तो हमी को करनी है ना? अब हमने लगा दिया टप्पा।

(यह दृश्य यहाँ से हो ाता है।

प्रस्तुत कहानी का अगला अंश

लेनिन नगर के सारे फ्लैट एक ही ैसे बने हुए थे। स्कूल की एक बस ागह- ागह रुकती हुई ब ों को उतार कर आगे ाली ा रही थी।

कैसी विडंबना थी कि मोहनदास को बिसनाथ के फ्लैट का पता पूछने के लिए अपना ही नाम लेना पड़ रहा था।

"मोहनदास का फ्लैट कौन-सा है, भाई साहब?"

"कौन? वो सुपरवाइ ार साहब?"

"हाँ।"

"आगे ाले ाओ सीधे। तीन कट छोडकर ौथी में उल्टे हाथ मुड़ ाओ। तीसरा ही मकान है। ए बटा ग्यारह।"

(घर ाने के बाद)

"साहब नहीं हैं। अभी-अभी निकले हैं। सामने मार्केट में लस्सी पी रहे होंगे।" लड़के ने एक सांस में कहा।

"पीने का पानी मिल ायेगा क्या?"

"तुम यहीं खडे रहो। देता हूँ।"

(पानी पीने के बाद)

"घर में अभी कौन-कौन हैं? मोहनदास ने पूछा।"

"कोई नहीं। बस कस्तूरी मेडम ी हैं। अभी सो रही हैं। तुम पाँ ा ब े के बाद आना।" लड़का खाली बोतल और गिलास लेकर अंदर ाने लगा तो मोहनदास ने कहा-

"तुम्हारा साहब आए तो उससे बोलना, पुरबनरा गाँव से मोहनदास आया था। सां ा को मैं फिर आऊँगा।"

लड़का अंदर ाते- ाते रुक गया। उसने मोहनदास को उल ान भरी नज़र से देखा और बोला-

"क्या बोले? कौन आया था?"

"मोहनदास।" मोहनदास ने ोर से कहा और धीरे-धीरे मई की आग में ालती और पिघलती हुई कोलतार की सड़क पर वापस आ गया।

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

निर्देशक म ाहर कामरान ने इस दृश्य में पहला परिवर्तन पता का नाम बदलता है। एवरशैन कॉलोनी के विकास नगर में सभी घर एक ही तरह दिखाई देते हैं। र ानाकार कहानी में अमिता घर सोती हुई ित्रित करता है और मोहनदास को

घर में काम करने वाला लड़का घर के बाहर ही पानी लाकर देता हैं लेकिन फिल्म में निर्देशक ने अमिता घर से बाहर ाती हुई दृश्य को दिखाया है और लड़का पानी लाने के लिए अंदर गया तो मोहनदास भी घर के अंदर ाकर पूरा घर में ी ों को देखता रहता है। फिल्म में और एक परिवर्तन है घर का पता। कहानी में बिसनाथ का घर का पता A/11 है लेकिन फिल्म में D/36 है।

मोहनदास बिसनाथ की घर के ओर ब ़ते हुए समय मन में ही कहता है कि- "ि तने भी लोग ऊँ े पद पर बैठे हैं, कारों में घूम रहे हैं मौ ा मस्ती कर रहे हैं सब कोई न कोई ाल सा ी किये है। किसी न किसी का हक मारा है क्या सभी डुप्लीकेट हैं। बिसनाथ के घर में मोहनदास और लड़के का संभाषण इस प्रकार लता है।

मोहनदासः- ये मोहनदास का घर है?

बहदूरः- हाँ। लेकिन शाब घर पे नहीं हैं।

मोहनदासः- पानी मिलेगा।

बहदूरः- हाँ।

लड़का पानी लाने के लिए अंदर ला ाता है तो मोहनदास भी उसके पीछे घर में ाकर सभी ीज़ों को देखता रहता है। इतने में लड़का पानी लेकर आता तो लड़का से फिर पूछता है।

मोहनदासः- यहाँ कौन-कौन रहता है?

बहदूरः- शाब रहता है, मेडम रहती है। लेकिन आप क्या करते हैं यहाँ पर? बाहर लो, बाहर लो आप?

मोहनदासः- शाब का। शाब का फोटो है?

बहदूरः- फोटो क्यों आपको? बाहर लो... बाहर लो बाहर लो आप?

मोहनदासः- पानी तो पीने दो?

(पानी पीने के बाद) शाब को बोल दो उनके खबर लेने के लिए मोहनदास आया था।

बहदूरः- (आश ार्य से) क्या? कौन?

मोहनदासः- मैं मोहनदास (कह के ला ाता है)

प्रस्तुत है कहानी का अगला अंश

"मोहनदास ीथड़ों में, लू में ुलसता हुआ, सड़क के किनारे, बि ली के खंभे के पास, लगभग पंद्रह ग ा के फासले पर खड़ा हुआ था।"[26]

"... बिसनाथ गाड़ी पर ा.ं गया। वि ाय तिवारी ने ाबी घुमाकर इं ान स्टार्ट किया और एक ही टके में उसे दौड़ाता हुआ तेज़ रफ्तार से ठीक उसी तरफ आया ि धर मोहनदास खड़ा था। मोहनदास दहशत में आ गया और लड़खड़ाते हुए बि ली के खंभे की ओर हटा। वि ाय तिवारी ने ोरों से ब्रेक मारी और गाड़ी को मोहनदास के ठीक सामने रोक दिया। ब्रेक न लगती तो मोहनदास खंभा समेत उसके पेट में आ ाता। मोहनदास सकते में थे।"[27]

".... खंभे ने ब ा लिया ससुर नहीं तो भाभी लोथ बन गया होता। वि ाय तिवारी ने धीरे से बुदबुदाते हुए कहा।

आरे छोड़ो। माछी मारै अऊर हाथ गंधाय? बिसनाथ ने कहा। वैसे ही तड़का देते हैं। कभी इधर की दिशा में नहीं करेगा बै ों।"[28]

"...सुनो, अब अपना पुराना नाम बिसर ाओ और अब आ ा के बाद से कभी लेनिन नगर की ओर गोड़ ौ ब.ाना, सम ो। आ ा तो हम दारू नहीं लस्सी पी रहे थे, ऊपर से बि ली का खंभा आड़े आ गया, वहीं तो आ ै ांप देते। दुबारा कहीं आसपास देखे तो कॉलरी की भट्ठी में राखड बना देंगे।"[29]

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

निर्देशक म ाहर कामरान ने इस दृश्य का परिवर्तन कर दिया है। ो कॉलरी में मोहनदास बिसनाथ ाकर आने के बाद कहानी में र ानाकार ने मोहनदास को बस स्टैंड में धमकी देते हैं। लेकिन फिल्म में निर्देशक ने कुछ परिवर्तन करते हुए मोहनदास को नहीं उनके परिवार को धमकी देने का दृश्य दिखाया गया है। और इस

---

[26] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.40
[27] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.40
[28] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.41
[29] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.41

दृश्य में और एक परिवर्तन दिखाई देता है कि कहानी में कस्तूरी को पाने के लिए वि ाय तिवारी कोशिश करता है लेकिन फिल्म में इन दोनों का मिलन पहली बार होते हुए दृश्य ि ासमें दिखाया गया है ौसे मोहनदास के घर वि ाय तिवारी गये तो उस समय बिना पह ाान की तरह कस्तूरी से पूछता है कि तुम मोहनदास की लुहाई हो न? कहते हुए कस्तूरी बाई के मुँह में मुँह ले ााता है और कहता है कि कहाँ है वो बहुत ारबी ा ़ गयी है साले को?

(कस्तूरी वहीं खड़ी हो ााती है वि ाय तिवारी घर के थोड़ा अंदर ााकर पुकारता है।)

वि ाय तिवारीः- हे मोहनदास बाहर आओ? कहाँ छुपा है? (कस्तूरी की ओर आते हुए) कहाँ है पर ओ?

कस्तूरीः- घर पे नहीं है।

वि ाय तिवारीः- क्या बोल रही है?

कस्तूरी- काम से नहीं लौटे।

वि ाय तिवारीः- अभी तक नहीं आया काम से? करता क्या है?

कस्तूरीः- ाी! वहीं गये हैं शकील भाई वहाँ ाो काम करते... (बातें खतम नहीं होती हैं)

वि ाय तिवारीः- किसके यहाँ काम करते हैं?

कस्तूरी बाईः- शकील भाई के।

वि ाय तिवारीः- हाँ शकील भाई के यहाँ थे? हाँ। हम तो छूतियाँ हैं न? हमको तो कुछ पता ही नहीं है? साली ाान की अन ाान बन रही है। बहन ाोद कुछ नहीं करता ओ कुछ भी? वहाँ कॉलरी में ााके आफिस में लोगों को परेशान करता है। कालनी में ााकर धमकी देता है। मेरे सामने आके बोले धमकी? साले को अंदर घुस्साड़ दूँगा पूरे पूरा। (आक्रोश से कस्तूरी बाई की ओर आता है और धमकी देता है।)

(बाद में इसी दृश्य में मोहनदास के माता-पिता दिखाई देते हैं तो वि ाय तिवारी उसी ओर हाथ ाोड़ते हुए ााकर कहता है।)

माता ाी अपने लौंडे को सम ााओ दूबारा ओ न ार आ गये न मु ो टुकड़े-टुकड़े करके कठिना में डाल दूँगा उसको। सम ा रही है न मेरे बात?

पुतली बाईः- मेरे बेटे ने कुछ किया है क्या? (संदेह से पूछती है।)

वि ाय तिवारीः- अपने बेटे ने इतना सारा किया। अब क्या बताऊँ। कोई राम कहानी सुनोगी क्या? गोली मार दूँगा उसको याद रखना लैसेंस है मेरे पास।

(कुछ देर के बाद)

सम ााओ... सम ााओ मिलके सम ााओ काले ाी का लंगडा सम ा ाायेगा। उन्हें नहीं सम ो तो हम सम ाायेंगे फिर?

कथा और पटकथा में सूक्ष्म परिवर्तन

कथाकार पटकथा में परिवर्तन सूक्ष्म रूप में भी हुआ है कुछ पात्रों के नाम परिवर्तन किये गये हैं। कुछ दृश्यों के परिवर्तन किया ााय और वास्तविकता में भी फिल्मकार ने परिवर्तन किये हैं। कथा में उदय प्रकाश ने मोहनदास के माता-पिता और पत्नी के साथ-साथ एक पुत्र और पुत्री को ित्रित किया है। इस परिवार में सभी संघर्षशील और स्वावलंबी प्रतीत होते हैं। मोहनदास का पुत्र देवदास ाो आठ साल का है। वह दुर्गा आटो वर्क्स में काम करता है। अपनी प.ाई-लिखाई हेतु स्वयं ख ि उठा लेता है और मोहनदास की शारदा नामक एक छः साल की पुत्री होती है ाो विश्वनाथ के घर में उनके बेटे को संभालने का कार्य करती है। लेकिन फिल्म में मोहनदास का पुत्र देवदास को बहुत ही छोटा दिखाया गया है और पुत्री शारदा को दिखाया नहीं गया।

दूसरा सूक्ष्म परिवर्तन यह है कि कथा में देवदास के पिता टी.बी. से पीड़ित हैं ाो खाट पर खड़ा रहता फिल्म में ऐसा नहीं है। तीसरा परिवर्तन यह है कि कहानी में मोहनदास कठिना नदी के किनारे खेतीबाड़ी में काम करते हुए उधर निर्वाह ित्रित किया गया है। लेकिन फिल्म में मोहनदास अपनी ाातीय कार्य करता है।

ाौथा परिवर्तन यह है कि कस्तूरी के साथ अनेक स्त्रियाँ खेत से लकड़ी लाते समय वि ाय तिवारी कस्तूरी को छेड़ने का प्रयास करता है लेकिन फिल्म में इस अंश को नहीं लिया गया है और ऐसे बहुत से परिवर्तन ाो कथा में हैं पर पटकथा

मे ंनहीं और पटकथा में हैं पर कथा में नहीं। इस परिवर्तन से कहानी के मूल भाव में कोई परिवर्तन नहीं होता। ि ास उद्देश्य को उदय प्रकाश रखना ाहते हैं उसी उद्देश्य को समा ा के सामने रखने में निर्देशक म ाहर कामरान सफल सिद्ध हुए हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि साहित्यिक कृति पर आधारित अनेक सफल फिल्मों में मोहनदास भी एक सफल फिल्म है ाो समा ा को एक नई दृष्टि देती है। साथ-साथ समा ा के यथार्थ को दर्शकों के सामने रखने में सफल होती है।

प्रस्तुत है कहानी का अगला अंश

हर्षवर्धन मोहनदास के मामले में परेशान थे। न्यायालय का फैसला मोहनदास के पक्ष में नहीं आ रहा था और इस मामले में मोहनदास को न्याय मिलने की संभावना कम होती ाा रही थी। अतः कोई दूसरा रास्ता न देखकर हर्षवर्धन ने एक तरह का ाो अकेला वे न्याय दंडाधिकारी मुक्तिबोध से मिलने का ाोखिम उठाया और मुक्तिबोध के घर पर मोहनदास की वास्तविक ाीवन के बारे में बताने की कोशिश की। मुक्तिबोध विलक्षण बुद्धिशाली न्यायाधीश थे। उन्होंने वकील हर्षवर्धन को एक अनोखी प्रतिभा का परि ाय दिया और उनके स्वागत के साथ-साथ मोहनदास के मामले में स्पेशल पॉवर अपनाने का वादा किया। इंतमाम मुक्तिबोध की बातों का मंत्रबिद्ध था। वह मुक्तिबोध के ारित्र से प्रभावित हो रहा था। उसे मुक्तिबोध का ारित्र एक दुर्लभ फांटसी लग रहा था। तत पश ाात मुक्तिबोध अनेक धारा लगाकर बिसनाथ और नगेंद्रनाथ को गिरफ्तार कर लेता है।

"हर्षवर्धन को आश ार्य हुआ ाब अपने फ्लैट में उसे देखकर ग ाानन माधव मुक्तिबोध के ेहरे पर ऐसे भाव आए ैसे वे पहले से ही उनके आने के बारे में ाानते रहे हों। ैसे उन्हें पहले से ही पता हो कि हर्षवर्धन उनके पास आएगा ही आएगा। उन्होंने उसके लिए लकड़ी की एक पुरानी-सी कुर्सी डाल दी और कहा बैठो। मैं ााय बनाता हूँ। कहकर भीतर की ओर ाले गए।"[30]

---

[30] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.75

ाी.एम. मुक्तिबोध ााय लेकर आ गए थे। साथ में एक तश्तरी में थोड़े से बेसन के सेब थे। ााय तिपाई पर रखकर मुक्तिबोध तख्त पर बैठ गए। ााय बहुत कड़क और सड़क छाप थी। खुद औंटाई और उबली हुई।

'मैं ाानता हूँ कि (एक बहुत लंबी, कहीं दूर तक ााकर लौटती हुई सांस) मोहनदास ही... वास्तविक मोहनदास है।' न्यायिक दंडाधिकारी की आवाज़ ौसे किसी गहरे कुएँ या बावडी में से आ रही थी। बहुत थीमी, मुद्धिम आवाज़ उन्होंने ााय की एक लंबी ाुस्की भरी। उस घूँट और उसके स्वाद ने ौसे उनके माथे के तनाव को थोड़ा-सा शिथिल किया।"[31]

"... और वह दूसरा आदमी फ्रॉड है। वह सरासर 'इंपर्सोनेट' कर रहा है। मु ो पता है, वह बिसनाथ बल्द नगेंद्रनाथ, ाूनियर डिपो आफिसर ही है, ाो एक बटा ग्यारह, लेनिन नगर में अवैध ंग से मोहनदास की 'आइडेंटिटी' ाुरा कर रह रहा है। ही इज़ अ ाीट, अ क्रिमिनल। आ स्काउंड्रल! उनकी आवाज़ बहुत धीमी लेकिन किसी धातु ौसी धारदार और दृ. थी। उन्होंने अपनी ोब से बीडी का बंडल निकाला और उसमें से एक बीड़ी निकाल कर पहले उसमें उल्टी फूँक मारी, फिर तीली से उसे सुलगा कर एक गहरा कश लिया।"[32]

"ग ाानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी ने धीरे से, हर्षवर्धन के कान के पास फुसफुसाते हुए कहा-मेरे पास एक पॉवर है। सिर्फ एक पॉवर। दैट इ ा.. सीक्रट ाुडीशियल इंक्वायरी। मैं खुद यह ााँ ा करूँगा। गोपनीय न्यायिक ाां ा। ास्ट लीव इट टु मी।"[33]

ाार दिन बाद ही विश्वनाथ और उसके पिता नगेंद्रनाथ को ाी.एम. मुक्तिबोध न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी) के आदेश पर ाालसा ाी, धोखाधड़ी, फरेब, ाोरी और गबन के ाुर्म में इंडियन पीनल कोड़ की धारा 419/420/468/467 और 403 के तहत गिरफ्तार कर ोल भे ा दिया गया।

---

[31] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.75
[32] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.76
[33] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.77

अदालत ने ओरियंटल कोयल माइंस के ानरल मैने ार एस.के.सिंह को आदेश किया कि वे मोहनदास विश्वकर्मा उर्फ विश्वनाथ, ूनियर डिपो आफिसर के विरुद्ध तत्काल कार्रवाई करे और कार्रवाई की सू ाना दो सप्ताह के भीतर अदालत को पेश करे। इसे अलावा इस पूरे प्रकरण में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सम्मिलित और लिप्त अधिकारियों और कर्म ाारियों के विरुद्ध उपर्युक्त विभागीय ाँ ा और कार्रवाई प्रारंभ करें। अगर ओरियंटल कोयल माइंस इन सब लोगों के विरुद्ध न्यायिक अपराधिक प्रक्रिया के अंतर्गत अपराध कायम करना ाहती है, तो यह न्यायालय इसकी अनुशंसा करता है।"[34]

कहानी के इस भाग का फिल्मांकन

फिल्म में इस अंश को दर्शकों के रु ा के अनुसार बताया है। हर्षवर्धन मुक्तिबोध के मिलने का कारण कथा और पटकथा में एक ही है लेकिन दृश्य में कुछ अलग ंग से बताया गया है। मुक्तिबोध को ााय पीते तथा बीड़ी पीते हुए कथा और पटकथा दोनों में बताया गया है। लेकिन इस फिल्म में एक परिवर्तन यह है कि हर्षवर्धन बिसनाथ की पत्नी अमिता के पिता को सबूत के तौर पर मुक्तिबोध के सामने पेश करते हैं। लेकिन कहानी में यह संवेदना के आधार पर ही होता है। कथा में क्या दिखाया गया है ाार दिन के बाद बिसनाथ और उनके पिता गिरफ्तार होते हैं लेकिन फिल्म में उस रात के अगले दिन ही गिरफ्तार हो ााते हैं।

रात के समय में बारिश हो रही थी। मुक्तिबोध खिड़की के पास बैठकर बीड़ी पीता रहता है तो उसी समय हर्षवर्धन आकर सिक्यूरिटी को एक ि ाट्ठी लिखकर भे ाता है।

(सेक्यूरिटी ि ाट्ठी लेकर मुक्तिबोध को देने के लिए ााता है।)

सेक्यूरिटीः- सर! आपसे कोई वकील मिलना ाहता है।

मुक्तिबोधः- तुम बोला नहीं, हम घर में वकील से मिल नहीं सकते?

सेक्यूरिटीः- सर मैं ने कहा मगर

मुक्तिबोधः- भे ाो उसे।

---

[34] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.78

(हर्षवर्धन घर के अंदर आने के बाद मुक्तिबोध उससे कहते हैं)

मैं कहा था न ये सब वकालत में काला कोट छीन सकता हूँ।

हर्षवर्धनः- (हाथ मसलते हुए) न्याय की आस खतम हो ाये तो ये वकालत की डिग्री रख के मैं क्या करूँ सर? ये सब काम ि तिने काम ल्दी कराये सर?

मुक्तिबोधः- बैठो? बैठो? ... (गंभीर से)

(दोनों बैठ ाते हैं)

हर्षवर्धनः- सर आप ानते हैं सर! ि ास मोहनदास का केस मैं लड़ रहा हूँ वो ेनुइन आदमी है सर। उसके साथ बड़ी यादती हुई।

मुक्तिबोधः- मैं ानता हूँ, स ा देखना बहुत मुश्किल नहीं होता। ये तो उस दिन ही साफ था मोहनदास ही मोहनदास है और वो दूसरा फ्रॉड। लेकिन मैं कुछ भी नहीं कर सकता। कानून, फलिंग और इनस्ट्रक्शन के बिना नहीं ालता। ये प्रासेस एक तारीख है।

हर्षवर्धनः- सर आप, उसे आपसे उम्मीद है सर?

मुक्तिबोधः- तो क्या किया ाय? पूरी व्यवस्था ह ुकी है, थग्स, लुटेरे, अपराधी ये सबके सब हमारे अप्राक्स डेमोक्रटिक इनस्ट्रक्शन तक हो ुकी है।

(थोड़ी देर के बाद)

डेमोक्रसी!

ये डेमोक्रसी नहीं है लूटोक्रेसी है। धनतंत्र, ि ासके पास दौलत उसके हुकूमत उसकी सरकार। बड़े से बड़े सिद्धांत, आइडियालि ास, फिलासफीस ये सबके सब एक दिन सिर्फ खोखली लफा ाी में बदल हो ाते हैं।

(इसके बाद हर्षवर्धन कहते हैं)

हर्षवर्धनः- सर आपको किसी से मिलवाना ाहता हूँ।

(बाहर ाकर वकील किसी एक आदमी को ले आता है उस समय बाहर ाीप में मेघना सेनागुप्त का दृश्य भी दिखायी देता है।)

हर्षवर्धनः- (उस व्यक्ति को बुलाते हुए) आइए।

(वह व्यक्ति घर में आने के बाद मुक्तिबोध को नमस्कार करता है)

मुक्तिबोधः- (कुर्सी की ओर दिखाते हुए) आइए। बैठिए।

(इसके बाद हर्षवर्धन मुक्तिबोध के पास ाकर कहता है)

सर विसनाथ का ससुर अमिता का फादर, ये गवाही देने के लिए तैयार है सर।

(मुक्तिबोध मुस्कुराते हुए फोन में किसी से बात करता है।)

मुक्तिबोधः- मिश्रा ी कल मु े कानफिडेन्शियल मे ि स्ट्रेट इंक्वायरी करना है।

मिश्र :- (फोन में उधर से) कितने ब े सर?

मुक्तिबोधः- सुबह नौ ब े

(इसके बाद मुक्तिबोध ाँ करने के लिए बिसनाथ के घर ाते हैं वहाँ का दृश्य इस प्रकार है।)

मुक्तिबोधः "नाम बताओ अपना"?

(अमिता ाँ के लिए गए अधिकारियों को देखकर मुँह से आवा नहीं आती है, तो फिर मुक्तिबोध पूछता है)

मक्तिबोधः- क्या नाम है तुम्हारा? (ोर से)

अमिताः- (ौंकती हुई कहती है) कस्तूरी!

मुक्तिबोधः- पति का नाम मोहनदास? (इन्होंने ही बता देता है)

अमिता :- ी!

मुक्तिबोधः- सो लो? ूठ बोलने के आरोप में मैं तुम्हें फिरफ्तार कर सकता हूँ।

अमिताः- सर मु े एकीन की िए मैं ही कस्तूरी हूँ।

मुक्तिबोधः- (अमिता के पिता ी को दिखाते हुए) इन्हें पह ानती हो?

अमिता :- (सिर हिलाती है नहीं बोलकर)

(बाद में रोती हुई कहती है)

मेरे पिता ी हैं।

इस दृश्य के बाद मुक्तिबोध पुलिस को आदेश देकर बिसनाथ और उनके पिता नगेंद्रनाथ को गिरफ्तार करवा देता है।[35]

अब प्रस्तुत है कहानी का अगला व अंतिम अंश

कथाकार उदय प्रकाश मोहनदास कहानी की शुरुआत कहानी के अंतिम संदर्भ से करते हैं और कहानी के अंत में कहानी का वहीं अंत करते हैं ाहाँ शुरू किया था। कहानी की शुरुआत में मोहनदास कह रहा है-"काका मु े किसी तरह ब ा ली ि ए मैं आपके हाथ ोड़ता हूँ" और अंत में कहते हैं-"काका राम राम" इसी अंश का एक दुखद ि ात्रण कहानीकार करते हैं। मोहनदास अपने ीवन में संघर्षशील होते हुए भी अपने आपको मोहनदास साबित करने में और सफल हो गया है। और कह रहा है कि "मैं मोहनदास नहीं हूँ।" कहानी में हर्षवर्धन ैसे ईमानदार वकील और मुक्तिबोध ैसे न्यायाधीश होकर भी उसे न्याय नहीं दिला पाते।

"काका, राम राम।"उसने मु े देखकर हाथ ोड़ा। उसके ेहरे पर पीड़ा और परा ाय की गहरी लकीरें खिं ा आईं। मैंने देखा, वह बहुत बू. ा लग रहा था। लगभग अस्सी-प ाासी साल का। लाठी टिका कर वह वहीं ामीन पर बैठ गया। उसके गले से कराह के साथ भर्राई हुई आवाज़ निकली, लेकिन वह आवा ा ि ास भाषा में थी,वह भाषा थी 'रा ाभाषा' हिंदी। उसने कहा-

"मैं आप लोगों के हाथ ोड़ता हूँ। मु े किसी तरह ब ा ली ि ए। मैं किसी भी अदालत में ालकर हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ कि मैं मोहनदास नहीं हूँ। मेरे बाप का नाम काबादास नहीं है। और वह मरा नहीं है, अभी ि ांदा है। बहुत मारा है मु े पुलिस ने बिसनाथ के कहने पर। सारी हड्डियाँ तोड़ डालीं। सांस तक लेने पर छाती दुखती है।"[36]

---

[35] सभी दृश्य फिल्म मोहनदास अंतिम के पहले भाग से

[36] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.85

"मैं देख रहा हूँ, मोहनदास के होंठ कटे हुए हैं और मुँह पोपला हो ुका है। शायद थाने में उसके दांत तोड़ डाले गये हों। उसकी आवाज़ टूट कर बिखर रही है।"[37]

"ि ासे बनना हो बन ाए मोहनदास। मैं नहीं हूँ मोहनदास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मु ो ैन से ि ांदा रहने दिया ाए। अब हिंसा मत करो। ो भी लूटना हो लूटो। अपने-अपने घर भरो। लेकिन हमें तो अपनी मेहनत पर ीने दो। काका, आप लोग मेरा साथ दो।"[38]

"पता ला मोहनदास का बारह साल का बेटा देवदास दस दिन से घर नहीं लौटा है। कोई कहता है उसे बिसनाथ ने गायब करा दिया, कोई कहता है वह डर कर मुंबई भाग गया है...।"[39]

"... और कोई कोई यह भी कहता है कि उसे परसों बस्तर के ंगलों में देखा गया है।"[40]

प्रस्तुत है इस भाग का तुलनात्मक अध्ययन

कथा से पटकथा व परस्पर तुलना

कथा में मोहनदास को न्याय दिलाने का प्रयत्न वकील हर्षवर्धन और न्यायाधीश मुक्तिबोध करते हैं। फिल्म में उनके साथ और एक शक्ति ुड़ी है वह है मीड़िया। लेकिन मीडिया भी असफल हो ाती है। ‘ नमत’ के संपादक मेघना सेनागुप्त मोहनदास की खो ा में आती है और उसे पता लता है कि वह कई दिन से गाँव छोड़कर ला आया है। गोपालदास मेघना ी को ंगल में मोहनदास के पास लेकर ाता है।

(मेघना मोहनदास ाँ ा के लिए लती रहती है तो पीछे से गाना शुरू होता है। वह गाना इस प्रकार है।

---

[37] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.85
[38] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.86
[39] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.86
[40] उदय प्रकाश, मोहनदास-पृ.86

<u>गीत-3</u>

गायक- कैलाश खेर

गीतकार- वी.के.सोनाकिया

संगीतकार- विवेक प्रियदर्शन

ाालः- अपनी खोई हुई पह ाान कहाँ से लाऊँ।।2।।

एक फ़कत ि ास्म है अब ाान कहाँ से लाऊँ।।अपनी।।

ारण 1ः- अब तो हर सीमित तू अंधेरा ही अंधेरा है यहाँ

कितना बेनूर है कहने को सवेरा है यहाँ

ि ास्म पर ि ास्म है बिखरे हुए ांगल की तरह

शाख दर शाख गुनाहों का बसेरा है यहाँ

अब उ ाालों का वो सामान कहाँ से लाऊँ

एक फकत ि ास्म है अब ाान कहाँ से लाऊँ।।अपनी।।

ारण 2 ः- कुछ न बोले तो कहानी में बदल ाायेंगे

आग बु ा ाायेगी पानी में बदल ाायेंगे

क्यों ये तारीख भला याद रखेगी हमको

हम भी एक किस्साएँ पानी में बदल ाायेंगे

बुल बुलों का वो गुलिस्तान कहाँ से लाऊँ

एक फकत ि ास्म है अब ाान कहाँ से लाऊँ।।अपनी।।[41]

मेघना सेनगुप्त मोहनदास से मिलना ाहती है। (गाँव के बाहर पहाड़ों में निर्मित मोहनदास के घर ाकर दरवा ा खटखटाती है)

मोहनदास दरवा ा खोल कर खड़ा हो ाता है।

मेघना सेनगुप्तः- (कहती है) तुम्हें कहाँ कहाँ नहीं ूँ.ा? कोई सीधे ावाब ही नहीं दे रहा था। अब ये क्या हाल कर लिया मोहनदास?

---

41 फिल्म मोहनदास अंतिम के पहले भाग से

मोहनदासः- आप शायद गलत ागह आयी हैं यहाँ कोई मोहनदास नहीं रहता।

(यह कह कर मोहनदास दरवा ाा बंद कर देता है। मेघना वहीं रोती हुई खडी हो ााती है। पीछे से वही गाना आता रहता है। इस तरह फिल्म समाप्त हो ााता है।)[42]

उदय प्रकार द्वारा र ि ात मोहनदास कहानी में और म ाहर कामरान द्वारा निर्मित फिल्म में अनेक समानताएँ हैं। ाब कोई फिल्मकार किसी साहित्यिक र ाना पर फिल्म बनाता है, उसका महत्वपूर्ण कर्तव्य होता है कि र ानाकार के मुख्य उद्देश्यों को अधिक से अधिक रूप में वह फिल्म में प्रस्तुत करे। उदय प्रकाश का मुख्य उद्देश्य समा ा के यथार्थ को ि ात्रित करना था। ि ासमें व्यवसथा की अरा ाकता के कारण मोहनदास ौसे प्रभावशाली व्यक्ति को अपना वा ि ाब अधिकार नहीं मिल ाा रहा था। इस उद्देश्य पर ाब हम गौर करते हैं तब पाते हैं कि म ाहर कामरान अपने फिल्म में इस उद्देश्य को दिखाने में सफल हुए हैं।

कथाकार का दूसरा उद्देश्य यह है कि भारतीय न्यायिक-व्यवस्था में भी प्रभावशाली वर्ग का प्रभाव ि ात्रित करना था। मुक्तिबोध एवं हर्षवर्धन ौसे लोगों ने प्रयत्न किया फिर भी मोहनदास को न्याय नहीं दिला पाये। इस उद्देश्य को दर्शाने में कामरान सफल हुए हैं। फिल्म में हर्षवर्धन, मुक्तिबोध तथा मेघना सेनागुप्त ौसे शक्तिशाली लोग भी मोहनदास को न्याय दिलाने में असफल रहे।

कथा और फिल्म में कुछ असमानताएँ भी हैं। किसी र ाना में र ानाकार ऐसे दृश्य एवं ऐसे भावों को ि ात्रित करता है ि ासे फिल्मकार की तकनीकी व्यवस्था पकड़ नहीं पाती। कहा भी गया है कि ाहाँ न पहुँ ो रवि वहाँ पहुँ ो कवि। इस पंक्ति का भावार्थ यह है कि ाहाँ रवि की किरणें नहीं पहुँ ाती वहाँ कवि की कल्पना पहुँ ा ााती है। कथा के प्रारंभ में पानी से तड़पती हुई मछली की आंखों का रंग शोषित व्यक्ति का प्रतीक है। इस दृश्य को फिल्मकार नहीं दिखा सकता। इस प्रकार

---

[42] फिल्म मोहनदास अंतिम के पहले भाग से

तकनीकी सीमाओं के कारण भी फिल्मकार मुख्य कथा में और पटकथा में परिवर्तन करता है। किसी साहित्यिक कृति को पूरी तरह से परिवर्तित करना मुश्किल है। फिल्म बनाने हेतु कथा का रूपांतरण पटकथा में करना आवश्यक होता है। पटकथा का लेखन तकनीकी सुविधा एवं फिल्म निर्माण की प्रविधि पर भी आधारित होता है। इसलिए मूलकथा से पटकथा का अंतर हो ही ाता है।

ूँकि दोनों दो विधाएँ हैं और दोनों का अपना व्याकरण है। इसलिए एक विधा से दूसरी विधा में ाब किसी भी र ाना का रूपांतरण या कायांतरण होता है तो कई प्रकार के तनाव या असुविधाएँ पैदा होती हैं। यही तनाव या असुविधा मोहनदास में भी है। निर्देशक ने कथा में अपने हिसाब से परिवर्तन किये हैं। बाव ूद इसके फिल्म कम ोर है। और इसके अनेक कारण हैं। स्टारकास्टिंग से लेकर लोकेशन तक में ोल है। कथा से करीबी और दूरी के नाते फिल्म कम ोर है, ऐसा नहीं है। फिल्म कम ोर है निर्देशकीय अक्षमता के कारण। निर्देशक ो हा ा के कप्तान की तरह होता है, ि ासकी ि ाम्मेदारी सभी अवयवों के संतुलन और संधान में होती है, वही मोहनदास में कम ोर है। कथा का मूल मंतव्य हालांकि फिल्म भी संप्रेषित करती है पर वह मार्मिकता नहीं पैदा कर पाती ो कथाकार करता है। सिनेमा एक बेहद प्रभावशाली माध्यम है। उसके पास कई उपकरण हैं। उससे उम्मीद की ाती है कि वह यादा बेहतर तरीके से कथा को संप्रेषित करेगी। पर कई बार ऐसा नहीं होता। दरअसल निर्देशक को यथार्थ को संप्रेषित करना ाहिए, कलात्मकता के आवरण में, दुर्भाग्य से फिल्म यहाँ ूक ाती है।

* * *

उपसंहार

साहित्य और सिनेमा का प्रथम उद्देश्य है मनुष्य का मनोरं ान करना। साहित्य और सिनेमा संप्रेषण के सशक्त माध्यम हैं। साहित्य में पाठक प. कर अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार मनोरं ान एवं ज्ञान प्राप्त करता है। लेकिन सिनेमा में दर्शक और उत्साहित होता है क्योंकि सिनेमा दृश्य श्रव्य माध्यम है। हमारे यहाँ सिनेमा के साथ सदैव यह संकट रहा है कि इसे लोग केवल मनोरं ान का साधन मानते हैं। सिनेमा के प्रति लोगों की धारणा है कि सिनेमा में नैतिक पक्ष न्यून और अनैतिक पक्ष अधिक होता है। ऐसी ही धारणाओं के परिणाम स्वरूप सिनेमा के वै ारिक पक्ष की उपेक्षा हो ाती है। सिनेमा का निर्माण निर्देशक सिर्फ अपनी रु ि से करता हो ऐसा नहीं है वह लोगों की रु ि के अनुसार भी फिल्म बनाना है। ो सिनेमा बुरा हो पर सफल हो या ो सिनेमा अ छा हो वह असफल हो तब फिल्मकार के लिए अ छी फिल्म बनाना मुश्किल हो ाता है।

आ ा तक साहित्य पर बनीं अधिकांश फिल्में असफल रही हैं। लेकिन कुछ निर्देशक समा ा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए साहित्य पर फिल्म बनाते रहे हैं। म ाहर कामरान इन्हीं निर्देशकों में से एक हैं।

म ाहर कामरान ने उदय प्रकाश द्वारा लिखित मोहनदास कहानी पर फिल्म बनायी है दुर्भाग्य से ना तो अ छी बनी और न ही सफल हो पायी।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में साहित्य और सिनेमा के अंतर संबंध, कथा के पटकथा में रूपांतरण, निर्देशक कथाकार की र ाना दृष्टि, फिल्म और साहित्य के प्रति ानता की रु ि और वर्तमान फिल्मों के साथ-साथ फिल्म परंपरा पर भी वि ार-विमर्श हुआ है। इस लघु शोध प्रबंध को ार अध्यायों में विभक्त किया गया है।

उदय प्रकाश का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से लेखक के व्यक्तित्व और उसके र ानाकर्म के बी ा संबंध की खो ा की गई है और तत्कालीन युगबोध के

असर की भी पड़ताल की गयी है। निर्देशक म ाहर कामरान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परि ाय दिया गया है, ि ासमें सिनेमा के लावण्यमयी ारित्र के कारण उसके साहित्य से अलगाव के कारण को, रेखांकित करते हुए फिल्म मोहनदास के उन स्थलों की पह ाान की गई है, ाहाँ उसने सिनेमा के सामान्य ारित्र को आत्मसात किया है, ि ासका उल्लेख तक कहानी में नहीं है, ैसे-गीत-संगीत व दृश्य बोध आदि।

मोहनदास कहानी के बारे में लिखा गया है ि ासमें कहानी में क्या है, कहानी के पात्रों का ारित्र ि ात्रण के साथ फिल्म के निर्देशक म ाहर कामरान के वि ाार भी हैं। इसके साथ कहानी पर अन्य लोगों की समीक्षाओं को भी दिया गया है।

मोहनदास एक दुखद कहानी है। कहानी का प्रधान पात्र मोहनदास एक प.ा-लिखा बी.ए. पास पिछड़ी ााति का छात्र है। वह कई ागह इंटरव्यू को ााता है लेकिन नौकरी नहीं मिलती है और मिलकर भी नहीं मिलती है। क्योंकि उसके नाम पर कोई और व्यक्ति 'ओरियंटर कोयल माइंस' में ूनियर डिपो मैने ार के पोस्ट पर पिछले ाार साल से दस हज़ार रुपये की तनख्वाह पर काम कर रहा है। इस बात को ाानने के बाद वह विरोध करता है। पर अंत में परा ात हो ााता है।

मोहनदास कथा में सभी मुख्य पात्र अपने-अपने समुदाय के प्रतीक हैं। इस कथा में मोहनदास, कस्तूरी बाई, बिसनाथ, मुक्तिबोध और हर्षवर्णन आदि मुख्य पात्र हैं। मोहनदास समा ा के उस वर्ग का प्रतीक है ाो प्रतिभाशाली होकर भी परेशान है। उ ा वर्ग निम्नवर्ग को हमेशा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दबाता आया है। संविधान में अधिकार मिलने के बाद भी वह अपने अधिकारों से दूर है। उसका अधिकार छीना ाा रहा है। अतः उस वर्ग के लोग अपने अधिकारों और स्वतंत्रता को प्राप्त करने हेतु प्रयत्नशील तो हैं लेकिन असफल हैं।

कस्तूरी बाई निम्नवर्गीय आधे समा ा का प्रतिनिधित्व करती है। वह आदर्श महिला है। अपने पति के सुख-दुःख तथा उनके ाीवन में हर समय साथ रहती है। कस्तूरी उन महिलाओं की प्रतीक है ाो परिवार हेतु रात दिन मेहनत करती हैं वह एक दृष्टि से म ादूर महिलाओं की प्रतीक भी है।

बिसनाथ समा ा के उस वर्ग का प्रतीक है ाो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से निम्नवर्ग का शोषण करते हैं। वे काम किसी और से करवाना ाहते हैं और फल स्वयं लेना ाहते हैं। उनके हाथ में सत्ता और धन की शक्ति है।

मुक्तिबोध एवं हर्षवर्धन समा ा के आदर्श एवं कर्तव्यशील वर्ग के प्रतीक हैं। वे अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व के प्रति स ोत और कटिबद्ध है। वे समा ा में होते अन्याय को अ छी तरह ाानते हैं। कानून, अधिकार, संविधान से भी अवगत है। ताकतवर लोगों की नीति से भी परि ित हैं और निम्न वर्ग की दयनीय स्थिति से भी। वे निम्न वर्ग को या शोषित वर्ग को न्याय एवं अधिकार दिलाना ाहते हैं। वे समा ा का कल्याण भी ाहते हैं। लेकिन वे अनेक कारणों से म ाबूर हैं। उनके हाथ में सर्वो ा शक्ति नहीं है। उनके पास प्रतिभा एवं ज्ञान की कोई कमी नहीं लेकिन शोषितों को न्याय दिलाने में असफल हैं। वे सत्ताधारी एवं शक्तिशाली लोगों की अनीति में म ाबूर हैं। अतः उदयप्रकाश अपनी कहीन में समा ा के सभी वर्ग से पात्र ुनते हैं।

कहानी में हरिशंकर परसाई ैसे ईमानदार वकील के साथ न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी) ग ाानन माधव मुक्तिबोध ैसे लोग रहकर भी मोहनदास को न्याय दिला नहीं पाते। कहानी के शोषक वर्ग और शोषित वर्ग के भिन्न तत्वों के विषय को इस अध्याय में विस्तार रूप दिया गया है।

मोहनदास फिल्म के संदर्भ में बताते हुए फिल्म का सामान्य परि ाय दिया गया है। इसी अध्याय से यह भी प्राप्त हुआ है कि निर्देशक ने सिनेमा की सीमा को ध्यान में रखते हुए कहानी को पूरी तरह से पर्दे पर उतारने का प्रयास किया है।

फिल्म में कहानी से परिवर्तन करते हुए मीडिया और कानून को प्रधान रूप में दिखाया गया है। मेघना सेनागुप्त दिल्ली के ' ानमत' ैनल के संपादक हैं और वकील हर्षवर्धन सोनी, मुक्तिबोध ैसे कलाकारों के साथ फिल्म में प्रांतीय पत्रकार अनिल यादव को प्रधान रूप में दिखाया है। फिल्म का प्रधान पात्र मोहनदास है ाो पात्रों के बी ा में दब गया है।

कथा और फिल्म का तुलनात्मक अध्याय के अंतर्गत तुलनात्मक विधियों का प्रयोग करने से यह ज्ञात होता है कि फिल्म में कहानी से अलगाव है ौसे कि कहानी में मोहनदास के पिता टी.बी. से पीड़ित हैं और माता अंधी है। लेकिन फिल्म में ये दोनों दृश्य दिखाये नहीं गये हैं और कहानी के परिवार में मोहनदास की बेटी को ित्रित किया गया है लेकिन फिल्म में मोहनदास की बेटी नहीं है। इसी तरह कहानी में मोहनदास के सा ू का नाम गोपालदास है तो फिल्म में इसको दोस्त के रूप में दिखाया गया है और एक परिवर्तन यह है कि कहानी में बिसनाथ उर्फ मोहनदास का पता लेनिन नगर कॉलनी, घर नंबर A/11 रहता है लेकिन फिल्म में एवरशैन कॉलोनी, विकासनगर, घर का नंबर D/36 दिखाया गया है।

कथा का उद्देश्य वास्तविक यथार्थ को प्रकाश में लाकर ानता तक पहुँ ााना है। मनुष्य की भावनाओं, इ छाओं, आकांक्षाओं वास्तविक ीवन ागत को ानता के सामने प्रस्तुत करना है। लेकिन कथा को ानता इतनी रुि से नहीं प.ती ितनी रुि से फिल्म देखती है। साहित्य अनादिकाल से लोकप्रिय रहा है पर फिल्म की लोकप्रियता अधिक है। मोहनदास कथा और फिल्म में बेहतर कौन है, इस पर वि ार करें तो पाते हैं कि फिल्म कथा के अनेक तत्वों एवं बिंदुओं को पकड़ नहीं पायी है। मोहनदास और कस्तूरी के प्रेम की महानता एवं काबादास के वात्सल्य को फिल्म उतनी सफलता से नहीं दर्शाती। ितनी सफलता से कहानीकार ित्रित करता है। फिल्म में मोहनदास के संदर्भ को उतनी सफलता से नहीं बता पाती है ितनी सफलता से कथाकार ित्रित करता है।

कथा फिल्म की तुलना में बेहतर है। उदय भाषा के माध्यम से ो बात पैदा करते हैं, फिल्म इतने ताम- ाम के बाव ूद वह बात नहीं पैदा कर पाती। निर्देशकीय अकुशलता 'मोहनदास' के साथ न्याय नहीं कर पाती है।

इस तुलनात्मक अध्ययन में अंतःसमान तत्वों की ही यादा प्राप्ति हुई और ाहाँ थोड़ा बहुत परिवर्तन हुआ भी है तो वह रो ाक पूर्ण व कहानी के विस्तार के रूप में ही आया हुआ प्रतीत होता है, अर्थात् परिवर्तन सार्थक और प्रासंगिक है।

कहानी के शीर्षक और पात्रों के विषय में लेखक कहते हैं कि कोई प्रतीकवादी कूटकथा सुनाने बैठ गया? इस कहानी के मुख्य पात्र का नाम मोहनदास, पत्नी का नाम कस्तूरी बाई माँ का नाम पुतलीबाई और पुत्र का नाम देवदास? ज्ञात होता है कि लेखक कोई प्रतीकवादी कहानी नहीं सुना रहे हैं बल्कि एक प्रकार का समा ा यथार्थ ि ात्रित कर रहे हैं।

पात्रों के प्रतीकात्मकता पर वि ाार करें तो कस्तूरीबाई का नाम कस्तूरबा की याद दिलाता है। मोहनदास तो खैर एकदम साफ है। और उनके पिता का नाम करम ांद का दूसरा नाम काबादास था और माँ का नाम भी पुतलीबाई...। इस प्रकार लेखक अपने पात्रों को ऐतिहासिक द ाा देते प्रतीत होते हैं। लेकिन कहानी के मोहनदास और महात्मा गाँधी के ाीवन ारित्र में काफी अंतर है। महात्मा गाँधी ने पोरबंदर कठियावाड़, रा ाकोट, विलायत, दक्षिण अफ्रीका में भ्रमण करके देश हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया, लेकिन कथा का मोहनदास छत्तीसग ़ और विंध्यप्रदेश के ांगल-पतेरा, खाई-खोह, खेत-बगार में धूप-भूख, रोग-पसीना और अन्याय-अपमान की आँ ा में पाला-पोसा गया है। महात्मा गांधी और कथा के मोहनदास के ाीवन संघर्ष में समानता हो सकती है, परंतु दोनों के ाीवन क्षेत्र में असमानता है। बाकी एकदम वही है ाो गांधी ाी का है।

लेखक कहते हैं कि मैंने न ही गांधी के ारित्र को ि ात्रित किया है और न ही किसी ऐतिहासिक घटना को उस समय मु ो खुद पता नहीं था कि हमारे गाँव के मोहनदास और उसके परिवार के सदस्यों के ब्यौरों में इतिहास की कोई अनुगूं ा भी छिपी हो सकती है। मैं तो कहानी की आड़ में आपको फिर से अपने समय और समा ा की ओर असली ि ांदगी का ब्यौरा देने बैठा हूँ। मोहनदास वास्तव में एक ाीता- ाागता असली आदमी है और उसकी ि ांदगी इस समय दरअसल संकट में है। अतः कहानी की प्रतीकात्मकता समा ा का यथार्थ है और उस समा ा में शोषित अनेक मोहनदास हैं ाो अपना अधिकार पाने में असफल हैं।

* * *

संदर्भ ग्रंथ सू ी

आधार ग्रंथ

क्र. सं.	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक	वर्ष
1	मोहनदास	उदय प्रकाश	वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागं ा, नयी दिल्ली-110002	प्रथम सं. 2006

क्र. सं.	फिल्म	निर्देशक	निर्माता	प्रदर्शन वर्ष
1	मोहनदास	म ाहर कामरान	आभा सोनाकिया	2009

सहायक ग्रंथ

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक/लेखिका	प्रकाशक	वर्ष
1	कथा-पटकथा	मन्नू भंडारी	वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागं ा, नयी दिल्ली-110002	द्वि.सं. 2006
2	सिनेमा और संस्कृति	डॉ.राही मासूम र ाा, संपादन एवं संकलन प्रो.कुँवरपाल सिंह	वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली	प्र.सं. 2001
3	हिंदी कहानी : एक नयी दृष्टि	इंद्रनाथ मदान	संभावना प्रकाशन	1987

पत्र-पत्रिकाएँ

1. प्रगतिशील वसुधा-80
2. कथाक्रम, अप्रैल- ाून 2009
3. हंस, अगस्त, 2005

पुस्तकालय

1. इंदिरा गाँधी मेमोरियल लायब्रेरी, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

<u>इंटरनेट</u>

1. म ाहर कामरान बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
2. उदय प्रकाश बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
3. नकूल वैद बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
4. सोनाली कुलकर्णी बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
5. शर्बानी मुख र्जी बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
6. आदित्य श्रीवास्तव बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
7. समीर धर्माधिकारी बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
8. सुशांत सिंह बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
9. अखिलेंद्र मिश्र बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
10. गोविंद नामदेव बयोग्राफी, फिल्मोग्राफी
11. बॉलीवुड हंगामा डाट काम
12. ोपाक डाट काम
13. वन इंडिया डाट काम
14. उदय प्रकाश ब्लाग स्पाट डाट काम
15. उदय प्रकाश ब्लाग स्पाट 05 डाट काम
16. उदय प्रकाश ब्लाग डाट आवारा हूँ
17. मोहल्ला लाइव डाट काम

* * *